

स्त्रियो, अधीन रहो!

अंग्रेज़ी-भाषी सुसमाचारवादी (इवैन्जेलिकल) जगत में – सभी संप्रदायों में – हर महीने कम से कम एक नई पुस्तक लिंग के प्रश्न और उससे जुड़े सभी विषयों पर प्रकाशित होती है: जेंडर, ट्रांसजेंडर, विवाह, परिवार, गर्भपात, दुर्व्यवहार, मसीही विवाहों में घरेलू हिंसा, इत्यादि। जर्मनी में यह आवृत्ति कम है; लोग वर्तमान स्थिति के साथ आराम से बैठ गए हैं। शायद साल में तीन पुस्तकें होती हैं जो इस विषय को उठाती हैं।

मसीही जगत में कुछ तूफानी लहरें उठ रही हैं, जो इस बात के लिए पर्याप्त कारण हैं कि हर पीढ़ी में इन प्रश्नों का नए सिरे से सामना किया जाए और अपने लिए, अपने विवाह और अपनी कलीसिया के लिए नए सिरे से समझा जाए कि हमें स्त्री-पुरुष के संबंध को कैसे जीना चाहिए और कैसे जी सकते हैं। मसीही लोग यीशु और प्रेरितों से, और इस प्रकार बाइबल से, अपनी दिशा लेते हैं।

जैसा कि सब जानते हैं, बहुत से रूढ़िवादी मसीही स्त्री-पुरुष के संबंध को मोटे तौर पर इस तरह समझते हैं कि आदम की, और उसके साथ हर पुरुष की, हव्वा के प्रति और सामान्य रूप से स्त्री के प्रति एक ऊँची, अधिक ज़िम्मेदारी वाली अगुवाई की भूमिका है। इसलिए स्त्री अधीन रहती है और कलीसिया में उसके पास कोई पद नहीं होता, या बहुत कम पद होते हैं। वह प्रचार नहीं करती और शिक्षा नहीं देती। यह कलीसिया के इतिहास की शिक्षा है – पहली और दूसरी शताब्दी की नहीं, बल्कि वहाँ से आरंभ होकर कुछ दशक पहले तक की। और बहुत से लोग सोचते हैं कि यही ईश्वरीय सत्य है, सही शिक्षा और सही जीवन-व्यवहार। इसके पीछे की प्रेरणा बाइबल के प्रति निष्ठा है, इसमें कोई संदेह नहीं। जब इस पुरुष-प्रभुत्व पर मूल रूप से प्रश्न उठाया जाता है, तभी वे सोच के ढाँचे प्रकट होते हैं जिन पर तब तक किसी का ध्यान नहीं गया था।

अमेरिका में इसका समर्थन T4G और Gospel Coalition जैसे नए आंदोलन, और सबसे अधिक सदरन बैप्टिस्ट (The Danvers Statement) करते हैं। ग्रूडम (Grudem), मूर (Moore), पाइपर (Piper), श्राइनर (Schreiner), कोस्टनबर्गर (Kostenberger), डीयंग (DeYoung), केलर (Keller), कार्सन (Carson), स्टॉर्म्स (Storms), मैकआर्थर (MacArthur) और स्ट्राउख (Strauch) जाने-माने व्यक्ति हैं जो इस – मेरी दृष्टि में मूल रूप से गलत – दृष्टिकोण के पक्ष में खड़े हैं। मैंने स्वयं लंबे समय तक इस दृष्टिकोण को माना और सिखाया है, और नामित भाइयों में से अधिकांश का और उनके व्याख्या-कार्यों का मैं आदर करता हूँ। मतभेद इस पुरुष-स्त्री विषय से संबंधित है (और उस कैल्विनवाद से भी जिसे वे मानते हैं, पर वह यहाँ प्रासंगिक नहीं है)।

जर्मनी में कुछ पहलें और प्रकाशक स्वयं को इन अगुवों का अनुसरण करने, इन मान्यताओं को फिर से ताज़ा करने और बाइबल के सत्य के रूप में बेचने के लिए बुलाया हुआ समझते हैं। मैं यहाँ कुछ के नाम लेता हूँ, जिनकी “बाइबल-निष्ठा” का मैं अधिकांश बातों में स्वयं भी उसी तरह समर्थन करता हूँ, परन्तु इस पुरुष-स्त्री विषय में नहीं: E21, EBTC, 3L-Verlag, CLV-Verlag, CSV-Verlag, CV Dillenburg, Betanien इत्यादि, एक्सक्लूसिव और फ्री ब्रदरन सभाएँ, रूसी-जर्मन पृष्ठभूमि वाली कलीसियाएँ, आंशिक रूप से FeG और EFG कलीसियाएँ भी, और वे सभी कलीसियाएँ जो KFG.org पर सूचीबद्ध हैं।

इस दस्तावेज़ में दक्षिण अफ्रीकी लेखक टेरेन विलियम्स (Terren Williams) की पुस्तक “How God Sees Women: The End of Patriarchy” के दो अध्याय हैं। वे स्वयं एक बड़ी कलीसिया के पास्टर हैं और कुछ समय पहले तक पूरकतावादी दृष्टिकोण का, अर्थात् स्त्री की पदानुक्रमिक अधीनता का – यद्यपि एक नरम रूप में – समर्थन करते थे और ऊपर बताए गए अमेरिकी भाइयों का अनुसरण करते थे। फिर उन्होंने बाइबल के पाठों का एक बार फिर गहराई से अध्ययन किया और उन्हें इस दृष्टिकोण को पूरी तरह त्यागना पड़ा। मेरे साथ भी कुछ ऐसा

ही, लगभग बिल्कुल ऐसा ही, हुआ। इससे एक ऐसी पुस्तक बनी जो एक बार फिर आँखें खोलने वाली है और इस पितृसत्तात्मक और पूरकतावादी दृष्टिकोण का सीधे-सीधे खंडन करती है।

Hans-Jörg Ronsdorf, अप्रैल 2022, अक्टूबर 2026 में पूरक किया गया

पूरी पुस्तक अब जर्मन में उपलब्ध है

Terran Williams: Wie Gott Frauen sieht. Biblische Perspektiven jenseits von Macht und Tradition (परमेश्वर स्त्रियों को कैसे देखता है। सत्ता और परंपरा से परे बाइबलीय दृष्टिकोण)। Kirche für Alle, 2026।

पेपरबैक, 18,80 € (ISBN 978-3-9826027-8-3): <https://www.amazon.de/dp/3982602785>

किंडल ई-बुक, 9,80 €: <https://www.amazon.de/dp/B0HDPLZJ3C>

पुस्तक के बारे में और जानकारी: <https://www.hans-joerg-ronsdorf.de>

आगे के दोनों अध्याय – अध्याय 8 “तुम स्त्रियो, अपने पतियों के अधीन रहो” और अध्याय 9 “वह परमेश्वर जो स्वयं को ढालता है” – इसी जर्मन संस्करण का पाठ हैं।

8



तुम स्त्रियो, अपने पतियों के अधीन रहो

“पति-पत्नी न तो एक-दूसरे के साथ पदानुक्रमिक संबंध में हैं, और न ही वे ऐसी स्वायत्त इकाइयाँ हैं जो एक-दूसरे से अलग हों और हर एक वही करे जो उसे अच्छा लगे। बल्कि विवाह परस्पर अधीनता का संबंध है।” रिचर्ड हेज़ (Richard Hays)¹

“हमें अपनी बेटियों को इस बात के लिए तैयार करना है कि वे एक दिन अपने पतियों के अधीन रहें।” जब मैंने हाल ही में एक माँ को मेरी पत्नी से यह कहते सुना, तो इसने मुझे सचमुच सोचने पर मजबूर कर दिया। क्या मुझे सचमुच अपनी बेटी आइवी (Ivy) को यह सिखाना चाहिए कि वह एक दिन अपने पति के अधीन रहे? अपने ही विवाह में अगुवाई और अधीनता का विषय अपने आप में काफ़ी निजी है। परन्तु जब मुझे यह सोचना पड़ता है कि मैं अपने बच्चों को विवाह के बारे में क्या शिक्षा दूँ, तब मैं सही बात सिखाने के लिए स्वयं को और भी अधिक बाध्य पाता हूँ।

एक-बिंदु पूरकतावाद

इस अध्याय और अगले अध्याय के लिए शोध करते समय ही मैंने इस विचार को अंतिम रूप से और पूरी तरह विदा कहा कि सभी विवाहों के लिए परमेश्वर के आदर्श में पति और पत्नी के बीच अधिकार और अधीनता का कोई – चाहे सबसे हल्का – रूप भी शामिल है। इफिसियों 5 में जो मैंने पढ़ा था, उसके आधार पर मैं लंबे समय तक सोचता रहा कि अपनी पत्नी के प्रति पति की आत्म-बलिदानी अगुवाई को अपनी कलीसिया के प्रति मसीह की आत्म-बलिदानी अगुवाई को प्रतिबिंबित करना चाहिए।

एक-बिंदु पूरकतावाद यह मानता है कि कलीसिया और समाज में स्त्रियाँ पुरुषों की अगुवाई कर सकती हैं, जबकि पत्नियों को अपने पतियों के प्रति एक प्रकार की एकतरफ़ा अधीनता का पालन करना चाहिए।² इस प्रकार यह दो-बिंदु पूरकतावाद से भिन्न है, जो विवाह में और कलीसिया में स्त्री की अधीनता की माँग करता है। दिलचस्प बात यह है कि संसार भर में बहुत से धर्मविज्ञानी और कलीसियाएँ एक-बिंदु पूरकतावाद को मानती हैं।³

मैं कल्पना कर सकता हूँ कि इस पुस्तक को पढ़ने वाले दो-बिंदु पूरकतावाद के बहुत से समर्थक इस बात के लिए मनाए जा सकते हैं कि वे स्त्रियों को कलीसिया की अगुवाई से बाहर रखना छोड़ दें, पर शायद फिर भी विवाह में अधिकार-अधीनता के किसी रूप को थामे रहें। क्योंकि मैंने स्वयं कुछ वर्षों तक यही दृष्टिकोण रखा, इसलिए मैं इसे अच्छी तरह समझ सकता हूँ।

जब इफिसियों 5 के मेरे बढ़ते अध्ययन ने मुझे एक-बिंदु पूरकतावाद को भी छोड़ने के लिए प्रेरित किया, तो दिलचस्प रूप से इससे मेरे विवाह में कोई बड़े परिवर्तन नहीं हुए। जैसा कि मैं आगे समझाऊँगा, मुझे स्पष्ट हुआ कि अपने विवाह में मैं पहले से ही कमोबेश एक पारस्परिकतावादी (म्यूचुअलिस्ट) था। क्योंकि यदि विवाह के मेरे लगभग दो दशकों के अनुभव ने मुझे कुछ सिखाया है, तो यह: बराबरी का विवाह उस विवाह से कहीं अधिक वांछनीय है जिसमें एक साथी अगुवाई करता है और दूसरा पीछे चलता है। और यह “मसीही” विवाह के बारे में उन बहुत से सुंदर नारों के बावजूद है जिनका प्रचार मैंने और दूसरों ने इतनी बार किया है, जैसे कि: “वह स्वयं को बलिदान करता है, वह झुक जाती है; वह अगुवाई करता है, वह पीछे चलती है; वह पहल करता है, वह पुष्टि करती है।”⁴

यद्यपि यीशु अपनी पत्नी के प्रति पति की अगुवाई की भूमिका का एक शब्द में भी उल्लेख नहीं करते,⁵ पौलुस के पास इस बारे में कहने को बहुत कुछ प्रतीत होता है, विशेष रूप से इफिसियों 5 में, वह पाठ जिसके बारे में यह

अध्याय मुख्य रूप से है। यहाँ ये पद अभिप्रेत हैं (LUT – जर्मन बाइबल अनुवाद; पाठ जर्मन से अनूदित):

21 मसीह के भय में एक दूसरे के अधीन रहो।

22 हे स्त्रियो, अपने-अपने पतियों के ऐसे अधीन रहो जैसे प्रभु के। 23 क्योंकि पति स्त्री का सिर है, जैसे मसीह भी कलीसिया का सिर है – उसने उसे अपनी देह के रूप में बचाया है। 24 परन्तु जैसे कलीसिया मसीह के अधीन रहती है, वैसे ही स्त्रियाँ भी सब बातों में अपने-अपने पतियों के अधीन रहें। 25 हे पतियो, अपनी-अपनी पत्नियों से प्रेम करो, जैसे मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम किया और अपने आप को उसके लिए दे दिया, 26 ताकि उसे पवित्र करे। उसने उसे वचन में जल के स्नान के द्वारा शुद्ध किया है, 27 ताकि वह कलीसिया को अपने लिए महिमामय बनाए, जिसमें न कलंक हो, न झुर्री, न कोई ऐसी वस्तु, बल्कि वह पवित्र और निर्दोष हो। 28 इसी प्रकार पतियों को भी अपनी पत्नियों से अपनी देह के समान प्रेम रखना चाहिए। जो अपनी पत्नी से प्रेम रखता है, वह अपने आप से प्रेम रखता है। 29 क्योंकि किसी ने कभी अपने शरीर से बैर नहीं रखा; बल्कि वह उसका पालन-पोषण और देखभाल करता है, जैसे मसीह भी कलीसिया का। 30 क्योंकि हम उसकी देह के अंग हैं। 31 “इस कारण पुरुष अपने माता-पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा, और वे दोनों एक तन होंगे” 32 यह भेद बड़ा है; परन्तु मैं इसे मसीह और कलीसिया के विषय में कहता हूँ। 33 इसलिए तुम भी: हर एक अपनी पत्नी से अपने समान प्रेम रखे; और पत्नी भी पति का आदरपूर्ण भय माने।

इस अध्याय से जूझते हुए मुझे सी. एस. लुईस (C. S. Lewis) का एक वाक्य याद आया: “बहुत से लोग ... पाते हैं कि जब वे मुँह में पाइप और हाथ में पेंसिल लिए किसी कठिन धर्मविज्ञानिक पाठ पर मेहनत करते हैं, तो उनका हृदय अनायास गाने लगता है।” इफिसियों 5 ऐसा ही एक कठिन पाठ है, धर्मविज्ञान से भरा हुआ, जिससे मैं बहुत वर्षों से जुड़ा हुआ हूँ। तीन कारण हैं कि मैंने इससे इतनी गहराई से संघर्ष क्यों किया।

पहला कारण: मेरा सबसे महत्वपूर्ण सांसारिक संबंध मेरी पत्नी के साथ है। मैं परमेश्वर के वचन का पालन करना चाहता हूँ और परमेश्वर की बुद्धि को अपने विवाह पर लागू करना चाहता हूँ, और यह खंड विवाह के विषय पर बाइबल के सबसे महत्वपूर्ण पाठों में से एक है, इसलिए मैं इसे सही ढंग से समझना चाहता हूँ।

दूसरा कारण: इस खंड का वह पठन, जिसके अनुसार “पति अगुवाई करता है और पत्नी पीछे चलती है”, मेरे अपने अनुभव और सांस्कृतिक बोध के विपरीत है। मैं इसे और स्पष्ट करना चाहता हूँ: मेरा विवाह एक ऐसी स्त्री से हुआ है जो मेरे जितनी ही शिक्षित और सक्षम है – कई मायनों में तो मुझसे भी अधिक। वह मुझसे बेहतर ढंग से पैसों का प्रबंध कर सकती है और इस समय मुझसे अधिक कमाती है; वह हमारे बच्चों की भावनात्मक और व्यावहारिक आवश्यकताओं को मुझसे बेहतर समझ सकती है; और स्वभाव से वह लोगों के समूहों का मार्गदर्शन मुझसे बेहतर कर सकती है। इसके अलावा ऐसा लगता है कि परमेश्वर हमारे परिवार और हमारी सेवकाई के बारे में उससे भी उतनी ही बात करता है जितनी मुझसे। जब मैं उसके प्रति अपनी अगुवाई की भूमिका जताता हूँ, तो यह मुझे न केवल मनमाना लगता है, बल्कि हमारे संबंध और उसकी योग्यता का उल्लंघन भी लगता है। ईमानदारी से कहूँ, तो उसे अपनी अगुवाई देने की तुलना में उसके साथ बराबरी की साथी के रूप में मिलकर काम करना मुझे कहीं बेहतर लगता है।

तीसरा कारण, जिसके चलते मुझे इस खंड से संघर्ष करना पड़ा, यह है: उत्कृष्ट बाइबल-टीकाकार भी इसके संदेश के बारे में अलग-अलग निष्कर्षों पर पहुँचते हैं, और पास्टर अपने विश्वासों को किसी ठोस विवाह पर लागू करने के बारे में अलग-अलग निष्कर्षों पर पहुँचते हैं। पहली बार पढ़ने पर शब्द कितने भी सरल लगें, निकट से देखने पर इफिसियों 5 जितने उत्तर देता है उससे अधिक प्रश्न खड़े करता है। आइए केवल पहले कुछ पदों को देखें: पौलुस

वैवाहिक संबंध पर अपनी बात परस्पर अधीनता वाले पद से क्यों आरंभ करता है? “सिर” का क्या अर्थ है? “अधीन रहना” का क्या अर्थ है? क्या पद 21 (“एक दूसरे के अधीन रहो”), 22 (स्त्रियो, अपने पतियों के अधीन रहो) और 24 (कलीसिया मसीह के अधीन रहती है) में “अधीन रहना” शब्द का हर बार एक ही अर्थ है? और स्त्रियों के लिए अपने पतियों के “सब बातों में” अधीन रहने का ठोस रूप से क्या अर्थ है?

मैं इन प्रश्नों पर चार अलग-अलग व्याख्याओं – या “दृष्टिकोणों” – के आधार पर विचार करूँगा। क्योंकि इफिसियों 5 के खंड का तीन-चौथाई भाग पति को संबोधित है, इसलिए मैं हर दृष्टिकोण को इस आधार पर परिभाषित करूँगा कि एक मसीही पति से क्या अपेक्षा की जाती है। ये चार दृष्टिकोण पति को निर्णयकर्ता (दृष्टिकोण 1), निर्णायक मत देने वाले (दृष्टिकोण 2), अपनी बराबरी की साथी के सेवक (दृष्टिकोण 3) और छुड़ाए गए *paterfamilias* (दृष्टिकोण 4) के रूप में देखते हैं।

दृष्टिकोण 1: सामान्य स्थिति में पति ही निर्णयकर्ता है

यह वेन गूडम (Wayne Grudem) का दृष्टिकोण है। वे लिखते हैं कि इफिसियों 5:21 में “एक दूसरे के अधीन रहो” से पौलुस का अर्थ यह नहीं है कि सब मसीही सब मसीहियों के अधीन रहें, बल्कि केवल यह कि सब मसीही केवल उन्हीं के अधीन रहें जिनके पास उन पर वैध अधिकार है। दूसरे शब्दों में: अधीनता पत्नी पर पति के प्रति लागू होती है, परन्तु निश्चित रूप से इसके उलट नहीं।

वे कहते हैं कि “पति पत्नी का सिर है” में “सिर” का अर्थ है “के ऊपर अधिकार”। पौलुस पुरुषों को अपनी पत्नियों पर अगुवाई सँभालने के लिए बाध्य करता है, और स्त्रियों को इस अगुवाई को स्वीकार करने की चेतावनी देता है। जब पौलुस इस बात की चर्चा करता है कि पति अपनी पत्नी के लिए अपना जीवन दे देता है, जैसे यीशु ने कलीसिया के लिए किया, तो इसका अर्थ है कि वह पुरुष को न केवल अपनी पत्नी से प्रेम करने, बल्कि प्रेमपूर्वक उसकी अगुवाई करने के लिए भी प्रेरित करता है। अंततः, गूडम के अनुसार, जब पौलुस उत्पत्ति 2:24 को उद्धृत करता है, तो वह स्त्री पर पुरुष के अधिकार की नींव पतन से पहले हव्वा पर आदम की प्रभुता के वृत्तांत पर रखता है।

इन सब के व्यावहारिक परिणामों के बारे में गूडम हमें बताते हैं कि वे इसे अपने विवाह में कैसे लागू करते हैं:

हर निर्णय में, चाहे बड़ा हो या छोटा, और चाहे हम सहमत हों या न हों, निर्णय की ज़िम्मेदारी हमेशा मेरी होती है। (मैं यहाँ उन निर्णयों की बात कर रहा हूँ जो हम दोनों को प्रभावित करते हैं, उन व्यक्तिगत निर्णयों की नहीं जो हम में से हर एक अपने निजी उत्तरदायित्व के क्षेत्र में लेता है।) मैं इस विचार को नहीं मानता कि पति का सिर होना केवल लगभग दस वर्षों में एक बार काम आता है, जब पति और पत्नी किसी बात पर सहमत नहीं हो पाते। मेरी राय में पति का सिर होना हर उस निर्णय में महत्व रखता है जो दंपति अपने वैवाहिक जीवन के दौरान लेता है। यदि पति का वास्तविक सिर होना है, तो एक मौन सहमति होती है कि निर्णय-प्रक्रिया का केंद्र पति पर है, पत्नी पर नहीं। और यद्यपि अक्सर बहुत चर्चा होती है और परस्पर सम्मान और लिहाज़ बना रहना चाहिए, फिर भी अंततः निर्णय की ज़िम्मेदारी पति की ही होती है।⁶

जॉन पाइपर (John Piper) इस दृष्टिकोण से काफ़ी हद तक सहमत हैं। वे अपने माता-पिता के विवाह को स्नेह से याद करते हैं, जिसमें उनके पिता सामान्यतः निर्णय लेते थे:

जब मेरे पिता घर आते थे, तो वे स्पष्ट रूप से परिवार के सिर होते थे। वे भोजन से पहले प्रार्थना करते थे। वे परिवार को पारिवारिक उपासना के लिए इकट्ठा करते थे। वे हमें संडे स्कूल और आराधना सभा में ले जाते थे। वे गाड़ी चलाते थे। वे तय करते थे कि हम कहाँ बैठेंगे। वे दोपहर के भोजन के लिए हावर्ड जॉनसन (Howard

Johnson's) जाने का निर्णय लेते थे। वे हमें मेज़ तक ले जाते थे। वे वेट्रेस को बुलाते थे। वे बिल चुकाते थे। वही थे जिनका सामना हमें करना पड़ता था जब हम परिवार का कोई नियम तोड़ते थे या अपनी माँ के प्रति अनादर दिखाते थे। ये हमारी माँ के लिए सबसे सुखद समय थे। ओह, जब पापा घर पर होते थे तो वह कितनी आनंदित होती थी! उसे उनकी अगुवाई से प्रेम था। बाद में मैंने सीखा कि बाइबल इसे "अधीनता" कहती है।⁷

विवाह पर अधिकांश प्रचलित मसीही पुस्तकें इसी दृष्टिकोण का समर्थन करती हैं। उदाहरण के लिए एक में लिखा है: "पति ... घर के महत्वपूर्ण निर्णयों के लिए ज़िम्मेदार है। ... एक खुले मन वाली और ग्रहणशील पत्नी स्वेच्छा से ... अपनी स्वतंत्रता उसके प्रेम, उसकी श्रद्धा, उसकी सुरक्षा और उसके भरण-पोषण के बदले में छोड़ देती है।"⁸ एक अन्य पुस्तक भी यही राय रखती है: "घर के बाहर किसी पुरुष के बहुत से वरिष्ठ अधिकारी हो सकते हैं, परन्तु घर पर उसके पास यह अवसर होता है कि वह मित्रवत ढंग से अधिकार का प्रयोग करे और वह सम्मान पाए जिसका वह हक़दार है।"⁹

अन्य दृष्टिकोणों पर आने से पहले मैं यह कहना चाहता हूँ: 1980 के दशक तक लगभग सभी बाइबल-व्याख्याताओं और मसीहियों ने बाइबल को ठीक इसी तरह पढ़ा। इसलिए यह एक ऐसा दृष्टिकोण है जिसे गंभीरता से लेना होगा।

परन्तु मैं ईमानदार रहूँगा: यह दृष्टिकोण मेरे विवाह की मृत्यु होगा! एक पास्टर के रूप में मैंने इस दृष्टिकोण का कभी समर्थन नहीं किया। निस्संदेह गूडम और पाइपर के जीवन-अनुभव मुझसे भिन्न रहे हैं। फिर भी मैं ऐसे किसी अंतरंग संबंध की कल्पना नहीं कर सकता जिसमें एक व्यक्ति वे सब या अधिकांश निर्णय ले जो दोनों को प्रभावित करते हैं। मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचता हूँ: या तो इस दृष्टिकोण को मानने वाले दंपति अपनी परवरिश या संस्कृति के कारण पुराने समय के "पारंपरिक विवाह" को पसंद करते हैं, या उनमें एक ऐसा पति है जो जन्मजात अगुवा है और एक ऐसी पत्नी जो जन्मजात अनुयायी है। परन्तु हर विवाह इस तरह गढ़ा नहीं गया है, और जूली (Julie) और मेरा विवाह तो बिल्कुल नहीं। मैं प्रसन्न हूँ कि पिछले दशकों में पास्टर्स और धर्मविज्ञानियों ने इस दृष्टिकोण का एक परिवर्तित रूप प्रस्तुत किया है। कुछ लोग इसे "नरम पूरकतावाद" कहते हैं; मैं इसे "निर्णायक मत देने वाले के रूप में पति" कहता हूँ।

दृष्टिकोण 2: निर्णायक मत देने वाले के रूप में पति (दुर्लभ मामलों में)

अपनी बेस्टसेलर पुस्तक *The Meaning of Marriage* [विवाह का अर्थ] में टिमोथी (Timothy) और कैथी केलर (Kathy Keller) पूरकतावादी विवाह के एक नरम रूप का समर्थन करते हैं। वे एक पूरा अध्याय इस तथ्य को समर्पित करते हैं कि पौलुस – गूडम के विपरीत – विवाह में लिंग-भूमिकाओं को पद 21 में परस्पर अधीनता की अभिव्यक्ति के रूप में प्रस्तुत करता है। केलर दंपति इसे इस निर्णय के रूप में परिभाषित करते हैं कि हम नम्रता से दूसरे की सेवा करें और उसे प्रसन्न करें:

फिलिप्पियों 2:2-3 में पौलुस साफ़-साफ़ कहता है कि मसीहियों के बीच "दीनता से एक दूसरे को अपने से अच्छा समझो"। ... हमें दूसरों के हितों को अपने हितों से अधिक महत्वपूर्ण मानना चाहिए। एक अन्य स्थान पर वह कहता है कि हमें "अपने आप को प्रसन्न नहीं करना" चाहिए, बल्कि "अपने पड़ोसी को उसकी भलाई के लिए, उन्नति के निमित्त प्रसन्न करना चाहिए। क्योंकि मसीह ने भी अपने आप को प्रसन्न नहीं किया" (रोमियों 15:1-3)। पौलुस तो मसीहियों से यहाँ तक माँग करता है कि वे एक दूसरे के "doulos" (गलातियों 5:13) बनें – शाब्दिक रूप से: दास। ... चाहे हम पति हों या पत्नी, हमें अपने लिए नहीं, बल्कि दूसरे के लिए जीना है। और यही विवाह में पति या पत्नी का सबसे कठिन, परन्तु सबसे महत्वपूर्ण कार्य भी है।¹⁰

इस दृष्टिकोण के अनुसार परस्पर अधीनता को दोनों दिशाओं में समझना चाहिए: जहाँ पौलुस पद 22-24 में स्त्रियों से अपने पतियों के अधीन रहने को कहता है, वहीं पद 25-29 में वह पुरुषों को समझाता है कि उन्हें (आत्म-बलिदानी प्रेम में) अपनी पत्नियों के अधीन कैसे रहना है।

परस्पर अधीनता के बावजूद केलर दंपति पति की सिर की भूमिका का समर्थन करते रहते हैं। वे ऐसा इस तरह करते हैं कि वे पत्नी के साथ परस्पर अधीनता में रहने वाले पति की बात से हटकर ऐसे पति की बात करने लगते हैं जो “एक सेवक-अगुवे की भूमिका” के अधीन होता है।¹¹ (मुझे यहाँ यह कहना होगा कि यहाँ “अधीन होना” शब्द का प्रयोग संदिग्ध है, क्योंकि इसका अर्थ परस्पर अधीनता के विचार से भिन्न है: किसी भूमिका के अधीन होना किसी भी तरह किसी व्यक्ति के अधीन होने के समान नहीं है।)

कृतज्ञता की बात है कि केलर दंपति अगुवाई की उस शैली से कहीं अधिक नरम शैली का समर्थन करते हैं जिसे पिछली शताब्दियों में पत्नी की अधीनता समझा जाता था: “जब दोनों पक्ष सहमत न हो सकें, परन्तु निर्णय लेना आवश्यक हो, तो [पति] को निर्णायक मत देने और (इस प्रकार) निर्णय की अधिक बड़ी ज़िम्मेदारी लेने का अधिकार है।”¹² एक अन्य स्थान पर टिमोथी केलर इसे पति का यह अधिकार बताते हैं कि वह “अंतिम शब्द” कहकर अपनी पत्नी की आपत्तियों को “रद्द कर दे”।¹³ दूसरे शब्दों में: केवल असहमति की स्थिति में, न कि रोज़मर्रा के निर्णयों में, पति को निर्णय लेना चाहिए।

लंबे समय तक “नरम” पूरकतावादी रहते हुए मैंने भी, इस धारा के बहुत से अन्य समर्थकों की तरह, इस शिक्षा को लागू किया, उदाहरण के लिए यह कहकर: “कभी-कभार, बहुत दुर्लभ मामलों में, कोई निर्णय लेना ही पड़ता है। यदि तुम सहमत न हो सको, तो पत्नी को अपने पति से उस विषय में निर्णय लेने के लिए कहना चाहिए।” मेरे मित्र एलन फ्रो (Alan Frow), जो दक्षिणी कैलिफ़ोर्निया के एक प्रभावशाली पूरकतावादी पास्टर हैं, उदाहरण के लिए कहते हैं कि उनके विवाह में लगभग सभी निर्णय मिलकर लिए जाते हैं; वे आगे कहते हैं: “मेरे विवाह को 25 वर्ष हो गए हैं, और इस दौरान मेरी पत्नी ने मुझसे केवल पाँच बार कहा है: ‘हम सहमत नहीं हो पा रहे। आप अगुवे हैं, इसलिए जाइए और परमेश्वर को खोजिए।’”¹⁴

मेरे अपने विवाह में वर्ष बीत गए और मुझे अपनी “निर्णय-शक्ति” का प्रयोग नहीं करना पड़ा, क्योंकि हमने हमेशा सहमति पा ली। परन्तु इसका अर्थ यह भी है कि जूली के प्रति मेरी “अगुवाई की भूमिका” और मेरे “अधीन रहने” का उसका कर्तव्य हमारे लिए हुए अनुभव में व्यावहारिक रूप से अस्तित्व में ही नहीं थे।

निर्णायक-मत मॉडल पर संदेह

नरम पूरकतावाद के बहुत से समर्थकों के लिए – मैं स्वयं बहुत वर्षों तक उनमें से एक था – अपने स्थान को धर्मवैज्ञानिक रूप से अद्यतन करने का कठिन काम शायद ही मेहनत के लायक लगता है। साल के लगभग हर दिन उनके विवाह का रूप ठीक वैसा ही होता है जैसा पारस्परिकतावादियों का। वास्तव में मैं शायद केलर दंपति के दृष्टिकोण को और अधिक समय तक थामे रहता (और उन दूसरों के प्रति मेरी सहानुभूति है जो अब भी ऐसा करते हैं), यदि मैं स्वयं से यह न पूछने लगता कि क्या अधिकार और अधीनता का एक नरम रूप भी सचमुच सभी विवाहों के लिए परमेश्वर का आदर्श है। वास्तव में मेरी पाँच गंभीर आपत्तियाँ भी हैं।

पहली: जब हम पत्नी के अपने पति के अधिकार के अधीन रहने को आदर्श के रूप में प्रस्तुत करते हैं, तो कलीसिया और समाज में उसके महत्वपूर्ण योगदानों की उपेक्षा करना उतना ही आसान हो जाता है।

पूरकतावादियों के नरम रुख के बावजूद, जब वे इस बात पर ज़ोर देते हैं कि पत्नी की अधीनता केवल उसके पति

के प्रति है और सब पुरुषों के प्रति नहीं, फिर भी वे इस बिंदु का उपयोग यह तर्क देने के लिए करते हैं कि जिन स्त्रियों की घर पर अगुवाई की जानी आवश्यक है, उन्हें कलीसिया में अगुवाई की भूमिका नहीं लेनी चाहिए।¹⁵ उदाहरण के लिए फ्रो बिल्कुल ठीक कहते हैं कि किसी परिवार के भीतर विवाह की भूमिकाएँ मसीह और कलीसिया के संबंध का एक “रहस्यमय दर्पण”¹⁶ हैं। यद्यपि वे यह स्वीकार करते हैं कि स्त्रियाँ समाज में अगुवाई के कार्य सँभाल सकती हैं, फिर भी वे इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि “परमेश्वर के परिवार में यह रहस्यमय प्रतिबिंब दिखाई देना चाहिए”।

परन्तु क्या यह छल्ला उचित है? इफिसियों 5 में पौलुस कहता है कि पुरुष और स्त्री की एकता एक “भेद” है जो मसीह और कलीसिया के बीच की एकता की ओर संकेत करता है। तो फिर पूरकतावादी क्यों सोचते हैं कि उन्हें इस “भेद” को बिना भेदभाव के पूरे समुदाय पर लागू करने की स्वतंत्रता है, ताकि पुरुष प्राचीन किसी तरह पति के रूप में यीशु का प्रतिनिधित्व करें (और इसलिए उनका पुरुष होना आवश्यक हो), जबकि बाकी कलीसिया दुल्हन का प्रतिनिधित्व करे (जो विचित्र रूप से इस उपमा से हट जाता है, क्योंकि इसमें स्त्रियाँ और पुरुष भी दोनों शामिल हैं)? इसके अलावा यह विचार कि कलीसिया के प्राचीन कलीसिया के पति का प्रतिनिधित्व करते हैं, खतरनाक और अबाइबलीय है – विशेष रूप से इसलिए कि स्पष्ट रूप से केवल यीशु ही यह भूमिका रखते हैं। यदि हम विवाह और कलीसिया के बीच की उपमा को आगे सोचें, तो कलीसिया के अगुवे अधिक से अधिक दूल्हे यीशु के मित्र की भूमिका ले सकते हैं, जैसे यूहन्ना 3:29 में यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला।

दूसरी: मैंने स्वयं से पूछा कि पौलुस – विवाह पर पूरकतावादी दृष्टिकोण के अनुसार – ठीक उसी पदानुक्रमिक व्यवस्था को आदर्श के रूप में क्यों प्रस्तुत करेगा जो पतन के द्वारा ही उत्पन्न हुई थी, और जिसके परिणामों की घोषणा परमेश्वर ने प्रतिज्ञा के रूप में नहीं, बल्कि एक अशुभ भविष्यवाणी के रूप में की थी: “वह तुझ पर प्रभुता करेगा।”¹⁷

तीसरी: मैं बार-बार स्तब्ध रह जाता हूँ कि मसीही विवाहों में साथी द्वारा दुर्व्यवहार कितनी बार प्रमाणित रूप से होता है। एलेन स्टॉर्की (Elaine Storkey) जैसे समाजशास्त्री यह मानते हैं कि जब स्त्री की अधीनता को परमेश्वर द्वारा ठहराए गए मानदंड के रूप में सिखाया जाता है, तो इससे किसी भी तरह सहायता नहीं मिलती। भले ही पति यह सुनें कि उन्हें अपना अधिकार “दयालुता से” प्रयोग करना है, फिर भी परमेश्वर द्वारा ठहराए गए पुरुष-अधिकार का विचार उन्हें कभी-कभी इस बात के लिए प्रोत्साहित करता है कि वे “खुले तौर पर या अनजाने में पुरुष-विशेषाधिकारों और दावों में विश्वास करें। इससे पुरुष ऐसी स्वतंत्रताओं, प्रतिष्ठा और मतों पर अधिकार जताते हैं जो उनकी साथियों पर लागू नहीं होते”।¹⁸ जब तक वे पतियों की सबसे अधिक पवित्र किस्म में से न हों, तब तक, अपनी साथियों को सचमुच अपने बराबर न मानने के कारण, वे उनके साथ – भले ही थोड़ा-सा – कमतर व्यक्ति जैसा व्यवहार करने की ओर अधिक झुकते हैं।¹⁹

अफ्रीका में, जहाँ मैं रहता हूँ, लिंग-आधारित हिंसा का स्तर सचमुच भयावह है। मैंने ऐसे मसीही पतियों की कहानियाँ सुनी हैं जो आज्ञा न मानने के कारण अपनी पत्नियों को पीटते हैं (और यहाँ तक कि एक ऐसे पास्टर की भी, जो अपनी कलीसिया की एक स्त्री को इसलिए पीटता है कि वह अपने पति की आज्ञा नहीं मानती)। इसके अलावा कुछ अध्ययन²⁰ दिखाते हैं कि स्त्री की अधीनता की शिक्षा इस संभावना को बढ़ाती है कि एक प्रताड़ित स्त्री हिंसक विवाह में टिकी रहे। साथ ही, जिन कलीसियाओं से वे सहायता माँगती हैं, वे अक्सर उन्हें अपने उत्पीड़क से अलग होने से मना करती हैं। यदि यह शिक्षा परमेश्वर का आदर्श है, तो मैंने स्वयं से पूछा, फिर यह मसीही कानों तक पहुँचते ही इतनी बार हानि क्यों पहुँचाती है।

चौथी: मैं नरम पूरकतावाद को कठोर रूप से कितना भी अधिक पसंद करूँ, मुझे यह मानना पड़ा कि यह एक बिल्कुल नई रचना है। यदि वह व्याख्या, जो उदार पूरकतावादी विवाह की ओर ले जाती है, केवल लगभग आधी शताब्दी पुरानी है, तो वह उस व्याख्या से भी नई है जो पारस्परिकतावादी विवाह की ओर ले जाती है। यद्यपि मैं केलर दंपति की शैली के इस नए, नरम पूरकतावाद के लिए आभारी हूँ, फिर भी मुझे गूडम और रसेल मूर (Russell Moore) जैसे पूरकतावादी धर्मविज्ञानियों से सहमत होना पड़ता है, जब वे सुझाव देते हैं कि यह दृष्टिकोण वास्तव में पूरकतावादी विवाह की अपेक्षा पारस्परिकतावादी विवाह से अधिक मिलता-जुलता है। यदि पाठ की एक संयमित व्याख्या यह माँग करती है कि नियमित रूप से मैं निर्णय लूँ और मेरी पत्नी मेरे अधीन रहे, तो हमने वास्तव में कभी “बाइबलीय” विवाह जिया ही नहीं, बल्कि एक ऐसा विवाह जो “बराबरी की वैवाहिक साझेदारी के भीतर परस्पर अधीनता का समर्थन करता है”, जिसमें निर्णय “सहमति तक पहुँचने की एक प्रक्रिया के द्वारा” लिए जाते हैं – मूर इसी तरह एक “नारीवादी” विवाह को परिभाषित करते हैं, और निश्चित रूप से किसी “बाइबलीय” या पूरकतावादी विवाह को नहीं।²¹ यदि गूडम (और ऐतिहासिक दृष्टिकोण) सही हैं, तो या तो परमेश्वर चाहता है कि मैं अपना व्यवहार बदलूँ और अपनी पत्नी की ओर से अधिक निर्णय लूँ या मुझे अपना धर्मविज्ञान बदलना होगा। जो हम विश्वास करते हैं उसके विपरीत जीते रहना निरी असंगति होगी।

पाँचवीं: इस प्रश्न का कि “पत्नी को अधीन क्यों रहना चाहिए?”, मेरी राय में कोई संतोषजनक उत्तर नहीं है। दृष्टिकोण 1 आज हम में से बहुतों को अजीब लग सकता है, परन्तु शताब्दियों तक यह पूरी तरह तर्कसंगत था: संस्कृति में और कलीसिया की शिक्षा में यह धारणा प्रचलित थी कि स्त्रियाँ पुरुषों से हीन हैं और इसलिए उनकी अपनी भलाई के लिए उनकी अगुवाई की जानी आवश्यक है। परन्तु 1960 के दशक से ये धारणाएँ संस्कृति और कलीसिया दोनों में पुरानी पड़ चुकी हैं। हम सब बहुत-सी ऐसी स्त्रियों को जानते हैं जो अपने पतियों से अधिक बुद्धिमान और निर्णय लेने में अधिक तत्पर हैं। इसलिए ऐसा नहीं हो सकता कि निर्णय लेने में वे हीन हों। तो फिर क्यों?

केलर दंपति के पास इसका एक उत्तर है: “इस प्रश्न का उत्तर एक प्रति-प्रश्न है: ‘मसीह ने अधिकार पिता को क्यों सौंप दिया?’ ” उनकी राय में अपने पति के अधिकार के अधीन पत्नी की अधीनता को मसीह और पिता के बीच के संबंध को प्रतिबिंबित करना चाहिए। परन्तु जैसा कि मैं अध्याय 3 और 6 में पहले ही समझा चुका हूँ, यह त्रिएक संबंध को गलत ढंग से प्रस्तुत करता है। इसके अलावा यह इस तथ्य को अनदेखा करता है कि पवित्र शास्त्र कहीं भी पुत्र द्वारा पिता को अधिकार सौंपे जाने को पत्नी द्वारा अपने पति को अधिकार सौंपे जाने के बराबर नहीं ठहराता।

जॉन पाइपर (John Piper) एक अलग उत्तर देते हैं: एक मसीही पत्नी की अपने पति के प्रति अधीनता देखने वाले संसार के सामने कलीसिया की मसीह के प्रति अधीनता को प्रस्तुत करती है। यह सुनने में सुंदर लगता है, परन्तु ध्यान से देखने पर पता चलता है: यह केवल दृष्टिकोण 1 में काम करता है, जहाँ पति अपनी पत्नी की उसके जीवन के हर दिन अगुवाई करता है। दृष्टिकोण 2 कलीसिया पर मसीह की अगुवाई का एक खराब चित्रण है – यदि यीशु हमारे प्रभु हैं, तो हम उनकी दैनिक अगुवाई के लिए सहमति देते हैं, न कि मिलकर निर्णय लेने की किसी नरम प्रक्रिया के लिए, जिसमें हम केवल कभी-कभार, जब हम सहमत न हो सकें, यीशु को अपना तुरूप का पत्ता चलने की अनुमति देते हैं।

यद्यपि केलर और पाइपर जैसे धर्मविज्ञानी धर्मवैज्ञानिक कारण बताने का प्रयास करते हैं, फिर भी बहुत से पास्टर, जो अक्सर अधिक व्यावहारिक सोच वाले होते हैं, पति के अधिकार को इस तर्क से उचित ठहराते हैं: क्योंकि जिस चीज़ के दो सिर हों वह एक राक्षस होती है, इसलिए यह जानना महत्वपूर्ण है कि अंत में “काला पत्ता” (जर्मन

मुहावरा: Schwarzer Peter) [ज़िम्मेदारी का] किसके हाथ में होगा। परन्तु इस कारण को मैं स्वीकार नहीं कर सकता। मैं समझाना चाहता हूँ कि क्यों।

“अंत में ‘काला पत्ता’ किसके हाथ में होगा?”

क्या दो लोगों के संबंध में सचमुच हमेशा केवल एक व्यक्ति को ज़िम्मेदारी उठानी होती है, क्योंकि अन्यथा विवाह टूट जाता है? मैं समझता हूँ कि खेल की एक टीम को कप्तान की, सेना को जनरल की और कंपनी को सीईओ की आवश्यकता होती है। परन्तु “एक तन” के बंधन में बँधे दो लोग, जो आदर्श रूप से, जैसा कि उत्पत्ति 2:25 में कहा गया है, “नंगे” या जान-बूझकर एक-दूसरे के सामने असुरक्षित होकर जीते हैं, उन्हें तो निश्चय ही किसी अगुवे की आवश्यकता नहीं! बल्कि उन्हें पूरी तरह इस बात के लिए समर्पित होना है कि वे बराबरी के साथियों के रूप में एक-दूसरे से प्रेम करें और एक-दूसरे की सेवा करें।

Love and Respect, विवाह के विषय पर एक बहुत प्रभावशाली मसीही पुस्तक, यह तर्क इस प्रकार रखती है: “दो बराबर सिरों वाला विवाह असफल होने के लिए अभिशप्त है। यह उन मुख्य कारणों में से एक है कि आजकल इतने अधिक लोग तलाक क्यों लेते हैं।”²² परन्तु इस बेतुके दावे के प्रमाण कहाँ हैं? मैं इस विषय पर और अध्ययन पढ़ना चाहूँगा। नियमित रूप से कलीसिया जाने वाली 21,000 विवाहित और तलाकशुदा मसीही स्त्रियों पर किया गया एक हाल का अध्ययन इसके विपरीत परिणाम पर पहुँचता है: “वे दंपति, जिनमें एक साथी निर्णय लेता है – भले ही वह उन पर पहले दूसरे साथी से चर्चा करे और उसकी राय ले –, उन दंपतियों की तुलना में 7.4 गुना अधिक बार तलाक लेते हैं जो निर्णय का अधिकार आपस में बाँटते हैं।”²³

बहुत से मसीही, अपने धर्मवैज्ञानिक विचारों से स्वतंत्र, इसे सहज रूप से जानते हैं। हज़ारों उत्तरदाताओं में से लगभग 40 % का विश्वास था कि निर्णायक निर्णय का अधिकार पति के पास है, जबकि लगभग 60 % की राय थी कि पत्नी को अपने पति के अधीन रहकर उससे प्रेम करना चाहिए। फिर भी केवल 17.3 % दंपति वास्तव में ऐसा व्यवहार करते हैं कि अंतिम शब्द पति का हो। इसके विपरीत 78.9 % विवाह बिना किसी निर्णायक निर्णय-अधिकार के चलते हैं, अर्थात् साथी मिलकर निर्णय लेते हैं या असहमति होने पर उन्हें स्थगित कर देते हैं।

यहाँ हमारे सामने दो दुविधाएँ हैं, जिन्हें मेरे जैसे पास्टर स्वीकार न करना ही पसंद करते हैं। पहली: जिन लोगों की हम अगुवाई करते हैं, उनके विश्वासों और उनके व्यवहार के बीच एक अंतर है। अधिकांश मसीही यह विश्वास तो करते हैं कि पति ही वह है जो निर्णय लेता है या असहमति में निर्णायक मत देता है, परन्तु अधिकांश उसके अनुसार व्यवहार नहीं करते। दूसरी: “यद्यपि बहुत से मसीही दंपति विश्वास करते हैं कि निर्णय का अधिकार पतियों के पास है, इस विश्वास ने दंपति को तब तक हानि नहीं पहुँचाई जब तक उसे व्यवहार में नहीं लाया गया।” क्या मेरे जैसे पास्टरों को इस बात पर ज़ोर देना चाहिए कि परमेश्वर के लोग उस बात का पालन करना आरंभ करें जिस पर वे विश्वास करते हैं, या हम उस बात पर प्रश्न उठाएँ जिसे विश्वास करना हमने उन्हें सिखाया है? यदि एक पास्टर के रूप में मैं उन दंपतियों का सचमुच भला चाहता हूँ जिनकी मैं अगुवाई करता हूँ, तो मुझे कुछ कठोर तथ्यों का सामना करना होगा:

जब स्त्रियों को लगता है कि उनकी बात नहीं सुनी जाती और उनकी राय उनके पति की राय जितनी महत्वपूर्ण नहीं है, तो तलाक की संभावना 26 गुना अधिक होती है। ... भले ही पुरुष अपनी पत्नी से उसकी राय पूछे, जिन विवाहों में निर्णय का अधिकार उसके पास होता है, उनमें परिभाषा के अनुसार उसकी राय का वज़न पत्नी की राय से अधिक होता है। और जब स्त्रियों को लगता है कि उनकी राय का वज़न उनके पति की राय के बराबर नहीं है, तो विवाह के टूटने की संभावना अधिक होती है।²⁴

इसके विपरीत विवाह में पारस्परिकता के स्पष्ट लाभ हैं: “जो दंपति मिलकर निर्णय लेते हैं, उनमें पत्नियाँ स्वयं को सबसे दुखी 20 % विवाहों की तुलना में सबसे सुखी 20 % विवाहों में चार गुना से भी अधिक बार गिनती हैं। इसके अलावा यौन संबंध में बार-बार चरमसुख का अनुभव करने की उनकी संभावना 67 % अधिक होती है।”²⁵ सर्वेक्षण के ये परिणाम पुष्टि करते हैं कि सबसे अच्छे विवाह (और सबसे अच्छे यौन जीवन वाले विवाह) वे हैं जिनमें समस्याओं को जान-बूझकर मिलकर सुलझाया जाता है और जिनमें असहमति होने पर सहमति तक पहुँचने के लिए आवश्यक समय और सावधानी दी जाती है।

मैं समझ सकता हूँ कि उदाहरण के लिए दस लोगों की अगुवाई-टीम के प्रमुख को कभी-कभी निर्णायक निर्णयकर्ता के रूप में कार्य करना पड़ता है। परन्तु हमें इस बात से सावधान रहना चाहिए कि किसी कंपनी की निर्णय-गतिशीलता को उस विवाह पर लागू करें जिसमें केवल दो व्यक्ति हैं, जो कार्यात्मक स्तर की अपेक्षा कहीं अधिक आपसी-मानवीय स्तर पर जुड़े हैं और जिन्होंने आत्मा की संगति के लिए स्वयं को समर्पित किया है।

इसके अलावा: दंपति कितनी बार ऐसी स्थिति में आते हैं जिसमें कोई महत्वपूर्ण निर्णय लेना हो और उनके पास सहमति तक पहुँचने का समय न हो? सामान्यतः निर्णय लेने के लिए पर्याप्त समय होता है। वैकल्पिक रूप से दंपति उस साथी पर भरोसा करते हैं जो संबंधित क्षेत्र में सबसे अधिक आश्वस्त है या जिसके पास सबसे अधिक विशेषज्ञता है। यदि फिर भी कोई दंपति सहमत न हो पाए, तो इससे पता चलता है कि दोनों अपनी-अपनी राय के प्रति आश्वस्त हैं। ठीक उसी क्षण, जब मत सबसे अधिक भिन्न हैं, पति का अपनी ज़िद मनवा लेना मुझे सबसे खराब समाधान लगता है! क्या दंपति के पास इस विषय पर तब तक विचार-विमर्श करने का कोई मार्ग नहीं है जब तक सहमति न बन जाए? स्पष्टता प्राप्त होने तक बातचीत जारी रखना बेहतर है, और इस बीच पति और पत्नी दोनों को प्रार्थना में सबसे अच्छे समाधान को खोजना चाहिए, दूसरों से सलाह लेनी चाहिए और एक-दूसरे की बात सचमुच सुनने का प्रयास करना चाहिए।²⁶

मेरा अनुभव मुझे इस निष्कर्ष पर पहुँचाता है: यदि मैं अपने अधिकार का प्रयोग ठीक तब करूँ जब मेरी पत्नी की कोई ऐसी राय हो जिसके प्रति वह इतनी आश्वस्त है कि वह मेरा विरोध करती है, तो यह संबंध को नष्ट करने के बराबर है। एलन फ्रो के विपरीत, जिन्हें पाँच ऐसे अवसर याद हैं जब उनकी पत्नी ने उनसे तुरूप का पता चलने के लिए कहा, मुझे केवल एक ही अवसर याद है जब मैंने जूली की अनिश्चितता के बावजूद कोई महत्वपूर्ण निर्णय लिया। परन्तु उस विशेष मामले में भी उसने केवल मेरे अधिकार को स्वीकार करने की अपेक्षा मेरे दृढ़ विश्वास पर अधिक भरोसा किया। जब मैं इस पर सोचता हूँ, तो मुझे बहुत-सी और स्थितियाँ याद आती हैं जिनमें मैंने उसकी राय के विरुद्ध अंतिम निर्णय लेने का प्रयास किया, और फिर उसका ज़ोरदार विरोध झेलना पड़ा। सौभाग्य से हर बार मैंने उसकी बात सुनी और हमने अंतिम निर्णय को टाल दिया। पीछे मुड़कर देखने पर मुझे विश्वास है कि यदि मैंने उसकी उचित आशंकाओं के बावजूद अपना अधिकार जताने का प्रयास किया होता, तो मैं उसका भरोसा नष्ट कर देता।

इससे मेरा कहना यह है कि दृष्टिकोण 2 के बारे में मेरे मन में गंभीर संदेह उठे! जितना मैं बड़ा होता जाता हूँ और जितने अधिक दंपतियों का मैंने पास्टर और मित्र के रूप में साथ दिया है, उतना ही इन आशंकाओं को अनदेखा करना मेरे लिए कठिन होता जाता है। मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ: जूली और मैं परमेश्वर के सामने अपना विवाह किस प्रकार जीते हैं, और हम अपने बच्चों को कैसे सिखाते हैं कि वे अपने जीवन-साथियों के साथ कैसा व्यवहार करें और उनसे कैसा व्यवहार स्वीकार करें, यह इतना केंद्रीय विषय है कि “निर्णायक-मत” वाले दृष्टिकोण की कमज़ोरियों का भी सामना करना और इफिसियों 5 की अन्य संभावित व्याख्याओं के लिए खुला रहना बेहतर है। जब मैंने ऐसा किया, तो मैंने फिर से वह आनंद पाया कि इफिसियों 5 जैसे कठिन पाठों को केवल सतही रूप से न

पढ़ूँ, बल्कि और गहराई में खोदूँ और केवल यह न पूछूँ कि पाठ क्या कहता है, बल्कि यह भी कि वह ऐसा क्यों कहता है और मूल रूप से किसे संबोधित था।

दृष्टिकोण 3: अपनी बराबरी की साथी के सेवक के रूप में पति

इस तीसरे दृष्टिकोण का गहराई से अध्ययन करने से पहले मैं मानकर चलता था कि यह बिल्कुल स्पष्ट रूप से इफिसियों 5 की स्पष्ट शिक्षा से बचने का एक प्रयास है। मैं फ़्रो से सहमत होता, जो अनुमान लगाते हैं कि इसके पीछे बाइबल के पाठ को व्याख्या के द्वारा "तोड़ने-मरोड़ने" का प्रयास था। जब अंततः मैंने इस दृष्टिकोण का गहराई से अध्ययन किया, तो मुझे आश्चर्य के साथ पता चला कि यह वास्तव में विश्वसनीय है – व्याख्या की कोई कलाबाज़ी नहीं, बल्कि उस अत्यंत आवश्यक, श्रमसाध्य बारीक काम का परिणाम जिसकी एक ठोस व्याख्या माँग करती है। धर्मविज्ञानी फ़िलिप पेन (Philip Payne) इफिसियों 5 के विषय में कई अवलोकन प्रस्तुत करते हैं, जिनसे यह बहुत संभव हो जाता है कि पौलुस वास्तव में विवाह की नींव के रूप में बराबरी और पारस्परिकता चाहता है, न कि – जैसा कि सतही पठन से लगता है – अगुवाई और अधीनता।

सबसे पहले, पौलुस मसीही विवाह को परस्पर अधीनता के संदर्भ में रखता है। पेन के अनुसार, "अधीन रहना" ("स्वयं को किसी दूसरे के नीचे रखना" के अर्थ में) शब्द का पारस्परिक अभिव्यक्ति "एक दूसरे" (यूनानी: ἀλλήλοις, *allelōis*) के साथ जोड़ना पौलुस की सामाजिक रूप से सबसे क्रांतिकारी और भाषाई रूप से सबसे रचनात्मक शिक्षाओं में से एक है। नए नियम में अधिकतर "अधीन रहना" (यूनानी: ὑποτάσσω, *hypotasso*) शब्द का अर्थ किसी दूसरे के अधिकार के आगे झुकना होता है। परन्तु इसे "एक दूसरे" के साथ जोड़कर पौलुस इस अधीनता को पारस्परिक बना देता है और इस प्रकार इसके अर्थ को किसी दूसरे के अधिकार को मान्यता देने से हटाकर उसकी सेवा में स्वयं को लगाने की ओर ले जाता है। यह ठीक वही है जो पौलुस ने इफिसुस के मसीहियों को पहले लिखा था: उन्हें "प्रेम से एक दूसरे की सह लेना" है (4:2), "एक दूसरे पर कृपालु और करुणामय" होना है और "एक दूसरे के अपराध क्षमा करना" है (4:32)। इसका जो कारण पौलुस देता है, वह यह है कि हम "मसीह के भय में" (5:21 ELB) एक दूसरे के अधीन रहते हैं। यह अध्याय के आरंभ की ओर संकेत करता है, जहाँ बताया गया है कि मसीह ने स्वयं को हमारी सेवा में लगा दिया: "मसीह ने हम से प्रेम किया और हमारे लिए अपने आप को ... सुखदायक सुगंध के लिए परमेश्वर के आगे भेंट और बलिदान कर दिया" (5:2)।

दृष्टिकोण 1 को मानने वाले कट्टर पूरकतावादी इसका खंडन करते हैं: वेन गूडम और केविन डीयंग (Kevin De Young) दोनों पारस्परिक अर्थ का – अर्थात् यह कि पुरुष को भी अपनी पत्नी के अधीन रहना चाहिए – खंडन करने का प्रयास करते हैं। वे कहते हैं कि "एक दूसरे" का अर्थ "कुछ लोग दूसरों के अधीन" भी हो सकता है। उदाहरण के लिए गूडम "लोग एक दूसरे को घात करें" (प्रकाशितवाक्य 6:4) में इस शब्द के प्रयोग का हवाला देते हैं और कहते हैं कि इसका अर्थ है कि "कुछ पुरुष दूसरे पुरुषों को घात करेंगे"। परन्तु यदि प्रकाशितवाक्य के लेखक का अर्थ केवल यह होता कि कुछ पुरुष दूसरों को घात करते हैं, बिना स्वयं घात किए गए, तो वह "एक दूसरे" शब्द का प्रयोग ही न करता। डीयंग ऐसे अन्य पाठों की ओर संकेत करते हैं जिनमें "एक दूसरे"²⁷ अभिव्यक्ति का प्रयोग हुआ है, और जिनमें उनकी राय में पारस्परिकता शामिल नहीं है। परन्तु ध्यान से देखने पर उनमें निश्चय ही पारस्परिकता है, ठीक वैसे ही जैसे इफिसियों की पत्नी में और पूरे नए नियम में "एक दूसरे" के हर अन्य प्रयोग में। "एक दूसरे" के अधीन रहने को केवल एक दिशा में (अधीनस्थ से अधिकारी की ओर) बहाने के गूडम और डीयंग के प्रयास असफल होते हैं। जॉर्ज नाइट (George Knight) और टॉम श्राइनर (Tom Schreiner) जैसे अग्रणी पूरकतावादी धर्मविज्ञानी भी इस बिंदु पर भिन्न राय रखते हैं।²⁸

दूसरा: पौलुस निर्धारित करता है कि वह स्त्रियों से किस प्रकार की अधीनता की अपेक्षा करता है। जैसा कि पहले कहा जा चुका है, अधीनता के दो प्रकार हैं। एक ओर किसी अधीनस्थ की किसी अधिकारी के प्रति आज्ञाकारी अधीनता है, उदाहरण के लिए किसी नागरिक की अपनी सरकार के प्रति।²⁹ फिर सेवा करने वाली अधीनता है, जिसका अर्थ, जैसा कि हमने देखा, पौलुस तब लेता है जब वह परस्पर अधीनता की बात करता है।³⁰ पहली एकतरफ़ा है और उसकी माँग की जा सकती है। दूसरी पारस्परिक हो सकती है और हमेशा स्वैच्छिक होती है।

जब पौलुस स्त्रियों से कहता है कि वे अपने पतियों के अधीन रहें, तो उसका आशय किस प्रकार की अधीनता से है? इस प्रश्न का हमारा उत्तर संबंधित अनुवाद पर निर्भर करता है। यदि हम कोई भी [जर्मन] बाइबल खोलें, तो पद 21 के अंत में हमें पूर्णविराम दिखाई देता है, और फिर एक बिल्कुल नया अनुच्छेद आरंभ होता है। कुछ अनुवाद तो पद 21 और 22 के बीच एक शीर्षक भी डाल देते हैं, जैसे कि “परमेश्वर की जीवन-व्यवस्था में पुरुष और स्त्री” (SLT – जर्मन बाइबल अनुवाद)। परन्तु यह अनुच्छेद-परिवर्तन या डाला गया शीर्षक एक बहुत महत्वपूर्ण बात को छिपा देता है: यूनानी में पद 21 और पद 22 के बीच कोई पूर्णविराम नहीं है।

वास्तव में – और इस बात ने मुझे हिलाकर रख दिया – हमारे पास उपलब्ध सबसे प्राचीन यूनानी हस्तलेखों में पद 22 में “अधीन रहना” शब्द आता ही नहीं। इसका कारण यह है कि पद 22 क्रिया को पद 21 से लेता है।³¹ यूनानी पाठ शाब्दिक रूप से कहता है: “मसीह के भय में एक दूसरे के अधीन रहो, स्त्रियाँ [अनुपस्थित शब्द पर ध्यान दें] अपने-अपने पतियों के ...”। दूसरे शब्दों में: जब पौलुस यहाँ स्त्रियों से कहता है कि वे अपने पतियों के अधीन रहें, तो वह ठीक उसी प्रकार की अधीनता की बात कर रहा है जो सब विश्वासियों को एक दूसरे के प्रति दिखानी है। वह यहाँ यह नहीं कहता कि स्त्रियों को किसी विशेष ढंग से अपने पतियों के अधीन होना चाहिए। बल्कि वह अधीनता के दूसरे प्रकार [सेवा करने वाली अधीनता] की बात करता है, जिसमें पत्नियाँ अपने पतियों की नम्रता से सेवा करने और उनका भला करने का चुनाव करती हैं। वह उसी वाक्य में अंतिम बार “अधीन रहना” शब्द का प्रयोग करता है, ताकि फिर कलीसिया की मसीह के प्रति अधीनता की ओर संकेत करे। पद 21 और 22 में “अधीन रहना” शब्द के प्रयोग की पृष्ठभूमि में हमें इसे इस प्रकार पढ़ना चाहिए: “जैसे कलीसिया सब बातों में मसीह की नम्रता से सेवा करती है और उसे प्रसन्न करने के लिए जीती है, वैसे ही स्त्रियाँ भी सब बातों में अपने पतियों की नम्रता से सेवा करें और उन्हें प्रसन्न करने के लिए जिँ” (पद 24)।³²

तीसरा, इस संदर्भ में “सिर” (यूनानी: κεφαλή, kephalē) का अर्थ बहुत संभवतः अधिकार नहीं, बल्कि जीवन का स्रोत है। आधुनिक जर्मन में “Haupt” (सिर) रूपक के रूप में अधिकार के लिए प्रयुक्त होता है – सीईओ कंपनी का “सिर” (प्रमुख) है, कमांडिंग ऑफ़िसर इकाई का “सिर” है। इसके अलावा जब हम किसी शाब्दिक देह के शाब्दिक सिर की कल्पना करते हैं, तो हम आधुनिक लोग यह मानकर चलते हैं कि सिर, जिसमें मस्तिष्क है, देह का नियंत्रण-केंद्र है। तंत्रिका-तंत्र के द्वारा वह देह को आदेश भेजता है।

हमें स्वयं से यह प्रश्न पूछना होगा कि जब पौलुस ने kephalē शब्द चुना तो उसका आशय क्या था, और उसके मूल पाठकों ने इसे संभवतः कैसे समझा होगा। पूरकतावादी धर्मविज्ञानी तर्क देते हैं कि पौलुस सिर के रूप में मसीह की तुलना पति से करता है और इससे पति के अधिकार का अर्थ लेता है। परन्तु इसमें यह अनदेखा किया जाता है कि जब पौलुस इस शब्द का रूपक के रूप में प्रयोग करता है, तो संभवतः उसके मन में यह अर्थ होता ही नहीं। हाँ, पौलुस समझता था कि यीशु मसीह का कलीसिया पर और सृष्टि पर अधिकार है, परन्तु जब वह यीशु को किसी देह का kephalē कहता है, तो वह सामान्यतः किसी ऐसी बात पर ज़ोर देता है जो अधिकार से संबंधित तो है, पर ठीक वही नहीं है। परिशिष्ट 3, “kephalē (सिर) का क्या अर्थ है” में, जिसे आपको अवश्य पढ़ना चाहिए, मैं समझाता हूँ कि पौलुस के समय में, गूडम के दावे के विपरीत, इस शब्द का सामान्य अर्थ अधिकार नहीं था।

इफिसियों 5 में पौलुस इस शब्द को क्या अर्थ देता है? सबसे महत्वपूर्ण संकेत यह है कि वह इसका प्रयोग विवाह की एक उपमा के भाग के रूप में करता है – और वह भी एक बिल्कुल नई भाषाई रचना के रूप में: **पति पत्नी का सिर है, जो उसकी देह है**। “सिर” के लिए यूनानी शब्द पुरुष और स्त्री के संबंध के संदर्भ में केवल दो बार प्रयुक्त हुआ है (यहाँ और 1 कुरिन्थियों 11:3 में)। भाषा-वैज्ञानिक दोनों स्थलों पर इस शब्द के अर्थ के बारे में एकमत नहीं हैं। अध्याय 6 में मैं इस मत के पक्ष में तर्क देता हूँ कि 1 कुरिन्थियों में इसका अर्थ **आदरणीय जीवन-स्रोत** है। केवल इफिसियों 5 में ही यह शब्द **सिर-और-देह** के रूपक के संदर्भ में प्रयुक्त हुआ है। क्या पौलुस हमें कोई संकेत देता है कि “पत्नी का सिर, जो उसकी देह है” से उसका क्या अर्थ है?

हाँ, देता है! पद 23 की मूल यूनानी वाक्य-संरचना, जो दुर्भाग्य से अधिकांश अनुवादों में खो गई है, यह है: “पति पत्नी का सिर है, ... मसीह कलीसिया का सिर, वह स्वयं देह का उद्धारकर्ता है।” यूनानी में स्पष्ट हो जाता है कि “सिर” से पौलुस का क्या अर्थ है। ये तीन समानांतर अभिव्यक्तियाँ स्पष्ट करती हैं कि पौलुस “सिर” को “उद्धारकर्ता” के पर्याय के रूप में प्रयोग करता है। यदि पौलुस पुरुष के अधिकार पर ज़ोर देना चाहता, तो वह इसके लिए अनेक यूनानी शब्दों में से किसी एक का प्रयोग कर सकता था: *kyrios* (प्रभु), *exousia* (अधिकार) या *proestōtes* (अगुवाई करना)। इसके स्थान पर वह सिर-देह के रूपक को चुनता है और इसकी तुलना मसीह से करता है, जो स्वयं को अपनी देह के उद्धारकर्ता के रूप में (इस स्थिति में प्रभु के रूप में नहीं) दे देता है। धर्मवैज्ञानिक रूप से मसीह उद्धारकर्ता भी है और प्रभु भी, परन्तु पौलुस इस उपमा में मसीह का केवल अपनी देह के उद्धारकर्ता वाला अर्थ रखता है। यदि हमें इस बात में संदेह है कि यहाँ पति के सिर होने का अर्थ उसकी देखभाल और उसकी सेवा है, तो हम देखभाल और सेवा का विचार अगले पदों में फिर से पाते हैं, यद्यपि यह कुछ हद तक इस बात से ढक जाता है कि पौलुस एक और रूपक भी जोड़ देता है, अर्थात् मसीह के अपनी दुल्हन, कलीसिया, के साथ विवाह का:

मसीह ने अपने आप को उसके [अपनी दुल्हन/अपनी देह के] लिए दे दिया, ताकि वह उसे [अपनी दुल्हन/अपनी देह को] पवित्र करे, जब उसने उसे [अपनी दुल्हन/अपनी देह को] वचन में जल के स्नान के द्वारा शुद्ध कर दिया, ताकि वह उसे [अपनी दुल्हन/अपनी देह को] अपने सामने एक ऐसी कलीसिया के रूप में प्रस्तुत करे जो महिमामय हो, जिसमें न कलंक हो न झुर्री न कोई ऐसी वस्तु, बल्कि वह पवित्र और निर्दोष हो। इसी प्रकार पति भी इस बात के लिए बाध्य हैं कि वे अपनी पत्नियों से अपनी देह के समान प्रेम रखें; जो अपनी पत्नी से प्रेम रखता है, वह अपने आप से प्रेम रखता है। क्योंकि किसी ने कभी अपने शरीर से बैर नहीं रखा, बल्कि वह उसका पालन-पोषण और देखभाल करता है, जैसे प्रभु भी कलीसिया का।

आप देखते हैं? इस पूरे खंड में पौलुस का ज़ोर अधिकार पर नहीं, बल्कि सेवा और देखभाल पर है। जब वह कहता है कि पति पत्नी का सिर है, तो उसका अर्थ यह नहीं है कि पतियों को अपनी पत्नियों पर अपना अधिकार चलाना चाहिए। उसका अर्थ है कि पतियों को अपनी पत्नियों की सेवा उसी तरह करनी चाहिए जैसे हम में से हर एक अपनी देह की सेवा करता है।

पद 21–30 में इस तीन-भागीय रूपक (सिर–देह; पति–पत्नी; मसीह–कलीसिया) को प्रस्तुत करने के बाद पौलुस एक और स्तर जोड़ता है: पतन से पहले आदम और हव्वा की एकता। यद्यपि इससे उसके द्वारा बनाया गया चित्र कुछ जटिल हो जाता है, फिर भी यह एक अद्भुत विचार को व्यक्त करता है: “ इस कारण पुरुष अपने पिता और अपनी माता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा, और वे दोनों एक तन होंगे।” यह भेद तो बड़ा है; पर मैं मसीह और कलीसिया के विषय में कहता हूँ (पद 31–32)। अपनी इस उपमा से कि पति सिर है और उसकी पत्नी देह का शेष भाग, पौलुस आदम और हव्वा के बीच के बिल्कुल पहले विवाह की ओर मुड़कर देखता है, जब उन्होंने

पहली बार एक रूपकात्मक “एक-तन-एकता” का आनंद लिया था। जैसा कि हम अध्याय 4 में पहले ही देख चुके हैं, इस मिलन में बात अधिकार और अधीनता की नहीं, बल्कि आनंदपूर्ण घनिष्ठता और साझेदारी की थी। इसलिए इफिसियों 5 में सिर-देह के रूपक के द्वारा पौलुस किसी आदेश-शृंखला पर नहीं, बल्कि प्रेम के एक बंधन पर ज़ोर देता है।

मैं एक अंतिम अंतर्दृष्टि और जोड़ना चाहता हूँ, जो इफिसियों 5 के उस पठन से निकलती है जिसके अनुसार परमेश्वर पति को अपनी पत्नी की सेवा करने (न कि उसकी अगुवाई करने) के लिए बुलाता है: इस खंड में पति को अपनी पत्नी की अगुवाई करने का एक भी निर्देश नहीं है – न यहाँ और न ही पूरे पवित्र शास्त्र में कहीं और! इस वाक्य को चाहें तो एक बार फिर पढ़िए। यह व्याख्या को मूल रूप से बदल देता है।

यह सब हमें इस महत्वपूर्ण निष्कर्ष पर ले जाता है कि इफिसियों 5 संभवतः अपनी अधीन रहने वाली पत्नी पर पुरुष के अधिकार के विषय में बिल्कुल भी नहीं है। बल्कि पौलुस सजीव रूपकों के द्वारा इस बात पर ज़ोर देता है कि पति और पत्नी को प्रेमपूर्वक एक होना है और एक दूसरे की सेवा और भलाई करनी है।

क्या इसका अर्थ यह है कि पौलुस पतियों और पत्नियों से एक दूसरे के साथ ठीक एक ही ढंग से व्यवहार करने को कहता है?

हाँ भी और नहीं भी। हाँ, क्योंकि दोनों को “एक दूसरे के अधीन रहने” के लिए बुलाया गया है। और यद्यपि यहाँ केवल पतियों से कहा गया है कि वे अपनी पत्नियों से “प्रेम” करें, फिर भी दोनों को एक दूसरे से प्रेम करना है – एक अन्य स्थान पर पौलुस स्त्रियों से स्पष्ट रूप से कहता है कि वे “अपने पतियों से प्रेम रखें”।³³ परन्तु नहीं भी, क्योंकि पौलुस के मन में संभवतः वे ढर्रे हैं जिन्हें उसने यूनानी-रोमी संसार की कलीसियाओं के इतने सारे विवाहों में देखा था। उदाहरण के लिए ध्यान दीजिए कि पति को *kephalē* या जीवन-स्रोत के रूप में वर्णित किया गया है, यह नहीं कहा गया कि उसे ऐसा बनना चाहिए। पौलुस संभवतः इस तथ्य की ओर संकेत करता है कि प्राचीन काल में पत्नियाँ अधिकतर कम उम्र की और कम शिक्षित होती थीं। वे बच्चों के पालन-पोषण में व्यस्त रहती थीं और इसलिए अपने पतियों द्वारा आर्थिक और भौतिक भरण-पोषण पर पूरी तरह निर्भर थीं। एक आश्रित पत्नी को *kephalē* कहने का कोई अर्थ नहीं होता।

इसके अलावा: यदि पौलुस के समय के पति लगभग वैसे ही थे जैसे बहुत से पति जिन्हें मैं आज जानता हूँ, तो वे (औसतन) अपनी पत्नियों की तुलना में अपने जीवन-साथियों के लिए अपना जीवन बलिदान करने के लिए कम तैयार थे।³⁴ इसी कारण पौलुस स्त्रियों से यह कहना पर्याप्त समझता है कि वे अपने पतियों के अधीन रहें, अर्थात् नम्रता से उनकी सेवा करें और उनका भला करें। फिर वह पुरुषों के स्वार्थ को हिलाने में लग जाता है, उनसे तीन गुना अधिक बातें कहकर और उन्हें मसीह की तरह बलिदान करने के लिए प्रेरित करके। यह मुझ पर निश्चय ही लागू होता है: मेरे विवाह में जूली को नहीं, बल्कि मुझे ही पवित्र शास्त्र और पवित्र आत्मा के निरंतर कार्य के द्वारा सबसे अधिक इस बात के लिए प्रेरित किए जाने की आवश्यकता है कि मैं अपने जीवन-साथी की आत्म-बलिदान और नम्रता के साथ सेवा करूँ और उसका भला करूँ। मेरा अनुमान है कि मेरे मित्र एंड्रयू बार्टलेट (Andrew Bartlett) अपने निष्कर्ष में सही हैं: “पौलुस पति से आत्म-समर्पण में आगे बढ़ने को कहता है। यह अपने पति से निःस्वार्थ प्रेम करने के पत्नी के मसीही कर्तव्य से मूल रूप से भिन्न तो नहीं है, परन्तु यह प्रेम करने की पुरुष की ज़िम्मेदारी को और प्रबल कर देता है।”³⁵

पद 33 में पौलुस पुरुषों से स्पष्ट रूप से कहता है कि वे अपनी पत्नियों से “प्रेम” करें (न कि उनकी अगुवाई करें), और स्त्रियों को वह विशेष रूप से चेतावनी देता है कि वे अपने पतियों का “आदर” करें (न कि उनके अधीन रहें)।

वह स्त्रियों से अपने पतियों का आदर करने को, और पतियों से अपनी पत्नियों से प्रेम करने को क्यों कहता है? यद्यपि तब भी और आज भी अधिकांश स्त्रियाँ आदर भी पाना चाहती थीं और अधिकांश पति प्रेम की इच्छा रखते थे, फिर भी पौलुस संभवतः अपने समय के बहुत से पुरुषों और स्त्रियों के भिन्न-भिन्न मनोविज्ञान के बारे में कुछ जानता था।

जब मैं दृष्टिकोण 3 का वर्णन करता हूँ, अर्थात् अपने बराबरी के जोड़ीदार के सेवक के रूप में पति का, तो मुझे इस दृष्टिकोण की शक्ति का अनुभव होता है। ईमानदारी से कहूँ, तो मुझे आशा है कि यही सही व्याख्या है, क्योंकि मुझे यह बहुत प्रेरणादायक और चुनौतीपूर्ण लगती है। गूडम के दृष्टिकोण के विपरीत, जिसके अनुसार पति दैनिक निर्णयकर्ता है (जिसे मैं बुरा मानता हूँ), और केलर दंपति के दृष्टिकोण के विपरीत, जिसके अनुसार पति दुर्लभ स्थितियों में निर्णायक मत देता है (जिसे मैं बेहतर, परन्तु फिर भी समस्याग्रस्त और इसके अलावा असंगत मानता हूँ), मुझे यह दृष्टिकोण अच्छा और अत्यंत व्यावहारिक लगता है।

परन्तु क्या हो, यदि पौलुस इस खंड में वास्तव में यह संकेत देना चाहता था कि इफिसुस की पत्नियों को अपने पतियों में किसी प्रकार के अधिकार को मान्यता देनी चाहिए, भले ही वह इसे पतियों से प्रेमपूर्ण आत्म-बलिदान की अपील करके फिर से संतुलित कर देता है? आखिरकार कम से कम विवाह की तुलना उस ईश्वरीय विवाह से, जिसमें परमेश्वर/यीशु और हमारे बीच निश्चित रूप से पद का अंतर है, विवाह-संबंध में किसी पदानुक्रम की ओर ध्यान ले जाती है। इस खंड को सही ढंग से समझने के लिए दृढ़ होकर मैंने इस पर और विचार किया। मैंने स्वयं से पूछा कि क्या मैंने इस कार्य पर बाइबल-व्याख्या के सभी महत्वपूर्ण सिद्धांत लागू किए थे – और फिर पाया कि ऐसा नहीं था।

दृष्टिकोण 4: छुड़ाए गए *Paterfamilias* के रूप में पति

जैसा कि पहले कहा जा चुका है, पवित्र शास्त्र को समझने और लागू करने के अपने प्रयास में हम जो सबसे आम गलतियाँ करते हैं, उनमें से एक यह है कि हम कल्पना कर लेते हैं कि उसके विभिन्न भाग सीधे हमें संबोधित थे। परन्तु ऐसा नहीं था: वे हमारे लिए लिखे गए हो सकते हैं, परन्तु वे हमें संबोधित नहीं थे। केवल जब हम मूल पाठकों की स्थिति को समझते हैं और जानते हैं कि उन्होंने उन शब्दों को किस अर्थ में समझा, तभी हम, जो एक बिल्कुल अलग स्थिति या संस्कृति में रहते हैं, पाठ से अपने लिए अर्थ निकालना आरंभ कर सकते हैं। बहुत से, यदि अधिकांश नहीं, पाठों में हमारी आज की स्थिति पहले पाठकों की स्थिति से तुलनीय है, जिससे यह कार्य आसान हो जाता है। परन्तु क्या हो, यदि उनकी स्थिति हमारी स्थिति से बहुत अधिक भिन्न हो?

आज का मसीही भिन्नताओं की एक “नदी” (जैसे भाषा, संस्कृति, जीवन-परिस्थितियों में) के द्वारा बाइबल के श्रोताओं से अलग है। यह नदी हमें उनके संदर्भ के अर्थ से सीधे अपने संदर्भ के अर्थ तक पहुँचने से रोकती है। हम निश्चय ही उसी बड़ी कहानी का भाग हैं, परन्तु इस कहानी में हमारा स्थान अक्सर हमारे आत्मिक पूर्वजों के स्थान से भिन्न होता है। कभी-कभी नदी चौड़ी होती है और उसे पार करने के लिए एक लंबे पुल की आवश्यकता होती है। कभी-कभी वह एक पतला नाला होती है, जिसे हम आसानी से पार कर लेते हैं। पाठ में निहित सिद्धांतों को अपने लिए लागू करने योग्य बनाने के उद्देश्य से उस पर पुल बनाने का प्रयास करने से पहले हमें यह जानना होगा कि नदी कितनी चौड़ी है।³⁶

जब मैंने व्याख्या की यह कुंजी इफिसियों की पत्रि के अध्याय 5 के अध्ययन पर लागू की, तो मैंने अपनी गलती को पहचाना, और लगभग उन सभी की गलती को भी जिनके इस पाठ पर लिखे लेख मैंने पढ़े थे: हम मान लेते हैं कि

इफिसियों 5 एक पतला नाला है जिसे हम आसानी से पार कर सकते हैं, जबकि वास्तव में वह एक चौड़ी नदी है जिसे पार करने के लिए एक लंबे पुल की आवश्यकता है।

मैं इसे समझाता हूँ। हम मान लेते हैं कि इफिसुस की कलीसिया के दंपति कमोबेश आधुनिक दंपतियों जैसे थे। हम कल्पना करते हैं कि पौलुस हमें और हमारे आज के विवाहों को “देखता” है और इसलिए यह पत्री हमें लिखता है। परन्तु वास्तव में वह पहली शताब्दी के यूनानी-रोमी संसार के विवाहों की बात करता है, जो हमारे विवाहों से स्पष्ट रूप से भिन्न थे। उस संसार में घर दो नौकरीपेशा माता-पिता, दो बच्चों, एक कुत्ते और एक बिल्ली से नहीं बनते थे। अधिकतर एक घराना एक पुरुष, *paterfamilias* (गृहस्वामी), से बनता था, जो अपनी पत्नी, अपने बच्चों और कभी-कभी अपने दासों पर भी शासन करता था। अरस्तू (Aristoteles) की शिक्षा के अनुसार घराने पदानुक्रमिक ढंग से संगठित थे – उस संस्कृति में घर चलाने का यही सबसे अच्छा तरीका था। (केवल जब कोई वयस्क पुरुष उपस्थित न हो, तभी स्त्री घर पर शासन करने वाली बनती थी।) मैं जान-बूझकर “शासन करने वाली” कहता हूँ: अरस्तू ने कहा: “घराने पर शासन एक राजतंत्र है”³⁷ – पति और पिता राजा था।

जब मैंने पिछले अनुच्छेद में बच्चों और दासों का उल्लेख किया, तो शायद आपको भी, मेरी तरह, कुछ स्पष्ट हुआ होगा। इफिसियों 5:22-33 में पति-पत्नी का संबंध उन तीन संबंध-जोड़ों में से पहला है जिन्हें पौलुस संबोधित करता है। अगले दो ठीक उसके बाद आते हैं: माता-पिता-बच्चे (6:1-4) और स्वामी-दास (6:5-9)। जिस बात को मैंने पहले अनदेखा कर दिया था, वह यह थी कि **पौलुस सुसमाचार को इन बहुस्तरीय प्राचीन घरानों पर लागू करता है**, जो पुरुषों, स्त्रियों, बच्चों और दासों के एक पदानुक्रम से बने थे। पतियों के पास ऐसे अधिकार, विशेषाधिकार और स्वतंत्रताएँ थीं जो उनकी पत्नियों को नहीं दी गई थीं।³⁸ शक्ति उनके पास थी और आय का सबसे बड़ा भाग वही जुटाते थे। अधिकांश मामलों में स्त्रियाँ किसी ऐसे पुरुष के बिना, जो उनके नाम पर कार्य करे, न संपत्ति रख सकती थीं, न व्यापार कर सकती थीं और न ही कोई कानूनी या आर्थिक लेन-देन कर सकती थीं।

भूमध्यसागरीय समाज में पुरुषों की विवाह की औसत आयु तीस वर्ष थी, जबकि स्त्रियों की अठारह वर्ष या उससे कम। जब कोई पुरुष विवाह करता था, तो वह सामान्यतः पहले से ही दुनियादारी समझने वाला पुरुष होता था, जो जानता था कि समाज में कैसे जिया जाता है। वह सामाजिक और आर्थिक रूप से कार्य करने में सक्षम व्यक्ति था। इसके विपरीत एक स्त्री अभी एक लड़की ही होती थी, जिसे दरवाज़े पर दस्तक होने पर घर के दरवाज़े तक जाने की भी अनुमति नहीं थी। एक सामान्य स्त्री अपने संतान-योग्य वर्षों में लगभग हर दो वर्ष या हर तीस महीने में एक बच्चे को जन्म देती थी। वह हमेशा “नंगे पाँव और गर्भवती” और घर पर रहती थी। जैसे ही पिछले बच्चे का दूध छूटता, वह फिर से गर्भवती हो जाती थी।³⁹

अधिकांश स्त्रियों को घरेलू कर्तव्यों के अतिरिक्त कोई शिक्षा नहीं मिलती थी। वे जीवन भर पूरी तरह आश्रित रहती थीं और किसी पुरुष के – अपने पिता के या शायद अपने अभिभावक के, बाद में अपने पति के – **शासन के अधीन** रहती थीं। बच्चों, दासों और पत्नियों के लिए अधीनता ही सामान्य नियम था। इस संदर्भ और इस संस्कृति में *paterfamilias* को शासन करना था, न कि किसी की नम्रता से सेवा करनी थी, विशेष रूप से अपने ही अधीनस्थों की नहीं, जिन्हें बल्कि *paterfamilias* की सेवा करनी होती थी। अरस्तू भी यही मानता था: “पुरुष स्वभाव से स्त्री की अपेक्षा आदेश देने के लिए अधिक उपयुक्त है ... यह असमानता स्थायी है ... पुरुष का साहस आदेश देने में दिखाई देता है, स्त्री का आज्ञा मानने में।”⁴⁰

इस बात पर ध्यान दीजिए: पौलुस कोई ऐसी घरेलू संरचना नहीं बनाता जिसमें सबसे बड़ा पुरुष बाकी सब पर शासन करे, ठीक वैसे ही जैसे वह कोई ऐसी शासन-संरचना निर्धारित नहीं करता जिसमें कैसर रोमी साम्राज्य का शासक हो। वह इन परिस्थितियों को केवल संबोधित करता है और मौजूदा सामाजिक संरचनाओं के भीतर कार्य करने का प्रयास करता है, उन्हें तुरंत उलट देने की चाह किए बिना उन्हें सुधारने के मार्ग खोजते हुए। किसी भी अच्छे मिशनरी की तरह, जो आज किसी नई संस्कृति में प्रवेश करता है, पौलुस ने जहाँ संभव हुआ वहाँ स्वयं को ढाल लिया, भले ही वह इसे आवश्यक रूप से आदर्श नहीं मानता था।

सुसमाचार का सामना प्राचीन घराने से

यदि आप पौलुस के स्थान पर होते, तो आप अपनी कलीसिया के इन पदानुक्रमिक ढंग से संरचित घरानों को कैसी सलाह देते? आइए उन तीन रणनीतियों को देखें जिन्हें पौलुस इफिसुस के घरानों को उनके उस समय के संदर्भ में सलाह देते हुए अपनाता है।

पहली: पौलुस घराने के भीतर के सब संबंधों को सुसमाचार के चिह्न के अधीन रखता है। वह पत्नियों और पतियों को “मसीह के भय में” एक दूसरे से व्यवहार करने का निर्देश देता है, और हर निर्देश को ऐसे शब्दों में पिरोता है जो मसीह से संबंधित हैं: “जैसे प्रभु के”, “जैसे मसीह भी”, “मसीह”, “वैसे ही जैसे मसीह भी” और “पर मैं मसीह के विषय में कहता हूँ”। माता-पिता और बच्चों तथा स्वामियों और दासों को अपने आपसी संबंधों पर नए सिरे से विचार करने के लिए प्रेरित करने में भी वह यही दृष्टिकोण अपनाता है। ऐसा लगता है कि हर दूसरा शब्द “मसीह” या “प्रभु” है। पौलुस कुशलता से सब की – पत्नियों और पतियों, बच्चों और माता-पिता, तथा दासों और स्वामियों की – सहायता करने का प्रयास करता है कि वे दूसरों से संबंध रखने के अपने ढंग को मसीह के साथ अपने संबंध की अभिव्यक्ति के रूप में देखें।

दूसरी: पौलुस *paterfamilias* के स्वार्थ और दबंग व्यवहार की स्पष्ट रूप से निंदा करता है। प्राचीन विधि-संहिताओं में, जो घराने के भीतर की भूमिकाएँ निर्धारित करती थीं, *paterfamilias* से कहा जाता था कि वह शासन करे, और बाकी सब से कहा जाता था कि वे अधीन रहें। इन नियमों का ज़ोर अधिकतर अधीनस्थों पर होता था, जिन्हें अपने व्यवहार को नियंत्रण में रखना था। परन्तु पौलुस द्वारा सुधारी गई “संहिता” कुछ ऐसा करती है जो पहले कभी नहीं हुआ: वह इन संबंधों में से हर एक में अपना सबसे अधिक ध्यान पतियों/माता-पिता/स्वामियों पर (तीनों मामलों में एक ही पुरुष शामिल है!) देती है, ताकि वे अपना व्यवहार बदलें। यह मानते हुए कि सांस्कृतिक परिस्थितियों के कारण *paterfamilias* वैसे भी शासन करता है, वह उससे कहता है कि अब वह अपनी पत्नी के लिए अपना जीवन दे दे, अपने बच्चों को क्रोध न दिलाए और अपने दासों को धमकी न दे। उस समय यह निश्चय ही एक बिल्कुल क्रांतिकारी आह्वान था। एक ऐसी संस्कृति में, जिसमें पतियों को अपनी पत्नियों के जीवन और मृत्यु पर अधिकार था, पौलुस पतियों से कहता है कि वे अपनी शक्ति छोड़ दें और आवश्यकता हो तो मर भी जाएँ, ताकि उनकी पत्नियों का भला हो।

तीसरी: पौलुस सुसमाचार का उपयोग स्त्री, बच्चों और दासों की *paterfamilias* के प्रति अधीनता को नरम करने और नए ढंग से व्यवस्थित करने के लिए करता है। उन्हें विद्रोह के लिए बुलाए बिना वह संकेत देता है कि सुसमाचार उनकी स्थिति में किस प्रकार की अधीनता उत्पन्न कर सकता है। पत्नी के लिए इसका अर्थ, जैसा कि हमने देखा, यह है कि वह अनिच्छा से अपने पति के अधिकार के अधीन न हो, बल्कि नम्रता से उसकी सेवा करे और उसे प्रसन्न करे, जैसे वह मसीह की भी नम्रता से सेवा करना और उसे प्रसन्न करना चाहती है।

पौलुस की शिक्षा ने चमत्कार किए।

paterfamilias को कड़ी फटकार लगाकर और फिर एक पितृसत्तात्मक समाज के सबसे कमज़ोर लोगों – पत्नियों, बच्चों और दासों – की ओर प्रेम से मुड़कर, पौलुस ने ऐसा किया कि आरंभिक कलीसिया शक्तिहीनों को झुंड के झुंड आकर्षित करने लगी। दूसरी शताब्दी में मूर्तिपूजक आलोचक सेल्सस (Celsus) ने यह कहकर कलीसिया का उपहास किया: “मसीही धर्म स्त्रियों, बच्चों और दासों का धर्म है।”⁴¹

घराने के भीतर के संबंधों के विषय में पौलुस का दृष्टिकोण उस समय की संस्कृति के लिए बिल्कुल नई बात थी। वह पुराने पदानुक्रम को समाप्त नहीं करता, परन्तु उसे ईश्वरीय आदर्श के रूप में बनाए भी नहीं रखना चाहता। बल्कि वह उसकी जड़ें इस प्रकार खोखली करता है कि न केवल उसकी पूरी संरचना सुसमाचार में पिरो दी जाती है, बल्कि अंततः वह उसमें घुलकर समाप्त हो जाती है, जैसा कि हमारे समय में भी हुआ है।

परन्तु उस प्राचीन काल में कोई भी मूर्तिपूजक, जो किसी मसीही घर में जाता, यह नहीं सोचता कि पौलुस रोमी कानून को खोखला करना या सीधे-सादे समानतावादी घरेलू ढाँचे लागू करना चाहता है। छुड़ाए गए **paterfamilias** में उसे जो बात खटकती, वह थी पहला, वह असामान्य ढंग जिससे वह अपने द्वारा संचालित लोगों की प्रेम से देखभाल करता था और उनके लिए स्वयं को बलिदान करता था, और दूसरा, उसकी पत्नी, उसके बच्चों और उसके दासों का आनंद।

दृष्टिकोण 3 के विपरीत, जो यह मानता है कि पौलुस एक असीमित समानतावाद सिखाता है, यह दृष्टिकोण मानता है कि जब पौलुस पति को पत्नी का सिर कहता है, तो वह उन सांस्कृतिक मानदंडों को स्वीकार करता है जिनके अनुसार पति का पत्नी पर अधिकार होता है। इसके अलावा जब वह पति और पत्नी के संबंध की तुलना मसीह और कलीसिया के संबंध से करता है, तो इसका अर्थ भली-भाँति यह हो सकता है कि वह इस ओर संकेत करता है कि एक दूसरे के लिए “ज़िम्मेदार” है। परन्तु भले ही वह यह मानकर चलता है कि ज़िम्मेदारी **paterfamilias** की है, वह इसे किसी भी तरह ऐसी “भूमिका” या प्रतिष्ठा के रूप में निर्धारित नहीं करता जिसे पति को सब समयों और सब संस्कृतियों में अपनी पत्नी के प्रति अपनाना चाहिए। इसके विपरीत: स्त्री पर पुरुष की सांस्कृतिक शक्ति को आदर्श के रूप में प्रस्तुत करने से कोसों दूर, वह सुसमाचार के द्वारा उसकी धार कुंद करने का प्रयास करता है।

जॉन पाइपर के तर्क का खंडन

कुछ पूरकतावादी यह प्रतितर्क देते हैं कि यदि हम यह मानें कि पौलुस पति के अधिकार को स्वीकार करता है और उसे कलीसिया के साथ मसीह के संबंध से जोड़ता है, तो वह पति और पत्नी की अगुवाई-अधीनता को निश्चय ही आदर्श घोषित करता है और इस प्रकार उसे स्थायी बना देता है। पाइपर कहते हैं (और उन्होंने इस पर एक पुस्तक भी लिखी) कि छुड़ाया गया और साथ ही पदानुक्रमिक मसीही विवाह संसार की आँखों के सामने सुसमाचार प्रस्तुत करता है। वे लिखते हैं: “अपनी आज्ञाकारी, आश्रित पत्नी पर पुरुष की प्रेमपूर्ण अगुवाई मसीह और कलीसिया का एक चित्र है। यदि पुरुष अपनी अगुवाई की भूमिका खो देता है, तो यह बात फिर नहीं रहती।”⁴²

उनका तर्क तीन प्रकार से त्रुटिपूर्ण है। पहला: पौलुस घराने में दासता के विषय में भी कुछ ऐसा ही कहता है, जब वह दासों से कहता है कि वे अपने स्वामियों की आज्ञा वैसे ही मानें जैसे वे मसीह की आज्ञा मानते हैं, जो उनका प्रभु है। पाइपर के तर्क के अनुसार परमेश्वर ने स्वामी-दास संबंध को इसलिए बनाया होता कि संसार को यीशु, हमारे प्रभु, के प्रति हमारी अधीनता की “सुंदरता” दिखाए। नहीं! दोनों मामलों में पौलुस सुसमाचार को एक वास्तविक, परन्तु आवश्यक रूप से आदर्श नहीं, स्थिति पर लागू करता है।

दूसरा: किसी विवाह का पदानुक्रम नहीं, बल्कि ऐसे विवाह का छुटकारा सुसमाचार को चित्रित करता है। पौलुस इस खंड में जिस बात पर ज़ोर देता है, वह पदानुक्रम नहीं, बल्कि पुरुष द्वारा अपनी पत्नी की सेवा है, जो परस्पर अधीनता में उसके साथ चलती है और जिसके साथ वह एक घनिष्ठ संबंध रखता है। यह निश्चय ही पारस्परिकता पर आधारित विवाह में पदानुक्रमिक विवाह की अपेक्षा बेहतर ढंग से व्यक्त हो सकता है। जैसा कि दृष्टिकोण 3 के अंतर्गत बताया गया है, पौलुस *kephalē* शब्द के अपने प्रयोग को इस प्रकार स्पष्ट करता है कि वह यीशु को कलीसिया के प्रभु के रूप में नहीं, बल्कि उसके उद्धारकर्ता और पालनहार के रूप में उभारता है।

तीसरा: यदि हम यह मानें कि परमेश्वर विवाहों के द्वारा संसार को अपनी कलीसिया पर यीशु का प्रभुत्व स्पष्ट करना चाहता है, तो कोई भी पदानुक्रमिक विवाह कभी भी पर्याप्त रूप से पदानुक्रमिक नहीं हो सकता। यीशु अपनी कलीसिया का प्रभु है, परन्तु एक पति निश्चय ही अपनी पत्नी का प्रभु नहीं है।

पाइपर के तर्क की कमज़ोरियों के बावजूद मैं उनसे सहमत हूँ कि मसीही विवाह को सुसमाचार की कुछ झलक दिखानी चाहिए। एक मसीही विवाह, किसी भी मसीही समुदाय की तरह, संसार को यह दिखा सकता है कि हम यीशु के चेले हैं, इस प्रकार कि हम एक दूसरे से आत्म-बलिदान के साथ प्रेम करें, जैसे उसने हम से प्रेम किया। पारस्परिकता पर आधारित विवाह यह काम पदानुक्रमिक ढंग से संरचित विवाहों जितना ही अच्छी तरह, यदि उनसे बेहतर नहीं, कर सकते हैं। एक मसीही विवाह एक और बात को भी अच्छी तरह प्रतिबिंबित कर सकता है: वह स्थायी और घनिष्ठ बंधन जो मसीह के साथ हमारा है। पौलुस द्वारा प्रयुक्त सिर और देह की उपमा, जिसे वह "एक तन" कहता है, एक गहरे, प्रेमपूर्ण वाचा-संबंध और एक जीवित, सजीव जुड़ाव की ओर संकेत करती है। जहाँ यह कल्पना कि कोई अगुवा अपने अधीनस्थों से अलग हो जाए, कम अजीब लगती है, वहीं यह कल्पना कि कोई सिर अपनी देह से अलग कर दिया जाए, अत्यंत भयावह है।

इफिसियों 5 के विषय में हम कहाँ गलत हैं

अपनी 800 पृष्ठों की पुस्तक में गूडम विवाह में स्त्री की अधीनता के पक्ष में ज़ोरदार तर्क देते हैं, परन्तु पहली शताब्दी के विवाहों और आज के विवाहों के बीच के भारी अंतर का कभी उल्लेख नहीं करते।⁴³ यही बात केलर दंपति पर भी लागू होती है: इफिसियों 5 के अपने विस्तृत अध्ययन में वे इस पहलू पर कोई ध्यान नहीं देते और उस समय के विवाह की स्थिति की भी चर्चा नहीं करते। एक बार भी नहीं। यह एक गलती है: वे एक चौड़ी नदी के साथ एक पतले नाले जैसा व्यवहार करते हैं।

पौलुस का उद्देश्य प्राचीन घरेलू संरचना को अमर बनाना नहीं है। बल्कि वह सुसमाचार को एक अनोखी सांस्कृतिक स्थिति पर लागू करता है, जो हमारी स्थिति से बहुत भिन्न है। पौलुस मेरे संसार को संबोधित नहीं कर रहा था, जिसमें अधिकांश वयस्क स्त्रियाँ पुरुषों जितनी ही शिक्षित हैं, अपनी प्रजनन-क्षमता को नियंत्रित करती हैं, आर्थिक रूप से स्वतंत्र हैं, और जहाँ इसकी कोई सामाजिक आवश्यकता नहीं है कि कोई पुरुष उनके ऊपर हो। यह सब एक अलग प्रकार के विवाह को संभव बनाता है।

अगला प्रश्न यह है: अब जब हमें ज्ञात है कि उनकी स्थिति और हमारी स्थिति के बीच एक बहुत चौड़ी नदी है, तो हम उस पर एक "पुल" कैसे बना सकते हैं, ताकि पाठ में निहित सिद्धांतों को अपने लिए लागू करने योग्य बना सकें? या दूसरे शब्दों में: पौलुस हमारे समाज के आज के उन विवाहों से क्या कहता, जो अब कठोर रूप से पदानुक्रमिक नहीं, बल्कि समानतावादी हैं? मेरा सुझाव यह है:

वह हमसे कहता कि हम अपने विवाह में मसीह को केंद्र में रखें। एक दूसरे को "देखने", एक दूसरे से व्यवहार करने, मिलकर काम करने और एक दूसरे का आदर करने का हमारा ढंग मसीह के साथ हमारे सर्वोपरि संबंध से आकार लेना चाहिए। हमें एक दूसरे के अधीन रहना चाहिए, अपनी स्वतंत्रता की ज़िद और स्वार्थ को त्याग देना चाहिए और एक घनिष्ठ "एक-तन" संबंध के लिए प्रयास करना चाहिए, जैसा कि पतन से पहले अदन की वाटिका में जिया गया था। यदि हम यह मानें कि पुरुष औसतन अधिक स्वतंत्र और इसलिए अधिक आत्म-केंद्रित होते हैं, जबकि स्त्रियाँ औसतन अधिक संबंध-केंद्रित और इसलिए पुरुषों की अपेक्षा दूसरों की ओर अधिक उन्मुख होती हैं, तो मेरे जैसे पतियों को निश्चय ही कलीसिया के प्रति मसीह के उस आत्म-बलिदानी प्रेम पर विशेष रूप से मनन करना चाहिए जो उसकी दुल्हन के उज्ज्वल रूप से खिल उठने की ओर ले जाता है।

अब जब उस समय के संदर्भ और हमारे आज के संदर्भ के बीच का स्पष्ट अंतर मुझे ज्ञात हो गया है, तो मैं बस कल्पना ही नहीं कर सकता कि पौलुस किसी औसत आधुनिक दंपति से, जिसमें पति और पत्नी उम्र में एक-दूसरे के अधिक निकट हैं, दोनों समान रूप से अच्छी तरह शिक्षित हैं, संभवतः दोनों काम करते हैं और अपने बच्चों के पालन-पोषण में लगे हैं, यह कहता: "बहुत अच्छा कि तुम एक साझेदारी में बंधे हो। ऐसे ही चलते रहो! परन्तु मैं इस बात पर ज़ोर देना चाहता हूँ कि पुरुष अगुवाई की भूमिका सँभाले और स्त्री उसके अधीन रहे।" वह ऐसा कैसे कर सकता था, जबकि वह सिखाता है कि विवाह के लिए सृष्टि का आदर्श एक-तन-एकता है, शब्द के पूरे अर्थ में एक सच्ची साझेदारी, जैसी आदम और हव्वा के मूल विवाह में थी?

यह केवल मेरी राय नहीं है। यह एक व्यापक रूप से फैला हुआ दृष्टिकोण है, बल्कि बहुसंख्यक मसीहियों का दृष्टिकोण है: सब काथलिकों के लिए बाध्यकारी अपने प्रेरितिक पत्र *Mulieris Dignitatem* में पोप जॉन पॉल द्वितीय (Johannes Paul II.) कहते हैं कि अपनी पत्नी पर पति का अधिकार किसी ऐसी बात को प्रतिबिंबित करता है जो "पुरानी" है; यह पत्र एक ऐसी सोच की बात करता है जो "उस समय के रीति-रिवाजों और धार्मिक परंपरा में गहराई से जड़ पकड़े हुए" थी। इसके विपरीत "नई" और "सुसमाचार की एक नवीनता" यह है कि "अधीनता एकतरफ़ा नहीं, बल्कि पारस्परिक है"।⁴⁴ यदि सिद्धांत के मामले में सबसे कठोर संप्रदायों में से एक अपनी शिक्षा में यह सुधार कर सकता है, तो हम बाकी लोगों को इस पर ध्यान देना चाहिए।

निस्संदेह संसार में आज भी ऐसी संस्कृतियाँ हैं जिनमें पुरुषों का बोलबाला है। उनके लिए पौलुस की शिक्षा मानो नाप से सिली हुई लगती है। पितृसत्तात्मक समाजों में पतियों के पास सामान्यतः स्त्रियों की अपेक्षा कहीं अधिक सामाजिक, बौद्धिक, राजनीतिक और आर्थिक शक्ति होती है। अब पुरुष को इस शक्ति का उपयोग निःस्वार्थ भाव से अपनी पत्नी की भलाई के लिए करना चाहिए, जैसे मसीह अपनी श्रेष्ठ शक्ति का उपयोग कलीसिया की भलाई के लिए करता है। परन्तु जब पितृसत्तात्मक संस्कृतियों में हज़ारों पति पर्याप्त लंबे समय तक ऐसा करते हैं, तो स्त्रियाँ और पत्नियाँ अपनी सामाजिक और बौद्धिक शक्ति बढ़ाएँगी और अपने पतियों की बराबरी की साथी बनने के लिए बेहतर ढंग से तैयार होंगी। मेरे अध्ययन मुझे ठीक इसी निष्कर्ष तक ले गए हैं। दृष्टिकोण 4 – छुड़ाया गया *paterfamilias* – को उन संस्कृतियों पर लागू करना, जिनमें विवाह कठोर रूप से पदानुक्रमिक हैं, अंततः इस बात की ओर ले जाएगा कि ये संस्कृतियाँ बदलें और दृष्टिकोण 3 के अनुसार विवाह को बढ़ावा दें, जैसा कि उन देशों में पहले ही हो चुका है जो लंबे समय से मसीहियत से प्रभावित हैं।

यदि हमने विवाह पर बाइबल के पाठों के अपने अध्ययन को, जैसे वे पुराने और नए नियम में मिलते हैं, विस्तृत किया होता, तो पारस्परिकता पर आधारित विवाह के प्रति परमेश्वर की रुचि आरंभ से ही स्पष्ट हो जाती।

अपने पतियों को दिशा देने वाली पत्नियाँ

यदि हम ध्यान दें कि पुराने नियम में उल्लिखित सब विवाह एक पितृसत्तात्मक परिवेश में हुए थे, तो यह माना जा सकता है कि सांस्कृतिक धारणा यह थी कि पत्नियाँ अपने पतियों के अधीन हैं। इसलिए यह उल्लेखनीय है कि – परमेश्वर की इस पूर्वघोषणा को छोड़कर कि “आदम हव्वा पर प्रभुता करेगा” – न तो मूसा की व्यवस्था में और न ही भविष्यद्वक्ताओं के वचनों में कोई ऐसी आज्ञा है जो पत्नियों को अपने पतियों के अधीन रहने के लिए कहती हो।

पुराने नियम में दंपतियों की शक्ति-गतिशीलता की जो छोटी-छोटी झलकियाँ हमारे पास हैं, उन्हें देखने पर बार-बार यह पता चलता है कि पत्नियाँ अपने पतियों को दिशा देती हैं। अपने जीवन के बहुत से चौराहों पर मैंने परमेश्वर से बुद्धि माँगी है और यह सुनने के लिए अपना कान स्वर्ग की ओर लगाया है कि वह मुझसे क्या कहेगा। अक्सर मैंने उसे मुझसे वही कहते सुना है जो उसने एक बार अब्राहम से कहा था: “जो कुछ [तेरी पत्नी] तुझ से कहे, उसकी बात मान!”⁴⁵ कितनी उत्तम सलाह! मैं जानता हूँ कि मैं किस विषय में बात कर रहा हूँ: पत्नियाँ बहुत बार परमेश्वर से पहले सुनती हैं।

क्या शिमशोन की माता के साथ ठीक यही नहीं हुआ? एक ऐसी संस्कृति में, जिसमें किसी पुरुष के लिए किसी स्त्री से सीधे बात करना अनुचित था, एक स्वर्गदूत एक पुरुष का रूप धारण करता है और एक बाँझ स्त्री को घोषणा करता है कि उसके एक आत्मा से अभिषिक्त बच्चा होगा। बाद में स्त्री अपने पति को बुलाती है: “तब वह स्त्री फुर्ती से दौड़कर अपने पति को बताने गई और उससे कहा: देख, जो पुरुष उस दिन मेरे पास आया था, उसने मुझे दर्शन दिया है!” आगे के शब्दों पर ध्यान से गौर कीजिए: “[वह] उठकर अपनी पत्नी के पीछे चला।” शायद इस बात से बहुत प्रसन्न न होकर कि एक अजनबी पितृसत्तात्मक मानदंडों को तोड़ रहा है, वह पूछता है: “क्या तू वही पुरुष है जिसने मेरी पत्नी से बातें की थीं?”⁴⁶ इसके अलावा यह कहानी एक और भी अधिक महत्वपूर्ण जन्म की ओर संकेत करती है। एक हजार वर्ष से भी अधिक बाद एक स्वर्गदूत सबसे पहले मरियम के पास आता है, ताकि उसे यही संदेश सुनाए।⁴⁷ बाद में ही वह उसके पति को सूचित करता है।⁴⁸ दोनों दृश्यों में स्त्री परमेश्वर से पहले जानती है कि क्या होने वाला है, जबकि पुरुष को बाद में ही नवीनतम जानकारी दी जाती है – अर्थात् अपनी पत्नी के ज्ञान के स्तर तक लाया जाता है। यदि “सृष्टि की व्यवस्था” जैसी कोई चीज़ होती (जो नहीं है), तो ऐसा लगता है कि परमेश्वर उसका पालन नहीं करता।

फिर शूनेम की वह स्त्री है, जो पहल करती है और भविष्यद्वक्ता एलीशा को अपने घर में ठहराती है। वह अपने पति से कहती है: “देख, मैं जानती हूँ कि यह जो बार-बार हमारे पास से होकर जाता है, वह परमेश्वर का एक पवित्र जन है। आओ, हम छत पर एक छोटी-सी ईंट की कोठरी बनाएँ और उसमें उसके लिए एक खाट, एक मेज़, एक कुर्सी और एक दीवट रखें, ताकि जब वह हमारे पास आए तो वहीं ठहरे!”⁴⁹ एक बार फिर पति तुरंत अपनी पत्नी की बात मानता है और इस विषय में सहज रूप से उसकी आत्मिक परख पर भरोसा करता है।

यहाँ एक छोटी-सी टिप्पणी उचित है: इस व्यापक व्याख्या के बावजूद कि “पति पत्नी का *kephale* है”, जिसका अर्थ लगभग यह लिया जाता है कि “पति को परिवार का आत्मिक मुखिया होना चाहिए”, मुझे खेद के साथ आपको बताना पड़ता है कि इस धारणा का कोई बाइबलीय आधार नहीं है। शायद आपको अपने वे नोट्स फेंक देने चाहिए जिनमें लिखा है कि पुरुष (स्त्री नहीं) प्रार्थना में अगुवाई करे, पारिवारिक उपासना के लिए बुलाए या यह निर्णय ले कि दंपति या परिवार किस कलीसिया में जाएगा। अपने परिवार की आत्मिक भलाई के लिए किसी पति या पिता की निर्णायक पहल को कम आँके बिना, फिर भी यह बेहतर है कि दोनों, पति और पत्नी, – एक टीम के रूप में और व्यक्तिगत रूप से – अपनी पूरी शक्ति से परमेश्वर को खोजें, एक कलीसिया चुनें और वहाँ सदस्य बनें,

और परिवार के अन्य सदस्यों की आत्मिक उन्नति के लिए प्रयास करें। इस शिक्षा के उत्तर में कि पति को बाकी परिवार का पास्टर होना चाहिए, मेरा सुझाव है कि पति और पत्नी मिलकर परिवार की पास्टरीय अगुवाई-टीम बनें।

एक और स्त्री, जो पुरुष-प्रधान संस्कृति में रहते हुए भी पितृसत्तात्मक मानदंडों का विरोध करती हुई प्रतीत होती है, अबीगैल है। उसका अत्यंत धनी पति नाबाल “अपने कामों में कठोर और दुष्ट” है।⁵⁰ जब दाऊद और उसके सशस्त्र साथी, भागते हुए और भूखे, नाबाल से कुछ खाने को माँगते हैं, तो वह भावहीनता से उनका उपहास करता है और उनकी विनती ठुकरा देता है। दाऊद, गहराई से आहत और क्रोधित होकर, नाबाल और उसकी भूमि पर रहने वाले सब पुरुषों को मार डालने की योजना बनाता है – मानना पड़ेगा, यह कोई विशेष रूप से मसीही प्रतिक्रिया नहीं है।

अबीगैल रक्तपात को रोकती है, इस प्रकार कि वह अपने पति की आज्ञा नहीं मानती और दाऊद के हत्या के इरादों का समाचार उसे नहीं बताती। वह अपने गधे पर भोजन-सामग्री लादती है, दाऊद के पास जाती है और चतुराई से उसके आहत अंह को सँभालती है, यह कहते हुए: “मेरा प्रभु उस बलियाल के आदमी नाबाल पर ध्यान न दे; क्योंकि जैसा उसका नाम है वैसा ही वह है: उसका नाम ‘मूर्ख’ है, और मूर्खता उसमें है।”⁵¹ जब वह इस बात पर ज़ोर देती है कि उसका पति कितना भयानक व्यक्ति है, तब भी वह दाऊद के अच्छे पक्ष से अपील करती है और उससे दया की भीख माँगती है। इसके बाद दाऊद अपने हथियार डाल देने का निर्णय लेता है।

जब अबीगैल घर लौटती है और नाबाल को बताती है कि उसने उसके आदेश को रद्द कर दिया था और दाऊद ने उसके प्राण बख्श दिए हैं, तो उसका हृदय जवाब दे देता है और दस दिन बाद वह मर जाता है। जब दाऊद कुछ पुरुषों को उसे अपनी तीसरी पत्नी के रूप में लाने के लिए भेजता है, तो वह झुककर कहती है: “देख, तेरी दासी यहाँ है, कि सेवा करे और मेरे प्रभु के सेवकों के पाँव धोए!”

यह सचमुच एक अजीब कहानी है, परन्तु ध्यान दीजिए कि इसमें कुछ भी इस ओर संकेत नहीं करता कि परमेश्वर इस बात को उचित ठहराता है कि वह नाबाल और दाऊद दोनों को अपना “प्रभु” कहती है। यद्यपि दोनों पुरुष बिना झिझक इस उपाधि को स्वीकार करते हैं, फिर भी यह स्पष्ट हो जाता है कि यहाँ एक ऐसी स्त्री की बात है जिसने स्वयं को ढालकर पितृसत्ता में जीवित रहना सीखा है। कभी-कभी इसका अर्थ “पुरुष-अधिकार” का विरोध करना भी होता है – कुछ ऐसा, जिसकी इस पाठ-खंड में प्रशंसा के साथ चर्चा की गई है। यदि कुछ है, तो यहाँ हमें एक ऐसी स्त्री का उदाहरण मिलता है जो किसी अन्य, अधिक न्यायपूर्ण संस्कृति में संभवतः एक सफल अगुवा होती। दाऊद न केवल उसकी सुंदरता से, बल्कि उसकी रणनीतिक क्षमताओं और उसकी मन जीत लेने वाली कूटनीति से भी प्रभावित होता है, जिनके द्वारा वह अनावश्यक रक्तपात को तुरंत रोक देती है।

निष्कर्ष: पुराने नियम की कहानियाँ इस धारणा का समर्थन नहीं करतीं कि अपनी पत्नी पर पति का अधिकार परमेश्वर द्वारा चाहा गया मानदंड है।

1 कुरिन्थियों 7 का पारस्परिकतावादी विवाह

सुलैमान का श्रेष्ठगीत पवित्र शास्त्र का सबसे लंबा खंड है जो दो लोगों के बीच एक प्रेमपूर्ण, रोमानी और यौन बंधन की आंतरिक गतिशीलता पर विचार करता है। उसमें पुरुष और स्त्री के बीच अधिकार-अधीनता के संबंध का कोई भी संकेत बिल्कुल नहीं है। रोमानी प्रेम में और यौन संबंध में दोनों पहल करते हैं, दोनों झुकते हैं, दोनों देते हैं और दोनों पाते हैं। यह काव्यात्मक पुस्तक न केवल उस निर्वस्त्र आनंद की याद दिलाती है जो पतन से पहले आदम और हव्वा ने बराबर के रूप में एक-दूसरे के साथ पाया था; नए नियम में इसकी एक समानांतर भी है।

1 कुरिन्थियों 7 पौलुस की पत्रियों में विवाह पर विचार करने वाला अब तक का सबसे लंबा खंड है। फिर भी मसीही विवाह में यौन संबंध, सेवा और अलगाव पर अपने दिशानिर्देशों में पौलुस इस बात का ज़रा-सा भी संकेत नहीं देता कि मसीही विवाह बराबर लोगों के बीच पारस्परिकता पर आधारित और प्रेमपूर्ण साझेदारी के अतिरिक्त कुछ और हो सकता है। वास्तव में यह बाइबल का एकमात्र अध्याय है जो विवाह में अधिकार के प्रश्न पर स्पष्ट रूप से विचार करता है। संयोग से यह अधिकार स्त्री और पुरुष दोनों को मिलता है।

मैं कुछ उद्धरण⁵² चुनना चाहता हूँ, जो उस परस्पर प्रेम और पारस्परिक अधिकार पर ज़ोर देते हैं जिसे परमेश्वर ने हमारे विवाहों के लिए ठहराया है:

[ह]र पुरुष की अपनी पत्नी और हर स्त्री का अपना पति [हो]। (पद 2)।

पति अपनी पत्नी को वह स्नेह दे जो उस पर उसका हक़ है, और वैसे ही पत्नी भी अपने पति को। (पद 3)।

पत्नी को अपनी देह पर अधिकार नहीं, बल्कि पति को है; वैसे ही पति को भी अपनी देह पर अधिकार नहीं, बल्कि पत्नी को है। (पद 4)।

एक दूसरे से अलग न रहो, सिवाय इसके कि आपसी सहमति से कुछ समय के लिए (पद 5)।

पत्नी अपने पति से अलग न हो। ... और पति अपनी पत्नी को तलाक़ न दे (पद 10-11)।

यदि किसी भाई की पत्नी अविश्वासी हो, और वह उसके साथ रहने को राज़ी हो, तो वह उसे न छोड़े; और जिस स्त्री का पति अविश्वासी हो, और वह उसके साथ रहने को राज़ी हो, तो वह उसे न छोड़े (पद 12-13)।

[अ]विश्वासी पति पत्नी के कारण पवित्र ठहरता है, और अविश्वासी पत्नी पति के कारण पवित्र ठहरती है (पद 14)।

परन्तु यदि अविश्वासी अलग होना चाहे, तो अलग हो जाए! ऐसी स्थिति में भाई या बहन बंधन में नहीं है (पद 15)।

क्योंकि हे स्त्री, तू क्या जानती है कि तू अपने पति का उद्धार करा ले? या हे पुरुष, तू क्या जानता है कि तू अपनी पत्नी का उद्धार करा ले? (पद 16)।

परन्तु यदि तू [एक पुरुष] विवाह भी करे, तो पाप नहीं करता; और यदि कुँवारी विवाह करे, तो वह पाप नहीं करती (पद 28)।

अविवाहित पुरुष प्रभु की बातों की चिन्ता में रहता है ... अविवाहित स्त्री प्रभु की बातों की चिन्ता में रहती है (पद 32, 34b)।

[प]रन्तु विवाहित पुरुष संसार की बातों की चिन्ता में रहता है ... परन्तु विवाहित स्त्री संसार की बातों की चिन्ता में रहती है (पद 33-34a)।

1 कुरिन्थियों 7 में हमें विवाह के लिए परमेश्वर की योजना के बारे में क्या पता चलता है? “पौलुस के उत्तर ... पहली शताब्दी के पाठकों को असाधारण लगे होंगे,” रिचर्ड हेज़ (Richard Hays) कहते हैं। “पति-पत्नी न तो एक-दूसरे के साथ पदानुक्रमिक संबंध में हैं, और न ही वे ऐसी स्वायत्त इकाइयाँ हैं जिनमें हर एक वही करे जो उसे अच्छा लगे। इसके स्थान पर विवाह परस्पर अधीनता का संबंध है, जिसमें हर साथी दूसरे का है।”⁵³

जब मैंने पहली बार लोगों को परामर्श दिया कि जीवन-साथी कैसे चुनें, तो मैंने सुझाव दिया कि निर्णय परमेश्वर पर छोड़ दें। फिर एक दिन जब मैंने 1 कुरिन्थियों 7 पढ़ा, तो मुझे स्पष्ट हुआ कि मैंने अभी-अभी नए नियम में इस विषय पर एकमात्र स्पष्ट शिक्षा पढ़ी है: “[वह] जिससे चाहे विवाह करने के लिए स्वतंत्र है; परन्तु केवल प्रभु में!”

(पद 39)। इससे क्या शिक्षा मिलती है? हमें चुनना होगा, और वह भी सोच-समझकर। अब जब मैंने 1 कुरिन्थियों 7 को फिर से पढ़ा, तो मुझे वैसा ही एक “अह”-अनुभव हुआ: पूरे नए नियम में एकमात्र पद, जो इस बारे में बात करता है कि दंपतियों को महत्वपूर्ण निर्णय कैसे लेने चाहिए – उदाहरण के लिए कब उन्हें यौन संबंध रखना है या मिलकर परमेश्वर को खोजना है –, यह है: “एक दूसरे से अलग न रहो, सिवाय इसके कि आपसी सहमति से” (पद 5)। इससे क्या शिक्षा मिलती है? यदि कोई दंपति इस बात का ध्यान रखे कि वे बराबरी के साथियों के रूप में मिलकर निर्णय लें, तो पति को न आदेश देने पड़ते हैं और न निर्णायक निर्णय लेने पड़ते हैं।

निष्कर्ष: 1 कुरिन्थियों 7 एकमात्र अध्याय है जो अपनी पत्नी पर पुरुष के अधिकार की स्पष्ट रूप से बात करता है – परन्तु वह अपने पति पर पत्नी के अधिकार की भी बात करता है। विवाहों में वह लिंगों की समानता को, और निर्णयों के आधार के रूप में परस्पर अधीनता और आपसी सहमति को बढ़ावा देता है।

पवित्र आत्मा द्वारा प्रमाणित पवित्र शास्त्र की एकता को देखते हुए 1 कुरिन्थियों 7 इफिसियों 5 की हमारी व्याख्या को निर्धारित कर सकता है और करना चाहिए। इसलिए यह अजीब है कि अधिकांश प्रसिद्ध पूरकतावादी लेखक 1 कुरिन्थियों 7 का या तो केवल संक्षेप में उल्लेख करते हैं, और अपनी व्याख्या के साथ उसके वास्तविक विरोध को अनदेखा कर देते हैं⁵⁴, या – जो अधिक बार होता है – पाठ को बस अनदेखा कर देते हैं।⁵⁵

तो फिर कौन-सा दृष्टिकोण मान्य है?

इफिसियों 5 की व्याख्या पर इस अध्याय के अंत में मैं इस प्रश्न पर विचार करना चाहता हूँ कि चार दृष्टिकोणों में से किसे हमारे विवाहों और कलीसियाओं में प्राथमिकता मिलनी चाहिए।

मेरा आग्रह है कि हम दृष्टिकोण 1 (निर्णयकर्ता के रूप में पति) को अस्वीकार करें और उसे वही कहें जो वह है: एक दमनकारी धर्मविज्ञान।

दृष्टिकोण 2 (निर्णायक मत देने वाले के रूप में पति) जूली के और मेरे विवाह में बहुत वर्षों तक एक पड़ाव के रूप में काम आया, जिसके लिए मैं आभारी हूँ। परन्तु इससे जुड़ी समस्याओं का विश्लेषण, दृष्टिकोण 3 और 4 की व्याख्यात्मक श्रेष्ठता, और विवाह के विषय पर बाइबल का एक अधिक व्यापक पठन इस बात की ओर संकेत करते हैं कि हमें संभवतः इस दृष्टिकोण को भी छोड़ देना चाहिए।

तो बचे हुए दोनों दृष्टिकोणों में से हम किसे चुनें?

शायद हमें चुनने की आवश्यकता ही नहीं है।

दृष्टिकोण 3 (अपनी बराबरी की साथी के सेवक के रूप में पति) पारस्परिकता पर आधारित विवाह का समर्थन करता है, जबकि दृष्टिकोण 4 (छुड़ाए गए *paterfamilias* के रूप में पति) ऐसे विवाह पर कोई आपत्ति नहीं करता, बल्कि उन संस्कृतियों में विवाहों और कलीसियाओं के लिए दिशानिर्देश प्रदान करता है जो अब भी प्रबल रूप से पितृसत्तात्मक हैं।

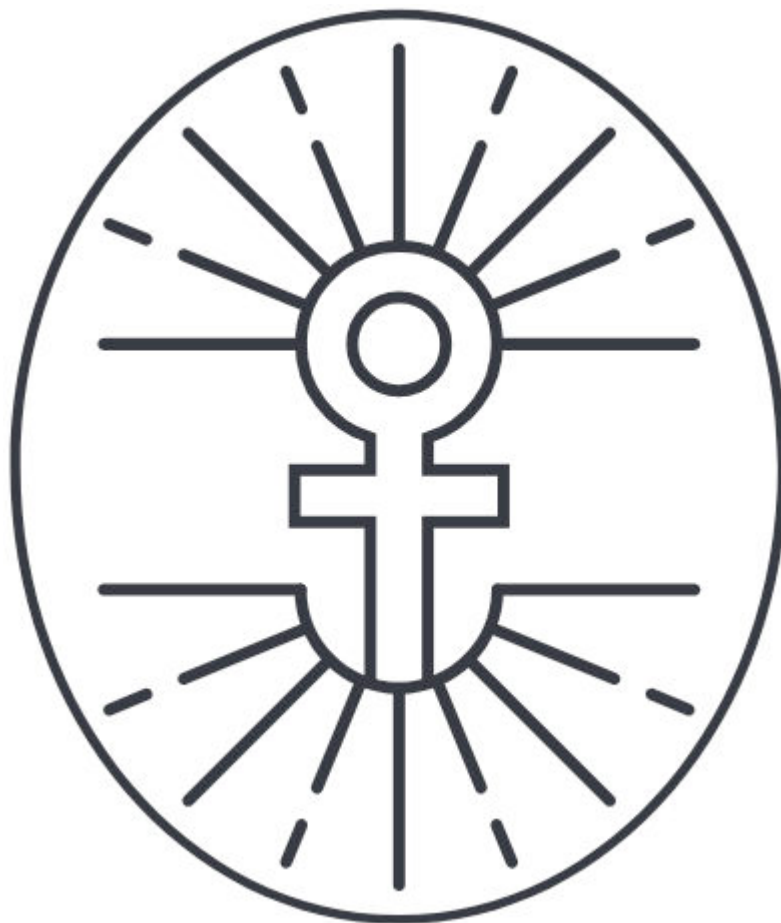
दूसरे शब्दों में: दृष्टिकोण 4 शायद हमें इस पाठ को सबसे अच्छी तरह उस रूप में समझने में सहायता करता है जैसे मूल पाठकों ने संभवतः उसे समझा था। परन्तु दृष्टिकोण 3, विशेष रूप से हम में से उन लोगों के लिए जो अधिक समानतावादी संस्कृतियों में रहते हैं, इफिसियों 5 को लागू करने का सही ढंग है।

इस प्रकार किसी दंपति के लिए परमेश्वर की बुद्धिमान सलाह यह है कि वे अपने “एक-तन” जुड़ाव को पहचानें, जैसा कि वह अदन की वाटिका के प्रेम-संबंध में व्यक्त होता है। इसके अलावा उन्हें इस एकता को पूर्ण

पारस्परिक समर्पण और सेवा-भाव के द्वारा, तथा – निर्णयों में – दोनों ओर से सोच-विचार और सहमति के द्वारा दृढ़ करना चाहिए। इस मार्ग पर दो तुलनाएँ हमें प्रेरित कर सकती हैं: अपनी कलीसिया के प्रति मसीह का आत्म-बलिदानी प्रेम, और हर व्यक्ति द्वारा अपनी देह की देखभाल।

स्त्री-पुरुष की वास्तविक समानता के परमेश्वर के अभिप्राय के विषय में बचे हुए संदेहों से हम कैसे निपटें? आगे विवाह में (और कलीसिया और समाज में भी) पितृसत्तात्मक सोच को छोड़ने के शायद सबसे महत्वपूर्ण कारण पर विचार किया गया है।

9



वह परमेश्वर जो स्वयं को परिस्थिति के अनुसार ढालता है

“क्या [हम पति] अपनी पत्नियों पर उस अधिकार को थामे रहने का प्रयास करेंगे जो कभी हमें अपने आस-पास की संस्कृति ने दिया था, परन्तु जो आज अधिकांशतः हमारे पास रहा ही नहीं? या हम खुशी से सत्ता और उस पर दावे को छोड़ देंगे, अपनी पत्नियों के साथ बराबरी का व्यवहार करेंगे और बदले में एक अधिक घनिष्ठ वैवाहिक संबंध पाएँगे?”

पीटर डेविड्स (Peter Davids)⁵⁶

गेट्स फ़ाउंडेशन ने हाल ही में एक बड़े पैमाने के अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन को वित्तपोषित किया, जिससे पता चला कि मीडिया में स्त्रियों का प्रतिनिधित्व बहुत कम है। “उदाहरण के लिए, 2019 में यूनाइटेड किंगडम में विश्लेषित ऑनलाइन समाचारों में से केवल 29 % में स्त्रियों को उद्धृत किया गया। भारत में तो यह केवल 14 % था।”⁵⁷

समाज में स्त्री की स्थिति सुधारने में जो भी अद्भुत प्रगति हुई है, उसके बावजूद हम आज भी पुरुषों की तुलना में स्त्रियों को “देखने” और “सुनने” के लिए बहुत कम तत्पर रहते हैं।

तो पिछली सहस्राब्दियों में, जब पितृसत्ता को कोई चुनौती नहीं थी, सामाजिक परिस्थितियों ने सार्वजनिक पदों तक पहुँचने की स्त्रियों की क्षमता में कितनी अधिक बाधा डाली होगी? पुरातत्वविद् इयन मॉरिस (Ian Morris) समझाते हैं कि प्राचीन एथेंस में स्त्रियों के अस्तित्व के भी इतने कम प्रमाण क्यों मिलते हैं: “स्त्रियाँ और दास अदृश्य रहते हैं”, क्योंकि वहाँ एक “सर्वव्यापी पुरुष नागरिक-संस्कृति” थी, जिसमें पुरुष “न केवल स्त्रियों का दमन करते थे, बल्कि उन स्थानों को भी नियंत्रित करते थे जिनमें स्त्रियाँ रहती थीं”। इसके कारण वे उस समय की संस्कृति में व्यावहारिक रूप से अदृश्य थीं, ठीक वैसे ही जैसे आज के पुरातात्विक अवशेषों में।⁵⁸

व्यापक यूनानी-रोमी जगत में, जिसमें आरंभिक कलीसिया फैली, स्त्रियों की स्थिति बहुत बेहतर नहीं थी। कुछ दुर्लभ अपवादों को छोड़कर,⁵⁹ प्रतिष्ठित स्त्रियाँ सार्वजनिक अगुवाई की भूमिकाओं की आकांक्षा नहीं रखती थीं। उन्हें अपना सम्मान घर के काम और बच्चों के पालन-पोषण में मिलता था। यूनानी नाटकों में सबसे आम स्त्री पात्र दासियाँ और वेश्याएँ थीं, क्योंकि ये नाटक “जीवन की कहानियाँ” सुनाते थे। नगर की प्रतिष्ठित स्त्रियों और अविवाहित युवतियों से यह अपेक्षा की जाती थी कि वे घर पर रहें और सार्वजनिक रूप से दिखाई न दें। इसलिए यह आश्चर्य की बात नहीं कि बहुत कम स्त्रियाँ “अगुवाई की भूमिका” निभाती थीं। आखिरकार सार्वजनिक जीवन में कोई भूमिका निभाने और यह सिद्ध करने के लिए कि उसमें अगुवाई के गुण हैं, किसी व्यक्ति को कुछ शिक्षा प्राप्त करनी पड़ती है और सार्वजनिक जीवन में आगे आना पड़ता है। चूँकि स्त्रियाँ छिपकर रहती थीं, इसलिए शिक्षा देने और अगुवाई करने के परमेश्वर-प्रदत्त वरदान वाली बहुत कम स्त्रियों को कभी यह अवसर मिला कि उनके ये वरदान पहचाने जाएँ, विकसित हों और सार्वजनिक रूप से काम में लाए जाएँ।⁶⁰

नए नियम में पुरुष अगुवों की पत्नियों का उल्लेख इतना कम क्यों होता है? मसीही दंपतियों की समानता, साझेदारी और साझी प्रतिष्ठा पर जो आधुनिक ज़ोर है, वह मसीही कलीसिया के आरंभिक काल में लगभग था ही नहीं, जब – कलीसिया में भी – घर-गृहस्थी और बच्चों के पालन-पोषण के काम पत्नियों को सौंपे जाते थे।

इसी प्रकार हम यह भी पूछ सकते हैं कि बाइबल में पुरुषों की तुलना में स्त्री पात्र इतने कम क्यों हैं। कुछ आलोचक, जो बाइबल की ईश्वरीय प्रेरणा को नकारते हैं, आज यह तर्क देते हैं कि इससे सिद्ध होता है कि यह पुस्तक केवल एक पितृसत्तात्मक संस्कृति की उपज है। कुछ पूरकतावादी कहते हैं कि यह परमेश्वर का उन अनोखी, विशिष्ट भूमिकाओं को उभारने का तरीका है जिन्हें परमेश्वर के राज्य में केवल पुरुषों को निभाना है। परन्तु बाइबल के ईश्वरीय अधिकार और उन अनेक ऐतिहासिक परिस्थितियों, दोनों को समझने का एक बेहतर तरीका, जिनसे वह संबंध रखती है, यह कहना है कि परमेश्वर ने अपने प्रकाशन को विशेष परिस्थितियों में रहने वाले लोगों के अनुसार ढाला, बिना इसके कि वह इन परिस्थितियों को अपने-आप आदर्श ठहरा दे। यदि हम व्याख्या के इस निर्णायक सिद्धांत को अनदेखा करते हैं, तो हम बिना सोचे-समझे इस अवलोकन से कि बाइबल के समय में स्त्रियाँ अनेक प्रकार से पुरुषों के अधीन थीं, यह निष्कर्ष निकाल लेते हैं कि परमेश्वर की सार्वभौमिक योजना के अंश के रूप में स्त्रियों को हर स्थान पर और हर समय पुरुषों के अधीन रहना चाहिए।

परमेश्वर का परिस्थिति के अनुसार ढलना – सही समझ

इतिहास के अंत में परमेश्वर अंततः एक आदर्श समाज पर राज्य करेगा। परन्तु पतन के बाद से उसने यह चुना है कि वह टूटे-बिखरे समाज के भीतर ही छुटकारा देने वाला कार्य करे, बजाय इसके कि वह उसका न्याय सीधे वैसे ही कर दे जैसे कभी जल-प्रलय के द्वारा किया था। फ़िलहाल परमेश्वर का छुटकारा इस प्रकार बरसता है कि

“पवित्र आत्मा का जीवित जल [मौजूदा] सामाजिक भू-दृश्य पर बहता है और एक घुमावदार नदी की तरह उन आकृतियों के अनुसार ढल जाता है जिनसे उसका सामना होता है। परन्तु ऐसा करते हुए वह, जल की न रुकने वाली धारा की तरह, भू-दृश्य को नया आकार देता है और अंततः टेढ़े मार्गों को सीधा कर देता है।”⁶¹

वे थोड़े-से बाइबल-स्थल, जिनमें नए नियम के लेखक उस समय की संस्कृति की पितृसत्ता से सहमत होते प्रतीत होते हैं, वास्तव में परमेश्वर के परिस्थिति के अनुसार ढलने के उदाहरण हैं। उसके पास जो है, वह उसी के साथ काम करता है, और प्रेरित उसके उदाहरण का अनुसरण करते हैं – वे परमेश्वर के राज्य का बीज ऐसी भूमि में बोते हैं जो अभी पत्थरों और खरपतवार से भरी है। इस समय हम युगों के आपस में मिलने के काल में जी रहे हैं। परमेश्वर का राज्य एक पतित संसार के बीच यहाँ उपस्थित है, जो पतित सामाजिक व्यवस्थाओं से भरा हुआ है। एक दिन यह राज्य इन व्यवस्थाओं को पूरी तरह हटा देगा, परन्तु फ़िलहाल वह उन्हीं में अपनी जड़ें जमाता है और उनमें से कुछ नया उत्पन्न करता है।

पूरकतावादी जॉन मैकआर्थर (John MacArthur) तर्क देते हैं कि चूँकि पवित्र शास्त्र केवल पुरुषों ने लिखा, इसलिए यह इस बात का प्रमाण है कि परमेश्वर ने केवल पुरुषों को ही परमेश्वर का वचन सिखाने के लिए ठहराया है। ऐसा करते हुए वे स्पष्ट रूप से उन धर्मविज्ञानियों को अनदेखा करते हैं जो इब्रानियों की पत्नी का प्रिस्किल्ला (Priscilla) द्वारा (अक्विला को साथ लेकर) लिखा जाना संभव मानते हैं। परन्तु सबसे बढ़कर वे यह अनदेखा करते हैं कि प्राचीन काल में **शायद ही किसी स्त्री को लिखने की शिक्षा मिली थी** – यह तथ्य कि बाइबल की पुस्तकें केवल पुरुषों ने लिखीं (या कम से कम मुख्य रूप से पुरुषों ने, यदि प्रिस्किल्ला ने क़लम उठाई थी), इस बात का प्रमाण है कि परमेश्वर उसके साथ काम करता है जो उपलब्ध है, भले ही वह प्रतिज्ञा करता है कि एक दिन वह ऐसा **शालोम (Shalom)** रचेगा जिसमें सब पुरुष और **स्त्रियाँ** पढ़-लिख सकेंगे।

पत्नियों की अधीनता के विषय में और भी

प्राचीन काल में स्त्रियों की सामाजिक स्थिति आज की तुलना में कहीं अधिक बुरी थी (यद्यपि हमें भी अभी लंबा मार्ग तय करना है): पुरुषों को स्त्रियों पर प्राथमिकता दी जाती थी, सत्ता और सार्वजनिक पद उन्हीं के पास थे; लोग उस पर ध्यान देते थे जो पुरुष कहते और करते थे, और स्त्रियों को घर के एक छोटे-से दायरे तक सीमित रखते थे, जिससे वे दासों और बच्चों की तरह अदृश्य हो जाती थीं।

जो भी स्त्री विरोध करती थी, उसे उसका मूल्य चुकाना पड़ता था। उदाहरण के लिए एस्तेर 1 में राजा क्षयर्ष (Xerxes) राज्य के उच्च वर्ग के लिए एक भोज देता है; उसी समय उसकी पत्नी वशती (Vashti) अपनी सहेलियों को स्त्रियों के एक आयोजन में बुलाती है। उत्सव के बीच क्षयर्ष, “दाखमधु से उत्तेजित होकर”, अपनी अत्यंत सुंदर पत्नी को आज्ञा देता है कि वह अपनी दावत छोड़कर आए, ताकि “प्रजा और प्रधानों को उसकी सुंदरता दिखाए, क्योंकि वह देखने में सुंदर थी”। जब वशती आने से इनकार करती है, तो क्रोधित राजा, जो अपनी पत्नी की अवज्ञा से सार्वजनिक रूप से लज्जित हुआ था, अपने बुद्धिमानों से सलाह माँगता है। वे निर्णय लेते हैं कि वशती को रानी के पद से हटा दिया जाए और उसे कभी अपने पति के सामने आने न दिया जाए। इसका कारण: वे हर उस संभावना को समाप्त करना चाहते हैं कि देश की दूसरी स्त्रियाँ उसके उदाहरण पर चलें और अपने पति की आज्ञा न मानें। लक्ष्य यह है कि “सब स्त्रियाँ, छोटी से लेकर बड़ी तक, अपने-अपने पति का आदर करें”।

यह कहानी प्रमाणित करती है कि लगभग हर प्राचीन संस्कृति में – इस मामले में इस्राएल में नहीं, बल्कि फ़ारस में – यह मान लिया जाता था कि सार्वजनिक पदों पर पुरुष अगुवाई करें और स्त्रियाँ अपने पतियों के अधीन रहें। इस

प्रकार पवित्र शास्त्र स्वयं दिखाता है कि पितृसत्ता पतन की उपज है, न कि इस्राएल के परमेश्वर की कोई विशेष रचना।

प्रेरित भी ऐसे ही पुरुष-प्रधान संसार में थे, जब वे सुसमाचार का प्रचार कर रहे थे और पूरे रोमी साम्राज्य में कलीसियाएँ स्थापित कर रहे थे। इफिसियों 5 की जाँच हम पहले ही कर चुके हैं, परन्तु इस खंड के बाहर भी पहली शताब्दी की कलीसिया की मसीही पत्नियों को प्रेरितों की सलाह एकमत है। पौलुस कुलुस्सियों को लिखता है: “हे पत्नियो, अपने-अपने पति के अधीन रहो ...”⁶² और तीतुस को: “... जवान स्त्रियों को सिखाएँ ... कि अपने-अपने पति के अधीन रहें।”⁶³ पतरस भी यही कहता है: “हे पत्नियो, अपने-अपने पति के अधीन रहो ...”⁶⁴ जो कोई बाइबल को अधिकार के रूप में मानता है, उसे पहली दृष्टि में यह पूरी तरह स्पष्ट लगता है। हम यह मान सकते हैं कि सब विवाहों के लिए परमेश्वर का आदर्श यह है कि पत्नी पति के अधीन रहे, परन्तु इस अध्याय में आगे मैं इस निष्कर्ष का खंडन करूँगा, यह दिखाकर कि यह गलत धारणा इन पाठों के एक सतही और गलत पठन पर आधारित है।

कुलुस्सियों की पत्नी में पौलुस के इन शब्दों को हम कैसे समझें: “हे पत्नियो, जैसा मसीह में उचित है, वैसा ही अपने-अपने पति के अधीन रहो। हे पतियो, अपनी-अपनी पत्नी से प्रेम रखो और उनसे कठोरता न करो।”? मेरा कहना है कि इन पदों की व्याख्या से हम इफिसियों 5 से भिन्न किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुँचते। विद्वान इस बात पर एकमत हैं कि कुलुस्सियों की पत्नी और इफिसियों की पत्नी एक ही समय में लिखी गई। यह उन महत्वपूर्ण वाक्यांशों में एक प्रकार की “कट-एंड-पेस्ट” पद्धति से भी पहचाना जा सकता है जो दोनों पत्रियों में आते हैं। पहले वाले पद दोनों खंडों में लगभग एक जैसे हैं। वे इन शब्दों का इसी क्रम में उपयोग करते हैं: “एक दूसरे को”, “भजन”, “स्तुतिगान”, “आत्मिक गीत”, “अपने हृदय में”, “सदा परमेश्वर पिता का धन्यवाद करो”, “नाम में”, “प्रभु”, “यीशु”, “मसीह”। अंतर यह है कि कुलुस्सियों की पत्नी का केवल दो पदों वाला खंड इफिसियों की पत्नी के तेरह पदों वाले खंड का एक संक्षिप्त रूप है। इफिसियों 5 कुलुस्सियों की पत्नी के संक्षिप्त वाक्यांशों का विस्तार करता है और इस प्रकार उनके अर्थ पर प्रकाश डालता है।

और बाक़ी दो खंडों, तीतुस 2:3-5 और 1 पतरस 3:1 के बारे में क्या? इस पर संदेह करने के अच्छे कारण हैं कि इन पाठों में पौलुस और पतरस पूरे मानव इतिहास की सब स्त्रियों पर अपने पतियों के अधीन रहने की एक सामान्य आज्ञा रखते हैं।⁶⁵ यह पहली शताब्दी के भूमध्यसागरीय क्षेत्र के उन लोगों के लिए एक पास्टरीय सलाह है जो अरस्तू (Aristoteles) के गृह-नियमों का पालन करते हैं, और इस रूप में यह सृष्टि की व्यवस्था से प्रेरित नहीं, बल्कि अच्छी प्रतिष्ठा बनाए रखने की एक समझ में आने वाली चिंता से प्रेरित है। मैं इसे समझाना चाहता हूँ।

गृह-नियम

जब हम “स्त्रियो, अधीन रहो” वाले पदों को उनके संदर्भ से अलग कर देते हैं, तो इस बात का खतरा रहता है कि हम उन्हें प्रमाण-पाठों के रूप में इस्तेमाल करें। आइए हम साहित्यिक संदर्भ पर, अर्थात् उन बड़े खंडों पर ध्यान दें जिनमें ये और ऐसे ही अन्य पद मिलते हैं:

	पत्नियाँ – पति / स्त्रियाँ – पुरुष	बच्चे – माता-पिता	दास – स्वामी
इफिसियों	5:21-33	6:1-4	6:5-9
कुलुस्सियों	3:18-19	3:20-21	3:22-4:1
1 पतरस	3:1-7	कोई उल्लेख नहीं	2:18-25

	पत्नियाँ – पति / स्त्रियाँ – पुरुष	बच्चे – माता-पिता	दास – स्वामी
तीतुस	2:1-8	कोई उल्लेख नहीं	2:9-10
1 तीमुथियुस	5:1-16	कोई उल्लेख नहीं	6:1-3

साहित्यिक संदर्भ का विश्लेषण करते समय हमें क्या दिखाई देता है? सबसे पहले: हर बार जब पत्नी की अधीनता का उल्लेख होता है, तो वह एक तथाकथित “गृह-संहिता” का भाग होता है, जिसमें पतियों, पत्नियों, बच्चों और दासों से बने घराने के भीतर के संबंधों को व्यवस्थित किया जाता है। अरस्तू की पहले की शिक्षाओं के अनुसार, रोमी क़ानून के तहत घरानों को किसी बड़े पुरुष के शासन के अधीन व्यवस्थित किया जाना था। यदि कोई वयस्क पुरुष नहीं होता था, तो सबसे बड़ी स्त्री यह भूमिका संभालती थी। प्राचीन गृह-संहिता एक पदानुक्रम का पालन करती थी, जो घटते हुए क्रम में निर्धारित था: घर का मुखिया, फिर पत्नी, फिर बच्चे और दास। दूसरे शब्दों में: पौलुस और पतरस कोई ऐसा संदर्भ-निरपेक्ष ज्ञान घोषित नहीं करते जो मसीही इतिहास के शेष समय तक सब विवाहित दंपतियों पर लागू हो। वे एक बिल्कुल विशेष संदर्भ को संबोधित करते हैं – रोमी समाज के नियमों के अनुसार व्यवस्थित एक साधारण प्राचीन घराने में सुसमाचार को व्यवहार में लाना।

दूसरा, इनमें से किसी भी पाठ में पति को अगुवाई करने की आज्ञा नहीं दी गई है। स्त्री से केवल अधीन रहने को कहा गया है। प्रेरित यह मानकर चल रहे थे कि पुरुष की अगुवाई पहले से व्यवहार में थी। अपनी आज्ञाओं से वे जो प्राप्त करना चाहते थे, वह यह था कि पुरुष की अगुवाई को नरम किया जाए और स्त्री की निचली प्रतिष्ठा को ऊँचा उठाया जाए। पतरस और पौलुस स्त्रियों को यह सिखाते हैं कि वे पुरुष की अगुवाई को केवल सहन करने के बजाय, अधीनता को एक स्वैच्छिक बात के रूप में अपनाएँ, जिसे सुसमाचार बल देता है।

तीसरा: इन सब खंडों में – और इस अध्याय के तर्क के लिए यह अत्यंत महत्वपूर्ण है – पत्नी से अपने पति के अधीन रहने की जो माँग की गई है, उसे दासों से अपने स्वामी के अधीन रहने की माँग के समानांतर रखा गया है। दो स्थानों पर यह समानता माता-पिता के प्रति बच्चों की आज्ञाकारिता पर भी लागू की गई है, परन्तु स्वामी-दास संबंध के साथ समानता हर बार स्थापित की गई है।

मैं दासता और पितृसत्ता के बीच की इस समानता पर थोड़ी देर में फिर लौटूँगा, परन्तु पहले मैं इस ओर ध्यान दिलाना चाहता हूँ कि पौलुस और पतरस न तो दासता को और न ही विवाह में स्त्री की अधीनता को आदर्श के रूप में प्रस्तुत करते हैं – बल्कि, जैसा सब अच्छे आत्मिक अगुवों को करना चाहिए, वे उन कलीसियाओं की, जिनके साथ वे काम करते हैं, सहायता करते हैं कि वे ऐसी परिस्थितियों में से भी सबसे अच्छा निकालें जो कभी-कभी आदर्श से कोसों दूर होती हैं। परमेश्वर उत्पत्ति 16 में कुछ ऐसा ही करता है, जब दासी हागार अपनी स्वामिनी सारा से, जिसने उसके साथ दुर्व्यवहार किया था, भाग जाती है। हागार को बचाने और बल देने के बाद परमेश्वर कहता है: “अपनी स्वामिनी के पास लौट जा और उसके वश में रह!”⁶⁶ हममें से कौन इससे यह निष्कर्ष निकालेगा कि उसे दिया गया परमेश्वर का निर्देश उसके लिए परमेश्वर के सर्वोच्च और सर्वोत्तम उद्देश्य की अभिव्यक्ति था? नहीं, उसकी पिता-समान सलाह उसकी सहायता करती है कि वह आदर्श से कोसों दूर एक परिस्थिति में से सबसे अच्छा निकाले। स्पष्ट है कि उसके और उसके बच्चे के लिए जंगल में भाग जाने से बेहतर यह है कि वह सारा के अधीन हो जाए।

आज भी कभी-कभी यह बेहतर होता है कि हम जिस गैर-आदर्श परिस्थिति में हैं, उसमें से सबसे अच्छा निकालें। उदाहरण के लिए, मेरे पिता का, जिनका अभी-अभी विवाह हुआ था, दक्षिण अफ्रीकी सेना में दो वर्ष की सैनिक

सेवा के लिए बुलावा आ गया। घर पर एक नवजात बच्चे और एक युवा पत्नी के होते हुए वे जानते थे कि यह आदर्श से कोसों दूर है, परन्तु उनके पास कोई विकल्प नहीं था। वे केवल एक बुरी परिस्थिति में से सबसे अच्छा निकाल सकते थे। इसका विकल्प जेल था। कभी-कभी एक पास्टर अपनी कलीसिया को किसी लोकतांत्रिक चुनाव में भाग लेने की सलाह देता है, यद्यपि लोकतंत्र बाइबल में नहीं है और इसलिए आवश्यक नहीं कि वह मानव समाज के लिए परमेश्वर का अनन्त आदर्श हो। इसके विरोध में दिया गया उपदेश अनावश्यक प्रतिक्रियाएँ उत्पन्न करेगा। पहली शताब्दी में अरस्तू की गृह-व्यवस्था के साथ भी यही बात थी।⁶⁷

अच्छी प्रतिष्ठा की चिंता

इस बात के अलावा कि वे उन्हें गैर-आदर्श परिस्थिति में से सबसे अच्छा निकालने में सहायता करते हैं – पतरस और पौलुस स्त्रियों और दासों को यह सलाह क्यों देते हैं कि वे स्वेच्छा से अपने-अपने पतियों और स्वामियों के अधीन रहें, जिन्हें बदले में यह निर्देश दिया जाता है कि वे अपनी पत्नियों और दासों के साथ दया और आदर से व्यवहार करें? अधिकांश पाठों में हमें एक विश्वसनीय उत्तर मिलता है: पौलुस और पतरस इस बात के लिए चिंतित हैं कि देखते हुए संसार की दृष्टि में नई कलीसियाओं की विश्वसनीयता और सुसमाचार-प्रचार का आकर्षण बना रहे – एक ऐसे संसार में, जहाँ *paterfamilias* (घर के मुखिया) के प्रति स्त्रियों और दासों की आज्ञाकारिता अब रोमी क़ानून थी।

इसके प्रमाण पाठों में ये हैं:

- दासों और पत्नियों को संबोधित करने से ठीक पहले पतरस सम्राट के अधीन रहने की सलाह देता है और जोड़ता है: “क्योंकि परमेश्वर की इच्छा यह है कि तुम अपने भले कामों से मूर्ख मनुष्यों की अज्ञानता की बातों को बंद कर दो।”⁶⁸
- स्त्रियों से पतरस कहता है: “अपने पति के अधीन रहो, ताकि यदि इनमें से कोई वचन को न भी मानते हों, तो भी अपनी पत्नियों के चाल-चलन के द्वारा बिना वचन के खिंच जाएँ।”⁶⁹
- क्रेते की स्त्रियों से पौलुस कहता है: “अपने पति के अधीन रहो, ताकि परमेश्वर के वचन की निंदा न होने पाए।”⁷⁰
- क्रेते के दासों से पौलुस कहता है: “अपने स्वामियों के अधीन रहो, ताकि तुम हर बात में हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर के उपदेश की शोभा बढ़ाओ।”⁷¹
- इफिसुस के दासों से पौलुस कहता है: “जितने दास जूए के नीचे हैं, वे अपने-अपने स्वामी को हर प्रकार के आदर के योग्य समझें, ताकि परमेश्वर के नाम और हमारे उपदेश की निंदा न हो।”⁷²
- उन सब निर्देशों के संबंध में, जिन्हें वह तीमुथियुस के द्वारा इफिसुस की कलीसिया तक पहुँचाता है, पौलुस लिखता है: “लोगों को ये निर्देश दे, ताकि वे निर्दोष रहें। ... विरोधी को बदनाम करने का कोई अवसर न दो।”⁷³

यहाँ क्या हो रहा है? विशेष रूप से 1 पतरस, परन्तु तीतुस और 1 तीमुथियुस भी, ऐसी छोटी, अक्सर सताई जाने वाली कलीसियाओं को लिखी गई पत्रियाँ हैं जो दुखों के बीच संघर्ष कर रही हैं। शैतान की रणनीति यह है कि इन कलीसियाओं की ओर नकारात्मक ध्यान खींचा जाए। इफिसियों को लिखी गई पत्री एक “आंतरिक” दस्तावेज़ है, जो बाहरी लोगों की परवाह किए बिना केवल मसीहियों को संबोधित है (इसलिए उसमें अच्छी प्रतिष्ठा से जुड़ी समस्याओं का कोई उल्लेख नहीं है)। इसके विपरीत, इन तीन पत्रियों में प्रेरणा एक परिस्थिति-विशेष समस्या को संबोधित करने की है, अर्थात् यह कि कलीसिया बाहरी लोगों को कैसी दिखाई देती है। सिंथिया वेस्टफ़ॉल (Cynthia Westfall) इस विषय में कहती हैं:

वह सम्मान को महत्व देने वाली एक संस्कृति थी, जिसमें लिंग-भूमिकाएँ महत्वपूर्ण स्थान रखती थीं। यदि कोई स्त्री अपने पति पर प्रभुता करके उसके “स्वामी” की तरह व्यवहार करती थी, तो इसे रोमी साम्राज्य के पूरे पदानुक्रम और संरक्षण-व्यवस्था के लिए एक विनाशकारी चुनौती माना जाता था। ऐसी परंपराओं के उल्लंघन को गंभीरता से लिया जाता था और वे कलीसियाओं की प्रतिष्ठा को नष्ट कर सकते थे। स्त्रियों का व्यवहार आरंभिक कलीसिया और अन्य धार्मिक समूहों पर विवादात्मक हमलों के लिए एक स्वागत-योग्य अवसर देता था।⁷⁴

एक ऐसे संसार में, जहाँ दास और पत्नियाँ कानून के द्वारा *paterfamilias* के अधीन रहने के लिए बाध्य थे, इन पत्नियों और दासों को यह बुलाहट दी गई कि वे सामान्य सीमा से आगे बढ़कर स्वेच्छा से अपने जीवन को अपने-अपने पतियों और स्वामियों के अधीन करें। सौभाग्य से प्रेरितों ने *paterfamilias* को, यदि वह मसीही होता, उचित निर्देश दिए थे कि उसे अपने घराने के सदस्यों की सच्चे मन से कैसे देखभाल करनी चाहिए।

सीधे शब्दों में कहें: जब पतरस और पौलुस ने स्त्रियों से कहा कि वे अपने पतियों के अधीन रहें, तो उन्होंने इसके द्वारा सब विवाहों में लिंग-आधारित पदानुक्रम को किसी प्रकार के मसीही आदर्श के रूप में स्थापित नहीं किया। बल्कि उन्होंने स्वयं को एक गैर-आदर्श परिस्थिति के अनुसार ढाला। पतरस अपनी पत्नी की पहली पंक्ति में किसी भावी, सिद्ध समाज में रहने वाले विश्वासियों को नहीं, बल्कि “उन परदेशियों को जो सब प्रांतों में तितर-बितर होकर रहते हैं” संबोधित करता है – हम परदेशी हैं, जो परिस्थिति के अनुसार ढलने का पूरा प्रयास करते हैं, भले ही हम अपनी सच्ची नागरिकता परमेश्वर के राज्य में जीते हैं। यदि हम प्राचीन घरेलू मानदंडों को ध्यान में रखें, तो इन पाठों को इस प्रकार समझना चाहिए कि कलीसिया को सांस्कृतिक मानदंडों से खुलकर विद्रोह किए बिना उनसे ऊपर उठने के लिए प्रेरित किया जाता है। पतरस और पौलुस को अपूर्ण व्यवस्थाओं के भीतर काम करना पड़ा, क्योंकि रोमी अधिकारी मसीहियों को बंदी बनवाने के लिए हर बहाने की खोज में रहते थे। हर चुनौती इन छोटी कलीसियाओं के लिए जाँच-पड़ताल और सताव लेकर आती। उल्लेखनीय है कि 1 पतरस, तीतुस और 1 तीमुथियुस के लिखे जाने के बाद केवल कुछ ही वर्ष बीते थे कि उनके लेखक, पतरस और पौलुस, रोमी व्यवस्था को भंग करने के कारण मार डाले गए।

“दासो, अधीन रहो ... इसी प्रकार, हे स्त्रियो, अधीन रहो”

तीतुस से कहा जाता है कि वह स्त्रियों को अपने पतियों के अधीन रहने की शिक्षा दे (2:3-5), और थोड़ी ही देर बाद उससे यह भी कहा जाता है कि दास अपने स्वामियों के अधीन रहें (2:9)।

पतरस पौलुस के क्रम को उलट देता है: पहले वह दासों और स्वामियों के बीच के संबंधों की बात करता है, फिर पत्नियों और पतियों के बीच के संबंधों की। 1 पतरस 2:18 में दासों से कहा जाता है कि वे अपने स्वामियों के – और केवल भले और नम्र स्वामियों के ही नहीं, बल्कि अन्यायी स्वामियों के भी – पूरे आदर के साथ अधीन रहें; फिर 3:1 में हम पढ़ते हैं कि स्त्रियाँ भी उसी प्रकार अपने पतियों के अधीन रहें। अपने शब्द-चयन से पतरस इन निर्देशों के बीच के संबंध को और दृढ़ करता है: “दासो ... अधीन रहो ... हे स्त्रियो, इसी प्रकार अधीन रहो ...!”

अब हम इस अध्याय के मुख्य तर्क पर आते हैं: पूरकतावादी इस निर्देश की व्याख्या, कि पत्नियाँ अधीन रहें, कालातीत और सार्वभौमिक रूप से लागू होने वाले निर्देश के रूप में करते हैं। परन्तु इसके समानांतर निर्देश को, कि दास अधीन रहें, हम आधुनिक लोग, जिन्होंने दासता को पीछे छोड़ दिया है, परिस्थिति से बाँधा हुआ समझते हैं।

चूँकि जब कोई इतिहास से नहीं सीखता तो इतिहास स्वयं को दोहराता है, इसलिए मैं इस अंतर्दृष्टि को थोड़ा और विस्तार से समझाऊँगा।

दासता के उन्मूलन के विरुद्ध मसीही प्रतिरोध

परमेश्वर के न्याय की चेतना से प्रेरित मसीही उन्मूलनवादियों (Abolitionisten) ने पहले 1833 में यूनाइटेड किंगडम में एक संस्था के रूप में दासता पर विजय पाई, फिर समय के साथ दासों की मुक्ति दूसरे देशों में भी फैल गई। विलियम विल्बरफोर्स (William Wilberforce), जॉन वेस्ली (John Wesley), जॉन न्यूटन (John Newton), चार्ल्स फ़िनी (Charles Finney), ग्रिमके बहनें (die Grimké-Schwestern), हैरियट स्टो (Harriet Stowe), ओलाउदा इक्वियानो (Olaudah Equiano) और फ़्रेडरिक डगलस (Frederick Douglass) जैसे लोगों ने अंततः दासता की संस्था का एक विजयी और स्थायी अंत किया। सब आधुनिक मसीही सामाजिक परिवर्तन के इन नायकों के बारे में बताना पसंद करते हैं।

कम लोग यह जानते हैं – और शायद हम इसे जानबूझकर भूल जाते हैं, क्योंकि यह आज मसीहियों के लिए लज्जा की बात है – कि संयुक्त राज्य अमेरिका में दासता के उन्मूलन के सबसे बड़े विरोधी देश के दक्षिण के मसीही थे। वास्तव में, आज संयुक्त राज्य अमेरिका का सबसे बड़ा संप्रदाय, सदर्न बैप्टिस्ट (दक्षिणी बैप्टिस्ट), 1845 में ठीक इसी प्रश्न के कारण नॉर्दर्न बैप्टिस्ट (उत्तरी बैप्टिस्ट) से अलग हो गया था।

18वीं शताब्दी तक अधिकांश मसीही यह विश्वास करते थे कि दासता बाइबल-सम्मत है; इससे उनका अर्थ यह था कि वह परमेश्वर द्वारा अनुमोदित है। अमेरिका में रॉबर्ट डैबनी (Robert Dabney) और जे. एच. थॉर्नवेल (J. H. Thornwell) जैसे बाइबल के प्रति निष्ठावान धर्मविज्ञानियों ने दासता को बनाए रखने के पक्ष में विश्वसनीय लगने वाले बाइबल-आधारित तर्क विकसित किए। अपने समय के सबसे बड़े रिफ़ॉर्मर् धर्मविज्ञानी चार्ल्स हॉज (Charles Hodge) ने *The Bible Argument on Slavery* [दासता पर बाइबल का तर्क] शीर्षक से एक लेख लिखा, जिसमें उन्होंने इस प्रकार तर्क दिया:⁷⁵

- परमेश्वर ने दासता को स्थापित किया। नूह के पुत्र हाम को दास होने का दंड देकर⁷⁶ परमेश्वर ने स्वयं दासता को स्थापित किया।
- परमेश्वर ने दासता को उचित ठहराया। अब्राहम, दाऊद और अय्यूब के भी दास थे।
- मूसा की व्यवस्था ने दासता का समर्थन किया। उदाहरण के लिए, दस आज्ञाओं में से चौथी और दसवीं में यह मान लिया गया है कि परमेश्वर के लोगों के पास दास हैं। इसके अतिरिक्त, मूसा की व्यवस्था ने निर्धन यहूदियों और युद्धबंदियों को दास बनाने की अनुमति दी।⁷⁷
- यीशु ने कभी दासता के विरुद्ध कुछ नहीं कहा। जिसकी उसने निंदा नहीं की, उसे उसने अवश्य ही अनुमोदित किया होगा।
- प्रेरितों ने दासों को आज्ञा दी कि वे अपने स्वामियों के अधीन रहें। उन्होंने दासता की निंदा किए बिना उसे नियमबद्ध किया।
- प्रेरितों ने दासता का उपयोग सुसमाचार के एक सकारात्मक पहलू को समझाने के लिए किया – हम “मसीह के दास” उस प्रभु की, जिसके हम हैं, पूरी तरह आज्ञा मानें।

कुछ गिने-चुने धर्मविज्ञानियों ने धर्मविज्ञानियों के इस बहुमत की राय बदलने का प्रयास किया, परन्तु वे असफल रहे। उदाहरण के लिए 1845 में चार दिन चली एक बहस में उन्मूलनवादी जोनाथन ब्लैचर्ड (Jonathan Blanchard) ने “बाइबल के सामान्य सिद्धांतों” और “पवित्र शास्त्र के संपूर्ण विस्तार” की जाँच की। उनके लिए यह स्पष्ट था कि “बाइबल के सिद्धांत न्याय और धार्मिकता हैं”। उनका मत था कि बाइबल के उद्धरणों से लगभग कुछ

भी सिद्ध किया जा सकता है और इस प्रकार ऐसे निष्कर्षों तक पहुँचा जा सकता है जो पवित्र शास्त्र के व्यापक सत्यों के विपरीत हों।

दुर्भाग्य से दक्षिण के बाइबल पर विश्वास करने वाले मसीही इस बात के लिए इतने आश्वस्त थे कि परमेश्वर दासता को उचित ठहराता है कि वे दासता बनाए रखने के अपने अधिकार की रक्षा के लिए एक ऐसे गृहयुद्ध में हथियार उठाने को तैयार हो गए जिसमें पाँच लाख से अधिक लोगों की जानें गईं! गृहयुद्ध से अमेरिकी दक्षिण में नस्लवाद का अंत तो नहीं हुआ, परन्तु उसने उन मसीहियों को, जिनके पास कभी दास थे, इतना दीन किया कि अंततः उन्हें मानना पड़ा कि दासता गलत थी। न रुकने वाले सांस्कृतिक परिवर्तन ने – जो न्याय की भावना से प्रेरित था – उन्हें फिर से पवित्र शास्त्र की ओर मुड़ने के लिए प्रेरित किया, जहाँ उन्होंने धीरे-धीरे परन्तु निश्चित रूप से अपने आचरण की भूल को पहचाना। आज व्यावहारिक रूप से सब धर्मविज्ञानी यह मानते हैं कि बाइबल, यदि उसे सही ढंग से समझा जाए, तो कभी के अनेक “बाइबल-आधारित” तर्कों के बावजूद दासता का समर्थन नहीं करती और यह प्रथा पापपूर्ण है।

दासता और पितृसत्ता की तुलना

आइए अब दासता और पितृसत्ता के बीच की समानताओं की जाँच करें – पितृसत्ता, अर्थात् सभ्यता में सदा से प्रचलित यह धारणा कि पुरुषों को अगुवाई करनी चाहिए। आइए देखें कि जब पवित्र शास्त्र की व्याख्या पूरकतावादी ढंग से की जाती है, तो तर्कों की एक ऐसी ही शृंखला कितनी आसानी से विकसित की जा सकती है:⁷⁸

- परमेश्वर ने पुरुष के अधिकार को स्थापित किया। पतन से पहले अदन की वाटिका में परमेश्वर ने आदम को हव्वा का मुखिया बनाया।
- परमेश्वर ने पुरुष के अधिकार का अनुमोदन किया। कुलपिताओं ने, न कि कुलमाताओं ने, परमेश्वर के लोगों की अगुवाई की। इस्राएल के इतिहास में राजा, न कि रानियाँ, प्रमुख हैं।
- मूसा की व्यवस्था ने पुरुष के अधिकार का समर्थन किया। दसवीं आज्ञा कहती है कि हमें अपने पड़ोसी की पत्नी, उसके गदहे या उसकी अन्य संपत्ति का लालच नहीं करना चाहिए। और याजकों को पुरुष होना चाहिए, स्त्री नहीं।
- यीशु ने कभी पति के अधिकार के विरुद्ध कुछ नहीं कहा। जिसकी उसने निंदा नहीं की, उसे उसने अवश्य ही अनुमोदित किया होगा।
- प्रेरितों ने स्त्रियों को आज्ञा दी कि वे अपने पतियों के अधीन रहें। उन्होंने पितृसत्ता की निंदा किए बिना उसे नियमबद्ध किया।
- प्रेरितों ने पति के अधिकार का उपयोग सुसमाचार के एक सकारात्मक पहलू को दर्शाने के लिए किया, जिसमें पति को प्रभु मसीह का प्रतिनिधित्व करना था और पत्नी को अपने पति के अधीन ऐसे रहना था मानो वह स्वयं मसीह हो।

क्या आप दासता और पितृसत्ता को बाइबल से उचित ठहराने के प्रयासों के बीच इन उल्लेखनीय और होश में लाने वाली समानताओं को देखते हैं? संसार की सबसे बड़ी कलीसिया भी अब “हे पत्नियो, अधीन रहो” और “हे दासो, अधीन रहो” वाले पाठों के बीच की समानता को पहचानती है: 1988 में पोप जॉन पॉल द्वितीय (Johannes Paul II.) ने स्पष्ट शब्दों में यह मत व्यक्त किया कि दासता को उचित ठहराने के लिए इफिसियों 6 में पौलुस के लेखों का उपयोग करना, विवाह में स्त्री की अधीनता को उचित ठहराने के लिए इफिसियों 5 का उपयोग करने से भिन्न नहीं है।⁷⁹

सेब और नाशपाती?

पूरकतावादी धर्मविज्ञानी इस समानता पर कैसी प्रतिक्रिया देते हैं? जॉर्ज नाइट (George Knight) कहते हैं कि “हे पत्नियो, अधीन रहो” और “हे दासो, अधीन रहो” वाले पाठ बहुत भिन्न हैं – “सेब और नाशपाती”। क्यों? मैं एक प्रमुख पूरकतावादी धर्मविज्ञानी, सैम स्टॉर्म्स (Sam Storms), के एक लेख⁸⁰ को उद्धृत करूँगा, जो छह कारण बताते हैं कि उनके विचार में हम दासता की निंदा और साथ ही स्त्रियों की अधीनता का समर्थन क्यों कर सकते हैं। मैं उन्हें बिंदु-दर-बिंदु उद्धृत करूँगा, उनके शब्दों को तिरछे अक्षरों और उद्धरण-चिह्नों में रखूँगा और फिर हर एक तर्क पर विचार करूँगा:

पहला: “पवित्र शास्त्र इस बात के लिए जाना जाता है कि वह अवांछित संबंधों को नियमबद्ध करता है, बिना उन्हें स्थायी आदर्शों के रूप में उचित ठहराए (देखिए मत्ती 19:8; 1 कुरिन्थियों 6:1-8)। दासों और स्वामियों के बीच के संबंध के लिए अपने निर्देशों से पौलुस यह नहीं कहता कि दासता एक अच्छी संस्था है।”

अतः स्टॉर्म्स भली-भाँति समझते हैं कि परमेश्वर सामाजिक ढाँचों के अनुसार स्वयं को ढालने के लिए तैयार है। अच्छा! परन्तु ठीक यही तर्क यूनानी-रोमी जगत में किसी *paterfamilias* के प्रति पत्नी की उस अधीनता के लिए भी देना होगा जो संस्कृति द्वारा निर्धारित थी – बाइबल उसे नियमबद्ध करती है, बिना उसका अनुमोदन किए।

दूसरा: “दासता की संस्था सृष्टि में आधारित नहीं है, बल्कि वह पतन से उत्पन्न एक विकृति है। इसके विपरीत विवाह और पुरुष की प्रधानता उस मूल रची गई व्यवस्था का भाग हैं जो पतन से पहले विद्यमान थी।”

यहाँ स्टॉर्म्स उत्पत्ति 2 और 3 को गलत समझते हैं और एक ऐसी बात को आदर्श बना देते हैं जो उत्पत्ति 3:16 के अनुसार पतन का सीधा परिणाम है, न कि सृष्टि का।

तीसरा: “कई स्थानों पर दासता के उन्मूलन के बीज बोए गए हैं। देखिए फिलेमोन 16, इफिसियों 6:9। परन्तु नए नियम में कुछ भी इस ओर संकेत नहीं करता कि पति और पत्नी के संबंध के लिए भी यही अभिप्रेत था।”

यह सच नहीं है। गलातियों 3:28, 1 कुरिन्थियों 7 और इफिसियों 5 की एक सही व्याख्या, विशेष रूप से परस्पर अधीनता के विषय में उसकी शिक्षा, विवाह में पुरुष-प्रभुत्व के “विघटन के बीज” अवश्य हैं।

चौथा: “यदि दासता के तर्क का उपयोग पत्नी की अपने पति के प्रति अधीनता को अमान्य ठहराने के लिए किया जाता है, तो क्या यह बच्चे की अपने माता-पिता के प्रति अधीनता को भी अमान्य नहीं ठहरा देगा? ध्यान दीजिए कि पौलुस इफिसियों 5-6 में पति और पत्नी, माता-पिता और बच्चों तथा दासों और स्वामियों के बीच के संबंधों पर कैसे विचार करता है।”

स्टॉर्म्स गलत शब्द का उपयोग करते हैं: बच्चों को “आज्ञा माननी” है, जबकि पत्नियों और दासों को “अधीन रहना” है। यह पत्नियों और दासों को एक अनोखे ढंग से आपस में जोड़ता है। स्टॉर्म्स यह भी मानते प्रतीत होते हैं कि उस संस्कृति के माता-पिता और बच्चे माता-पिता और बच्चों से संबंधित पदों को ठीक वैसे ही पढ़ते जैसे हम आज पश्चिम में पढ़ते हैं। परन्तु हममें से कौन इस बात पर अड़ा रहेगा कि हमारे बच्चे वयस्क होने के बाद भी लंबे समय तक अपने माता-पिता की आज्ञा मानें? पहली शताब्दी का पाठक इफिसियों 6 को ऐसे समझता कि पौलुस वयस्क बच्चों को भी आज्ञा देता है कि वे अपने माता-पिता की आज्ञा मानें, न कि केवल उनका आदर करें।⁸¹

परन्तु यदि उस समय माता-पिता और बच्चे का संबंध वैसा ही होता जैसा आज है (जो वह नहीं था), तब भी विवाह में लिंग-आधारित पदानुक्रम माता-पिता-बच्चे के संबंध के पीढ़ी-आधारित पदानुक्रम से बहुत भिन्न है। यह तथ्य कि हमारे छोटे बच्चे जीवन और जीवन की बुद्धि के बारे में बहुत कम जानते हैं, उन्हें ऐसी स्थिति में रखता है जिसमें

निर्भरता और आज्ञाकारिता उनके लिए सबसे अच्छी है, और इसलिए समानतावादी संस्कृतियों में भी उनका पालन किया जाता है। दो शिक्षित वयस्कों के विवाह पर यही बात लागू नहीं होती। माता-पिता होने का लक्ष्य यह है कि हम अपने बच्चों को निर्भरता और आज्ञाकारिता से आगे ले जाएँ, ताकि वे अंततः अपने परिवार के मुखिया के रूप में उसकी अगुवाई कर सकें और इस प्रकार हमारे बराबर हो जाएँ (जैसा पौलुस इफिसियों 5:31 में संकेत करता है)। इसलिए किसी बच्चे पर माता-पिता की अगुवाई को उसके पूरे जीवन के लिए लागू करने का प्रयास करना गलत होगा। तो फिर हम इस बात के लिए इतने निश्चित क्यों हैं कि अपने जीवनसाथी के साथ ऐसा करना सही है?

पाँचवाँ: “दासों को दिए गए पौलुस के निर्देशों में दासता के संबंध में किसी स्थायी नैतिक आज्ञा या पूर्ण नैतिक सिद्धांत का उल्लेख नहीं है।”

यहाँ स्टॉर्म्स पहले बिंदु को दोहराते हैं। परन्तु 1 पतरस 2-3 के शब्दों को देखिए: “हे दासो, अपने स्वामियों के अधीन रहो ... इसी प्रकार, हे पत्नियो, तुम भी अपने पति के अधीन रहो।” किस आधार पर स्टॉर्म्स निश्चित हैं कि पहली बात कोई स्थायी नैतिक आज्ञा नहीं है, जबकि दूसरी है? उनका दृष्टिकोण असंगत है।

छठा: “पौलुस स्पष्ट रूप से इस संभावना को स्वीकार करता है और इसका समर्थन करता है कि कोई दास स्वतंत्रता प्राप्त करे (1 कुरिन्थियों 7:21)। पत्नियों और उनके पतियों के प्रति उनकी अधीनता के संबंध में वह ऐसा कुछ नहीं कहता।”

इसका कारण यह है कि दासता के विपरीत, विवाह परमेश्वर की योजना के अनुसार एक-तन-एकता है।⁸² दासता से मुक्ति वांछनीय थी, क्योंकि वह काम की परमेश्वर-नियुक्त संस्था का छुटकारा है। इसी प्रकार पितृसत्ता से मुक्ति विवाह की परमेश्वर-नियुक्त संस्था का छुटकारा है। इफिसियों 5 लिखते समय पौलुस का लक्ष्य यह है कि अरस्तू के नियमों के विरुद्ध क्रांति का संदेश भेजे बिना, उस संस्कृति में यथासंभव बराबरी वाला विवाह प्राप्त किया जाए।

इन सब बातों का अर्थ यह है कि जॉर्ज नाइट और सैम स्टॉर्म्स के दावों के विपरीत, दासता और पितृसत्ता एक-दूसरे से बहुत मिलती-जुलती हैं – वे बिल्कुल भी सेब और नाशपाती जैसी नहीं, बल्कि एक ही पतित पेड़ के सड़े हुए फल हैं। दासता सिद्धांत रूप में अपनी पत्नी पर पुरुष की अगुवाई के विचार से बहुत मिलती-जुलती है। चाहे उनका रूप सद्भावपूर्ण हो या क्रूर, दोनों प्रथाएँ एक पतित संसार का परिणाम हैं। एक ओर “सद्भावपूर्ण” दासता की भी निंदा करना – जैसा आज सब मसीही करते हैं – और साथ ही “सद्भावपूर्ण” पितृसत्ता का गढ़ बने रहना, कोई अर्थ नहीं रखता।

यदि समाज पर सुसमाचार का एक दीर्घकालिक प्रभाव यह है कि वह दासता को मिटा देता है, तो वह उसी वार से पितृसत्ता को भी गिरा देता है। इसी कारण क्लैरिस मार्टिन (Clarice Martin) अफ्रीकी-अमेरिकियों के बीच बाइबल की व्याख्या पर एक उल्लेखनीय लेख में एक ज्ञानवर्धक प्रश्न पूछती हैं: “काले पुरुष प्रचारक और धर्मविज्ञानी दासों के बारे में प्रचार करते और लिखते समय उदार व्याख्या-शास्त्र का, परन्तु स्त्रियों की बात आने पर शाब्दिक व्याख्या-शास्त्र का उपयोग कैसे कर सकते हैं?”⁸³

पहले के अन्याय से मिलने वाली सीख

दासता और पितृसत्ता के बीच की समानताओं को नकारकर पूरकतावादी धर्मविज्ञानी अमेरिकी दक्षिण के मसीही उन्मूलन-विरोधियों की भूल को दोहराते हैं। वे उन कलीसियाओं को, जो उनकी धर्मवैज्ञानिक सूक्ष्म-बुद्धि पर भरोसा करती हैं, फिर से यीशु की कलीसिया के लिए एक लज्जाजनक स्थिति में डाल देते हैं और इस प्रकार अपने ही कुछ सदस्यों के अवमूल्यन को लंबा खींचते हैं।

इस सबको और भी दुखद बनाने वाला तथ्य यह है कि पूरे संसार में पुरुष-प्रभुत्व के सबसे प्रभावशाली समर्थक **सदर्न बैप्टिस्ट** (दक्षिणी बैप्टिस्ट) हैं, एक ऐसा विश्वास-समुदाय जिससे हर चौथी अमेरिकी कलीसिया जुड़ी है। वे अपने प्रमुख धर्मविज्ञानियों और मीडिया के द्वारा अपने विचारों को संसार भर में फैलाते जा रहे हैं। गेओर्ग हेगेल (Georg Hegel) की चेतावनी सच होती दिखाई देती है: “इतिहास से हम केवल एक बात सीखते हैं, कि हम इतिहास से कुछ नहीं सीखते।”

तो आज की कलीसिया को मसीही उन्मूलन-विरोधियों की भूलों से ठीक-ठीक क्या सीखना चाहिए? पहला: यह संभव है कि पूरी बाइबल के पाठों से भरी विशाल “वैज्ञानिक” रचनाओं के द्वारा कोई किसी दृढ़ विश्वास तक पहुँचे – जैसा पूरे-पूरे संप्रदायों और धर्मविज्ञान की पूरी-पूरी शिक्षा-धाराओं के साथ होता है – और फिर भी भूल में हो।

दूसरा: यह संभव है कि संस्कृति एक सकारात्मक दिशा में विकसित हो, जो वास्तव में उन मसीही सिद्धांतों का परिणाम हो जिन्होंने सहस्राब्दियों से उस संस्कृति में जड़ें जमाई हैं। उदाहरण के लिए, गलातियों 3:28 में पौलुस का “मानवता के लिए मैग्रा कार्टा” इतिहास में पहली बार है कि किसी ने समानता के विचार और सामाजिक पदानुक्रमों के अंत को इतने प्रभावशाली ढंग से व्यक्त किया। समाज में दासता और पुरुष-प्रभुत्व के उन्मूलन के लिए हम वास्तव में इस पद के कितने ऋणी हैं? समाज में सुसमाचार के प्रभाव को रोकने या उस पर आक्रमण तक करने के बजाय, कलीसिया को उसे अपना बताकर उसका उत्सव मनाना चाहिए।

तीसरा: यह संभव है कि समाज में हुई खोजें और प्रगति पवित्र शास्त्र की किसी लंबे समय से चली आ रही व्याख्या पर प्रश्न उठाएँ। जब अधिकांश लोग यह मानते थे कि संसार चपटा है या पृथ्वी ब्रह्मांड का केंद्र है, तब कलीसिया के पास इसकी पुष्टि के लिए बाइबल के पद थे। जब वैज्ञानिक खोजों ने इसका खंडन किया, तो इससे हमें बाइबल को नए ढंग से पढ़ने और वह देखने का अवसर मिला जो उसमें सदा से लिखा था। जब औद्योगिक क्रांति और बाद के स्त्री-अधिकार आंदोलन की पहली लहरें पश्चिम में फैलीं, तब स्त्रियों को पहली बार यह अवसर मिला कि वे पुरुषों के बराबर अपनी बुद्धि और क्षमता को सिद्ध करें। इसे खतरे के रूप में देखने के बजाय, यह हमारे लिए एक अवसर है कि हम स्वयं पवित्र शास्त्र को इस प्रश्न के साथ नए सिरे से देखें: हम इतने समय तक क्या अनदेखा करते रहे?

चौथा: व्याख्या की आम भूलों से बचना चाहिए। बाइबल के अलग-अलग भागों की व्याख्या के लिए पूरी बाइबल को सामने रखना पड़ता है। “प्रमाण-पाठ” इकट्ठे कर लेना बहुत आसान है, जिनकी फिर स्वयं गलत व्याख्या की जाती है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि बाइबल की पुस्तकें, यद्यपि हमारे लिए लिखी गई हैं, फिर भी हमें **संबोधित** नहीं हैं। उस कालातीत संदेश को निकालने से **पहले**, जिसे हम फिर अपने समय और अपने संदर्भ पर लागू कर सकें, हमें उस ऐतिहासिक संदर्भ को गहराई से समझना **होगा** जिसमें पाठ लिखा गया था।

पाँचवाँ: स्वार्थ और **समूह-सोच** (Gruppendenken) हमें बाइबल को बहुत पक्षपातपूर्ण ढंग से पढ़ने की ओर ले जा सकते हैं। (इस विषय पर अधिक जानकारी आपको परिशिष्ट 6 में मिलेगी।) सामान्यतः लोग (मसीही भी) हर उस बात का विरोध करते हैं जो उनकी स्थिति या उनके विशेषाधिकारों को खतरे में डालती है। क्या 19वीं शताब्दी की धर्मवैज्ञानिक बहसों में उन धर्मविज्ञानियों को, जिनके पास दास थे, सबसे ऊँची आवाज़ रखने देना चाहिए था? क्या वे लोग, जो पूरकतावादी कलीसियाओं, सेवकाइयों और विश्वविद्यालयों में पास्टर, अगुवे या प्रोफ़ेसर के रूप में अपनी नौकरी और प्रतिष्ठा खो देंगे, आज इस प्रश्न पर प्रमुख आवाज़ें हो सकते हैं?

छठा: बाइबल की व्याख्या के लिए पूरी कलीसिया की आवश्यकता है। कलीसिया के उन भागों को अनदेखा करना या नीचा दिखाना कभी बुद्धिमानी नहीं है जो बातों को हमसे भिन्न देखते हैं। जो लोग पवित्र शास्त्र से सच्चे मन से

प्रेम करते हैं, उन्हें “संस्कृति के अनुसार ढले हुए” या “उदारवादी” कहना परमेश्वर की आवाज़ के प्रति बहरा बन जाने का एक रूप हो सकता है। जिन लोगों पर हम पवित्र शास्त्र के प्रति “निम्न दृष्टिकोण” रखने का आरोप लगाते हैं, उनके पास संभवतः उसके कुछ भागों की हमसे कहीं बेहतर समझ है।

अंततः, समाज में कलीसिया की विश्वसनीयता के लिए यह विशेष रूप से हानिकारक है कि वह उन गलत सामाजिक प्रथाओं को थामे रहे जिन्हें शेष समाज छोड़ चुका है। मेरे विचार में कलीसिया के लिए पितृसत्ता का गढ़ बने रहना उतना ही आत्मघाती है जितना दासता को उचित ठहराने के लिए बाइबल का उपयोग करते रहना। उन शताब्दियों में, जब संस्कृति और कलीसिया कमोबेश इस बात पर सहमत थीं कि दासता स्वीकार्य है, और कलीसिया उसके सबसे नरम रूप की प्रशंसा तक करती थी, तब उसका साथ देने से कलीसिया की प्रतिष्ठा को बहुत अधिक हानि नहीं हुई। परन्तु कल्पना कीजिए कि यदि पश्चिम का कोई आधुनिक मसीही परिवार दो ऐसे दास रखकर “परमेश्वर की आज्ञा मानने” का निर्णय ले, जिन्होंने बाइबल-आधारित कारणों से इस प्रथा पर सहमति दी हो, तो इसे कैसे लिया जाएगा?

ऐसा ही तब भी था, जब तक कलीसिया ज़ॉ-जाक रूसो (Jean-Jacques Rousseau) द्वारा व्यक्त इस सांस्कृतिक धारणा से सहमत थी: “पुरुष को बलवान और सक्रिय होना चाहिए; स्त्री को दुर्बल और निष्क्रिय होना चाहिए; एक के पास शक्ति और इच्छा दोनों होनी चाहिए; दूसरी के लिए इतना पर्याप्त है कि वह थोड़ा ही प्रतिरोध करे”⁸⁴। उस समय पितृसत्ता का साथ देना कलीसिया की प्रतिष्ठा के लिए बहुत हानिकारक नहीं था। परन्तु अब, जब *The Handmaid’s Tale* जैसी पुरस्कार-विजेता टेलीविज़न श्रृंखला भी स्त्री की अधीनता के “आतंक” पर आधारित है, तो एक कलीसिया के रूप में हम दासों वाले उस काल्पनिक आधुनिक परिवार से बहुत दूर नहीं हैं, जब हम अपनी बेटियों को अपने पति के एकतरफ़ा अधिकार के अधीन होना सिखाते हैं और शिक्षा देने तथा अगुवाई करने के गुणों वाली स्त्रियों को शिक्षा देने और अगुवाई करने से मना करते हैं।⁸⁵

यदि हम मसीही लोग स्त्रियों की समानता को घर के दायरे से आगे बढ़ाकर कलीसिया और समाज तक ले जाएँ, तो हम न केवल अपने विवाहों को अधिक सामंजस्यपूर्ण बनाएँगे, बल्कि अपनी संस्कृति में अपने सुसमाचार की विश्वसनीयता को भी दृढ़ करेंगे। हमारे साथी नागरिक जो भूल चुके हैं – परन्तु जिसकी हम उन्हें याद दिला सकते हैं – वह यह है कि हमारी संस्कृति में स्त्री की वर्तमान प्रतिष्ठा-वृद्धि ऐतिहासिक रूप से हमारे अपने, गरिमा प्रदान करने वाले सुसमाचार के धीरे-धीरे काम करने वाले प्रभाव में और परमेश्वर के प्रेमपूर्ण तथा न्यायी चरित्र की पहचान में जड़ पकड़े हुए है। आखिरकार परमेश्वर लंबे समय से कोई पूरकतावादी प्रतिबंध नहीं जानता और उसने स्त्रियों को सामर्थ्य दी है कि वे अपने वरदानों को पूरी तरह विकसित करें – जिसमें पुरुषों की सामर्थ्य के साथ अगुवाई करने और उन्हें शिक्षा देने की संभावना भी शामिल है।

टिप्पणियाँ

1. Richard Hays, *First Corinthians*, पृ. 116
2. यदि किसी विवाह में अधिकार और अधीनता लागू हो, तब भी इसका यह अर्थ नहीं कि किसी अन्य क्षेत्र में पत्नी का अपने पति पर अधिकार नहीं हो सकता। उदाहरण के लिए दबोरा (Deborah), लप्पीदोत की पत्नी, जिस पितृसत्तात्मक संस्कृति में रहती थी उसमें घर पर अपने पति से आदेश ले सकती थी, फिर भी वह अपने देश में एक सफल अगुवा थी। वहाँ तो उसके पति को भी उससे आदेश लेने पड़ते थे। यह जटिल लग सकता है, परन्तु विरोधाभासी नहीं है, क्योंकि बाइबल में ऐसा कोई स्थान नहीं है जहाँ विवाह में स्त्री की अधीनता को इस बात का कारण बताया गया हो कि वह कलीसिया और समाज में अगुवाई की भूमिका नहीं ले सकती।
3. एक छोटे उदाहरण के रूप में मैंने एक-बिंदु पूरकतावाद के अर्थ में विचार पश्चिमी यूरोप से एन. टी. राइट (N. T. Wright), पूर्वी यूरोप से हायक होव्हान्निस्यान (Hayk Hovhannisyan) और कभी ऑस्ट्रेलिया से माइकल बर्ड (Michael Bird) में भी पाए हैं। जो लोग अमेरिका में समानतावाद और पूरकतावाद के बीच के “युद्धों” में गहराई से उलझे हुए हैं, उनके लिए यह संभावना शायद सुलभ नहीं है। एन. टी. राइट समझाते हैं: “समस्या का एक भाग, विशेष रूप से संयुक्त राज्य अमेरिका में, यह है कि संस्कृतियाँ इतनी ध्रुवीकृत हो

जाती हैं कि बहुत से लोग, जब एक खाने पर निशान लगाते हैं, तो मान लेते हैं कि उन्हें उसी पक्ष के दर्जन भर अन्य खानों पर भी निशान लगाना होगा – यह पहचाने बिना कि वह पक्ष स्वयं अत्यंत मनमाना और संस्कृति से बँधा हुआ है।” जब कोई बात हमें बार-बार बताई जाती है, तो हम उस पर विश्वास करने की ओर झुकते हैं। यदि मैं रात के आकाश में दो तारों को चिह्नित करूँ और कहूँ: “ये दोनों तारे एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। ये ‘संकेतक’ (Die Zeiger) नाम का एक तारामंडल बनाते हैं”, तो मेरा श्रोता एक अदृश्य डोरी की कल्पना करता है जो इन तारों को जोड़ती है। हर बार जब वह आकाश की ओर देखेगा, उसे उनका “एक साथ होना” दिखाई देगा। वास्तव में वे अलग-अलग तारे हैं, जो एक-दूसरे से लाखों प्रकाश-वर्ष दूर हैं। केवल हमारी आकाशगंगा के एक विशेष दृष्टिकोण से वे ऐसे दिखते हैं मानो वे पास-पास हों। पुरुष के सिर होने और प्राचीन के पद के साथ भी ऐसा ही है – वे अलग-अलग तारे हैं। परमेश्वर के अभिप्राय में वे आवश्यक रूप से एक-दूसरे से जुड़े नहीं हैं, और पवित्र शास्त्र में तो निश्चय ही नहीं।

4. Beth Allison Barr *The Making of Biblical Womanhood* (अध्याय 6) में *Happily Ever After* को उद्धृत करती हैं।
5. फिर भी प्रसिद्ध पूरकतावादी धर्मविज्ञानी गलत ढंग से ठीक यही दावा करते हैं! उदाहरण के लिए एंड्रियास कोस्टनबर्गर (Andreas Köstenberger) *God, Marriage, and Family* (पृ. 250) में लिखते हैं: “यीशु ने उत्पत्ति 1:27 और 2:24 दोनों को उद्धृत करके (मत्ती 19:4-6 और समानांतर स्थल) विवाह के लिए सृष्टिकर्ता परमेश्वर की मूल योजना की पुष्टि की। इस प्रकार हमारे प्रभु ने विवाह के लिए परमेश्वर की मूल रूपरेखा की – जिसमें पुरुष सिर है और स्त्री अधीन रहने वाली, सहायता करने वाली साथी है – दृढ़ता और ज़ोर के साथ पुष्टि की।”
6. Wayne Grudem, *Evangelical Feminism*, अध्याय 1
7. John Piper, *Recovering Biblical Manhood and Womanhood*, अध्याय 1
8. Ed और Gaye Wheat, *Intended for Pleasure*, चौथा संस्करण, पृ. 30–31
9. Kevin Leman, *Sheet Music*, पृ. 54।
10. Tim और Kathy Keller, *The Meaning of Marriage*, अध्याय 2
11. Tim और Kathy Keller, *The Meaning of Marriage*, अध्याय 6
12. Tim और Kathy Keller, *The Meaning of Marriage*, परिशिष्ट
13. Timothy Keller, *The Timothy Keller Sermon Archive*, 2012–2013
14. सुनने के लिए: www.bit.ly/2ZPRZGH
15. जॉन पाइपर (John Piper) यह तर्क इस प्रकार रखते हैं: “कलीसिया में पुरुषों और स्त्रियों के संबंध में पुरुषों को अगुवाई करनी है, उसी के अनुरूप जैसे पति घर पर अगुवाई करता है (इफिसियों 5:22-33)।” दिलचस्प बात यह है कि मेरे महाद्वीप की सबसे बड़ी कलीसियाओं में से एक स्त्रियों को प्रचार करने और कलीसिया की अगुवाई करने की अनुमति देती है। फिर भी पत्नी की अधीनता पर ज़ोर देने के कारण वहाँ एक विचित्र संस्कृति विकसित हो गई है: ये प्रचारिकाएँ और महिला पास्टर विवाह करने से इनकार करती हैं, क्योंकि जिस क्षण वे विवाह करती हैं, कलीसिया के सदस्य उनकी अगुवाई की भूमिका को कम गंभीरता से लेने लगते हैं।
16. सुनने के लिए: www.bit.ly/2ZPRZGH
17. उत्पत्ति 3:16
18. Elaine Storkey, *Scars across humanity: Understanding and Overcoming Violence Against Women*, पृ. 210
19. विचार कलीसियाओं की सीमाओं से परे फैलते हैं। इसलिए हमें स्वयं से यह प्रश्न भी पूछना होगा कि मसीही धारणाओं का सामान्य संस्कृति पर क्या प्रभाव पड़ता है। यदि कोई कलीसिया यह सिखाती है कि पुरुष के प्रति स्त्री की अधीनता परमेश्वर का आदर्श है, तो इससे लिंग-आधारित हिंसा को रोकने में सहायता नहीं मिलती। इसके विपरीत यदि कलीसिया इस बात पर ज़ोर देती है कि विवाह के लिए परमेश्वर का आदर्श पारस्परिकता पर आधारित है, तो इससे घरेलू हिंसा को कम करने में निश्चय ही सहायता मिलती है।
20. देखिए www.ab.co/3bHZF05 और www.bit.ly/3GNbrVt
21. www.bit.ly/3nVy1CK
22. Eggerichs, *Love & Respect*, पृ. 221। उन्होंने यह दावा किसी अध्ययन या अन्य बाहरी प्रमाण का हवाला दिए बिना किया।
23. Sheila Gregoire, *The Great Sex Rescue*, अध्याय 2। गॉटमैन इंस्टीट्यूट का एक अध्ययन भी इसी परिणाम पर पहुँचता है। जॉन गॉटमैन (John Gottman) अपनी पुस्तक “Die sieben Prinzipien für eine glückliche Ehe” (एक सुखी विवाह के सात सिद्धांत) में लिखते हैं कि “सांख्यिकीय रूप से, यदि कोई पुरुष अपनी साथी के साथ सत्ता बाँटने के लिए तैयार नहीं है, तो विवाह के असफल होने की संभावना 81 % है”।
24. Sheila Gregoire, *The Great Sex Rescue*, अध्याय 2।
25. Sheila Gregoire, *The Great Sex Rescue*, अध्याय 2।
26. एक पॉडकास्ट-साक्षात्कार में एलन फ्रो (Alan Frow) “निर्णायक-मत” मॉडल [tiebreaking] का बचाव इस आधार पर करते हैं कि एक पास्टर के रूप में समानतावादी विवाहों को परामर्श देते समय वे पाते हैं कि “बहुत तनाव होता है, क्योंकि उन्हें पता नहीं होता कि निर्णय कौन लेगा”। यहाँ सुनें: www.bit.ly/2ZPRZGH। परन्तु क्या यह सचमुच सामान्य रूप से सही है? यदि मैं विवाह के अपने अनुभव और उन दंपतियों से आरंभ करूँ जिन्हें मैंने परामर्श दिया है, तो पत्नी की यह धारणा कि असहमति होने पर उसके पति का अधिकार लागू हो जाता है, वास्तव में विवाह में भारी तनाव उत्पन्न करती है। बहुत से मसीही परामर्शदाता इस बात पर ज़ोर देते हैं कि संघर्षों से भरे मसीही विवाहों में तनावों से निपटने में सबसे अधिक सहायता पति के रूप में किसी निर्णय-प्राधिकारी को स्थापित करने से नहीं, बल्कि उसे छोड़ देने से मिलती है। बल्कि दंपति को एक-दूसरे की बात सचमुच सुनना, एक-दूसरे से प्रेम करना और दूसरे के

हित में अपनी योजनाओं को पीछे रखना सीखना होगा। मैंने ऐसी स्त्रियों की पर्याप्त कहानियाँ सुनी हैं जो अपने पति के निर्णायक निर्णय-अधिकार के अधीन रहने का निराशा भरा प्रयास करती हैं, फिर भी उसके कारण दुख उठाती हैं। जब मैं भूमिकाओं को उलटा करके सोचता हूँ और स्वयं को एक ऐसी पत्नी की स्थिति में रखता हूँ जो किसी विषय पर उत्कट राय रखती है, जबकि उसका पति उतनी ही उत्कटता से दूसरी राय रखता है और अंततः निर्णय वही लेता है, तो मुझे स्पष्ट होता है कि निर्णायक निर्णय-अधिकार की अवधारणा पुरुष को यीशु के शब्दों की अवहेलना करने के लिए विवश कर सकती है: “इसलिए जो कुछ तुम चाहते हो कि लोग तुम्हारे साथ [न] करें, तुम भी उनके साथ वैसा ही [न] करो।”

27. मत्ती 24:10; लूका 12:1; 1 कुरिन्थियों 7:5; 11:33

28. पूरकतावादियों का एक और तर्क यह है: यदि परस्पर अधीनता (इफिसियों 5:21 में) संबंधों के तीनों जोड़ों (पति-पत्नी, माता-पिता-बच्चे, स्वामी-दास) पर लागू होनी है, तो पौलुस विवाह में अगुवाई और अधीनता की अवधारणा को संभवतः कमज़ोर नहीं कर सकता, क्योंकि दूसरा और तीसरा जोड़ा स्वभाव से पदानुक्रमिक हैं। परन्तु मैं इफिसियों 5:21 को अलग ढंग से समझता हूँ: यह तीनों जोड़ों के लिए कोई ढाँचा-पद नहीं, बल्कि केवल पौलुस की पत्नी के नए खंड में प्रवेश का एक संक्रमण-पद है, जिसे वह विशेष रूप से वैवाहिक संबंधों पर लागू करता है। यह श्राइनर और नाइट जैसे पूरकतावादियों के दृष्टिकोण से कहीं बेहतर है, जो परस्पर अधीनता के विचार को पतियों और पत्नियों दोनों के लिए स्वीकार तो करते हैं, परन्तु उसे विचित्र ढंग से इस प्रकार बदल देते हैं: “पत्नी एक आज्ञाकारी पत्नी के रूप में अपनी भूमिका के अधीन होती है, जबकि पति एक आत्म-बलिदानी अगुवे के रूप में अपनी भूमिका के अधीन होता है”। परन्तु पौलुस स्पष्ट रूप से उनसे अपनी भूमिकाओं के अधीन रहने को नहीं, बल्कि एक दूसरे के अधीन रहने को कहता है।

29. रोमियों 13:1

30. “क्योंकि *hypotassō* में किसी दूसरे से निचला स्थान रखने का विचार निहित है, इसलिए यह शब्द अधिकारियों के अधीन रहने और बराबर लोगों के बीच व्यक्तिगत संबंधों में अधीन रहने, दोनों के लिए उपयुक्त है। पहली स्थिति में एक पदानुक्रम में एक वस्तुनिष्ठ श्रेणी-क्रम होता है: उदाहरण के लिए मसीही नागरिक सरकार के अधिकार के अधीन हैं और इसलिए उन्हें इस अधिकार के अधीन रहना है। दूसरी स्थिति में श्रेणी-क्रम व्यक्तिनिष्ठ होता है: विश्वासियों को स्वयं को दूसरों के नीचे रखना है, मानो वे किसी पदानुक्रम में हों; अर्थात् उन्हें दूसरों के साथ ऐसा व्यवहार करना है मानो वे उनसे अधिक महत्वपूर्ण हों; यही मसीही नम्रता का सार है (रोमियों 12:10; फिलिप्पियों 2:3)।” (Andrew Bartlett, *Men and Women in Christ*, पृ. 36)

31. सिंथिया वेस्टफॉल (Cynthia Westfall) *Paul and Gender* (अध्याय 1) में लिखती हैं: “यूनानी में इफिसियों 5:18-23 एक ही वाक्य है, और पद 22 में पत्नियों को दिए गए निर्देश – पद 22 में ‘अधीन रहना’ क्रिया के लोप के द्वारा – व्याकरणिक रूप से पद 21 की परस्पर अधीनता पर निर्भर हैं।”

32. ऐसा लगता है कि पौलुस अपनी पत्नी में “अधीन रहना” के इस अर्थ की रक्षा इस प्रकार करता है कि अगले पदों में माता-पिता-बच्चे और स्वामी-दास के संबंध के लिए वह एक दूसरा शब्द – “आज्ञा मानना” – चुनता है।

33. तीतुस 2:4

34. इस बात का एक तंत्रिका-वैज्ञानिक स्पष्टीकरण भी है कि पति पत्नियों की अपेक्षा अधिक स्वार्थी होने की प्रवृत्ति क्यों रखते हैं – देखिए www.on.today.com/3CKRIsD

35. *Men and Women in Christ*, पृ. 64

36. Duvall और Hays, *Grasping God's Word*, अध्याय 13।

37. अरस्तू (Aristoteles), *Politik* (राजनीति), 1255b।

38. मैं यह भी मानकर चलता हूँ कि “यूनानी और रोमी दोनों परिवेशों में दासों को कानूनी रूप से विवाह करने की अनुमति नहीं थी। इसलिए इफिसियों 5 में पत्नियों और पतियों के व्यवहार के विषय में पौलुस की टिप्पणियाँ मुख्य रूप से स्वतंत्र लोगों को संबोधित हैं, विशेष रूप से उस सामाजिक वर्ग को जो दासों वाले घराने चलाता था।” (Andrew Bartlett, *Men and Women in Christ*, पृ. 66)

39. David Scholer, *Journal of the Evangelical Theological Society* खंड 30, दिसंबर 1987, पृ. 416। www.bit.ly/3bDKp19

40. अरस्तू (Aristoteles), *Politik* (राजनीति), 1259a।

41. सेल्सस (Celsus) एक मूर्तिपूजक आलोचक था, जो दूसरी शताब्दी में रहता था। यह उद्धरण Ross Shepherd Kraemer की *Her Share of the Blessings* (पृ. 128) से लिया गया है।

42. देखिए John Piper, *This Momentary Marriage*, अध्याय 6–8

43. ग्रीक “*paterfamilias*” शब्द का प्रयोग केवल एक बार करते हैं, अर्थात् अध्याय 7 की फुटनोट 102 में। वहाँ एक अन्य लेखक घराने के सबसे बड़े सदस्य के महत्व पर जोर देता है।

44. Johannes Paul II. (जॉन पॉल द्वितीय), *Mulieris Dignitatem*, पृ. 88।

45. उत्पत्ति 21:12

46. न्यायियों 13:10-11

47. लूका 1:26-38

48. मत्ती 1:18-21

49. 2 राजाओं 4:8-10

50. 1 शमूएल 25:3

51. 1 शमूएल 25:25

52. मूल उद्धरण NRSV [New Revised Standard Version] से

53. Richard Hays, *First Corinthians*, पृ. 116।

54. उदाहरण के लिए गूडम की मानक कृति *Evangelical Feminism and Biblical Truth* [सुसमाचारवादी नारीवाद और बाइबलीय सत्य] समानतावादी तर्कों का खंडन करने के लिए लिखी गई थी, जिनमें यह तर्क भी शामिल है कि 1 कुरिन्थियों 7 बराबरी के विवाह की शिक्षा देता है। परन्तु एक बहुत छोटे खंड (6.7) में, जो इस कृति के 800 पृष्ठों में से केवल एक पृष्ठ लेता है, गूडम केवल यह दावा करते हैं कि 1 कुरिन्थियों 7 पति की अधिकारपूर्ण अगुवाई को केवल नियंत्रित करता है। परन्तु वे इस धारणा के विरुद्ध कोई तर्क नहीं देते कि यह खंड न केवल इफिसियों 5 की पदानुक्रमिक व्याख्या के अनुप्रयोग को नियंत्रित करे, बल्कि इफिसियों 5 की व्याख्या को भी निर्धारित करे। 1 कुरिन्थियों 7 जैसा पाठ, जो स्पष्ट रूप से स्थापित करता है कि पति और पत्नी दोनों का एक-दूसरे पर बराबर अधिकार है – एक ऐसा तथ्य जिस पर सब व्याख्याता सहमत हैं –, उस पाठ (इफिसियों 5) की व्याख्या में वज्रन रखना चाहिए, जिसके विषय में केवल कुछ व्याख्याता यह दावा करते हैं कि वह पति को एकतरफ़ा अधिकार देता है।

55. उदाहरण के लिए टॉम श्राइनर (Tom Schreiner) – जैसा कि Andrew Bartlett *Men and Women in Christ* (पृ. 18–19) में बताते हैं – फ़िलिप पेन (Philip Payne) की 2009 की पुस्तक *Man and Woman: One in Christ* के उत्तर में एक विस्तृत सारांश लिखते हैं और उसके खंडन का प्रयास करते हैं। यद्यपि पेन 1 कुरिन्थियों 7 को एक पूरा अध्याय समर्पित करते हैं, फिर भी विचित्र रूप से श्राइनर इस अध्याय का बिल्कुल भी उल्लेख नहीं करते। ऐसा ही क्लेयर स्मिथ (Claire Smith) के साथ है, जिन्होंने 2012 में *God's Good Design: What the Bible Really Says about Men and Women* [परमेश्वर की अच्छी योजना: बाइबल वास्तव में पुरुषों और स्त्रियों के बारे में क्या कहती है] पुस्तक प्रकाशित की। उनका घोषित उद्देश्य उन “सबसे महत्वपूर्ण बाइबल-पाठों” पर विचार करना है जिन्हें विवाह के सर्वोत्तम मॉडल को “निर्धारित करना चाहिए”। डॉन कार्सन (Don Carson) और अन्य लोग इस पुस्तक की उत्साह से सिफ़ारिश करते हैं, बहुत से लोग इसकी पूर्णता की प्रशंसा करते हैं। फिर भी विचित्र रूप से विवाह पर उसके पाँच अध्यायों में से कोई भी 1 कुरिन्थियों 7 पर विचार नहीं करता। मैं इन लेखकों पर बेईमानी का आरोप नहीं लगाता, बल्कि केवल एक बड़े अंधे बिंदु के होने और “पुष्टि-पूर्वाग्रह” के लक्षणों का, जिसमें लोग अनजाने में बाइबल का उपयोग इसलिए नहीं करते कि किसी विषय पर वह जो कुछ कहती है वह सब जानें, बल्कि केवल अपनी पहले से बनी राय को पुष्टि करने के लिए करते हैं।

56. *Discovering Biblical Equality* से उद्धरण, पृ. 238

57. स्रोत: www.gates.ly/3bMqqQZ

58. स्रोत: Sandra Joshel और Sheila Murnaghan, *Women and Slaves in Greco-Roman Culture*, पृ. 217–20। Barr, *The Making of Biblical Womanhood* (पृ. 226) में उद्धृत

59. देखिए Susan Hylen, *Women in the World of the New Testament*

60. यह बेहतर समझने के लिए कि सामाजिक परिस्थितियाँ उन लोगों के चयन को कैसे सीमित करती हैं जो अगुवाई की भूमिका ले सकते हैं, एक ऐसी आधुनिक कलीसिया के बारे में सोचिए जो मुख्य रूप से एक संपन्न इलाके के उच्च-शिक्षित लोगों से बनी हो। अब विचार कीजिए कि इस कलीसिया में किसी अनपढ़ मज़दूर का अगुवाई की भूमिका ले पाना कितना असंभव होगा, इस सीधे-से कारण से कि यह संदिग्ध होगा कि ये लोग उसके पीछे चलेंगे या नहीं (और इसलिए वह उनकी अगुवाई कर भी पाएगा या नहीं)। इसी कारण बाइबल में हमें ऐसे उदाहरण भी नहीं मिलते कि दास प्राचीन रहे हों।

61. John Stackhouse, *Finally Feminist*, पृ. 39

62. कुलुस्सियों 3:18

63. तीतुस 2:5

64. 1 पतरस 3:1

65. अपनी पुस्तक को बहुत लंबा न होने देने के लिए मैंने 1 पतरस 3:1-7 की पूरी व्याख्या न करने का निर्णय लिया है। फिर भी मैं एंड्रयू बार्टलेट (Andrew Bartlett) की पुस्तक *Men and Women in Christ* [मसीह में पुरुष और स्त्रियाँ] के अध्याय 6 की अनुशंसा करता हूँ। इस अध्याय का शीर्षक है “Submission and Honour: 1 Peter” (अधीनता और आदर: 1 पतरस)। मेरे विचार में बार्टलेट विश्वसनीय ढंग से दिखाते हैं कि पतरस मूल रूप से वही मार्ग अपनाता है जो पौलुस इफिसियों 5 में अपनाता है, ताकि परस्पर अधीनता की शिक्षा के द्वारा संस्कृति की पदानुक्रमिक व्यवस्था को भीतर से खोखला कर दे। पौलुस की तरह पतरस भी 3:1-6 में स्त्री की उस अधीन भूमिका को, जिसकी संस्कृति अपेक्षा करती थी, न तो उलटता है और न ही बिना शर्त उसका समर्थन करता है; बल्कि वह सुसमाचार से प्रेरित नए उद्देश्यों के साथ उसे संशोधित करता है: अविश्वासी पति के डर से नहीं, बल्कि परमेश्वर पर आशा रखकर और पति को मसीह के लिए जीतने के प्रयास में। और पौलुस की तरह पतरस मसीही पति की उस अधिकारपूर्ण भूमिका को, जिसकी संस्कृति अपेक्षा करती थी, न तो आदर्श ठहराता है और न ही उसकी निंदा करता है, बल्कि 3:7 में उसे तीन प्रकार से संशोधित करता है: 1) पतियों को अपनी पत्नियों के प्रति “उसी प्रकार” व्यवहार करना है (यही वह निर्णायक अभिव्यक्ति है जिसे बहुत से पूरकतावादी धर्मविज्ञानी अनदेखा करते प्रतीत होते हैं), जैसा पहले वर्णन किया गया था: विश्वासियों का अपने परमेश्वर और राजा के प्रति (2:13); दासों का अपने स्वामियों के प्रति (2:18-25); मसीह का अपने हत्यारों के प्रति (2:21); और पत्नियों का अपने पतियों के प्रति, जिसमें उत्पत्ति 18 में अब्राहम के प्रति सारा का व्यवहार भी शामिल है (3:1-6) – अर्थात् नम्र अधीनता में। 2) पतियों को अपनी पत्नियों के साथ इस प्रकार रहना है कि वे अपनी पत्नियों की कम शक्ति का ध्यान रखें। 3) पतियों को अपनी पत्नियों का आदर करना है, जो (यूनानी-रोमी संस्कृति के विपरीत) किसी अधीन स्थिति में नहीं हैं, क्योंकि वे उद्धार की बराबर की संगी वारिस हैं। यहाँ “आदर करना” वही शब्द है जिसका उपयोग पत्नी में पहले उस अधीनता का वर्णन करने के लिए हुआ था जो सब विश्वासियों को सम्राट के प्रति दिखानी है; 2:13 (“[अधिकारियों के] अधीन रहो”) और 2:17 (“राजा का आदर करो”) की तुलना कीजिए। दूसरे शब्दों में, ठीक-ठीक वही शब्द इस्तेमाल किए बिना, पतरस पतियों से कहता है कि उन्हें भी अपनी पत्नियों के प्रति अधीनता (नम्र, आदरपूर्ण सेवा के अर्थ में) दिखानी है। इस प्रकार समझने पर ऐसा लगता है कि पतरस, इफिसियों 5 में पौलुस की तरह, विवाह में अधीनता के अर्थ को किसी

दूसरे के अधिकार के प्रति केवल आज्ञाकारिता से हटाकर नम्र सेवा और सद्भावना के प्रति प्रतिबद्धता की ओर संशोधित करता है। अधिकार के प्रति आज्ञाकारिता केवल एक ही दिशा में बह सकती है; परन्तु जैसा इफिसियों 5 और 1 पतरस 3 में दिखाया गया है, मसीही विवाहों को, चाहे वे किसी भी सामाजिक ढाँचे में हों, ऐसी नम्र सेवा की गवाही देनी है जो दोनों दिशाओं में बहती है। इसके अतिरिक्त ध्यान दीजिए कि पतरस पत्नी की अधीनता का कारण यह नहीं बताता कि परमेश्वर की योजना के अनुसार पति का अपनी पत्नी पर एकतरफ़ा अधिकार है। यदि पतरस ऐसा मानता, तो इसका उल्लेख करने के लिए यह एकदम सही संदर्भ होता। परन्तु वह ऐसा नहीं करता, और वास्तव में पूरी बाइबल में कहीं भी ऐसा स्थान नहीं है जहाँ पतियों को अपनी पत्नियों पर एकतरफ़ा अधिकार चलाने का निर्देश दिया गया हो।

66. उत्पत्ति 16:9

67. प्रसंगवश: जैसे उस समय अरस्तू की गृह-व्यवस्था और राजतंत्रीय शासन-प्रणाली थी, वैसे ही आज लोकतंत्र शायद वह सबसे अच्छी शासन-प्रणाली है जिसे समाज ने अब तक खोजा है।

68. 1 पतरस 2:15

69. 1 पतरस 3:1-2

70. तीतुस 2:5

71. तीतुस 2:10

72. 1 तीमुथियुस 6:1

73. 1 तीमुथियुस 5:7,14

74. स्रोत: www.bit.ly/3EL7OgM

75. इस खंड के लिए [What the Bible Actually Teaches on Women](#) के अध्याय 8 में Kevin Giles को धन्यवाद।

76. उत्पत्ति 9:20-27

77. लैव्यव्यवस्था 25:39-41; 25:44-46

78. इस खंड के लिए [What the Bible Actually Teaches on Women](#) के अध्याय 8 में Kevin Giles को धन्यवाद।

79. पोप जॉन पॉल द्वितीय (Johannes Paul II.), *Mulieris Dignitatem*, पृ. 24। Barr, पृ. 110 में उद्धृत।

80. स्रोत: www.bit.ly/2ZXK1LY

81. “बच्चों और माता-पिता का संबंध महत्वपूर्ण बातों में हमारी आज की संस्कृति से भिन्न था। आधुनिक संसार में यह मान लिया जाता है कि बच्चे वयस्क होने के बाद किसी समय अपने माता-पिता से स्वतंत्र हो जाते हैं और फिर उनके अधिकार के अधीन नहीं रहते। प्राचीन संसार में ऐसा नहीं था; वहाँ वयस्क बच्चों से यह अपेक्षा की जाती थी कि वे वयस्क होने के बाद भी लंबे समय तक अपने माता-पिता के अधिकार के अधीन रहें।” (Howard Marshall, *Discovering Biblical Equality*, पृ. 188।)

82. जेन हुकर (Jane Hooker) एक और तर्क प्रस्तुत करती हैं, जिसे मैं स्टॉर्म्स की सूची में जोड़ूँगा: “दासता की बाइबल वाली प्रथा और दासता की हाल की अमेरिकी प्रथा के बीच महत्वपूर्ण अंतर हैं।” (स्रोत: www.bit.ly/3GNFnk9)। ऐसा लगता है कि इससे वे यह कहना चाहती हैं कि पिछली शताब्दियों में दासता को समाप्त करने का सामाजिक आंदोलन समझ में आता है, परन्तु पहली शताब्दी में दासता उतनी बुरी नहीं थी। परन्तु पहली शताब्दी में भी दासों के साथ क्रूर व्यवहार किया जाता था। इसके अतिरिक्त वे मूल बात से चूक जाती हैं: दोनों ही मामलों में दासता का अर्थ था आर्थिक उद्देश्यों के लिए किसी मनुष्य को अपनी संपत्ति बनाना। दासता के उन्मूलन में बात केवल दासों के साथ बुरे व्यवहार की नहीं थी, बल्कि उसके नरम रूपों की भी थी।

83. Cain Felder (सं.), *Stony the Road we Trod*, पृ. 226। Barr, अध्याय 6 द्वारा उद्धृत।

84. Jean-Jacques Rousseau, *Emil oder Über die Erziehung* (1762)। Barr, अध्याय 6 में उद्धृत

85. John Stackhouse *Finally Feminist* (पृ. 56) में इसे और तीखे ढंग से कहते हैं: “जब समाज पितृसत्तात्मक था, जैसा नए नियम के संदर्भ में था और जैसा हमारे समय के आधुनिक समाज को छोड़कर संसार में हर जगह रहा है, तब कलीसिया ने उसके अनुसार ढलकर ठोकर के कारणों से बचाव किया। परन्तु अब, जब आधुनिक समाज कम से कम आधिकारिक रूप से समानतावादी है, तो ठोकर का कारण यह है कि कलीसिया समाज के साथ नहीं चलती और इस अभूतपूर्व स्वतंत्रता पर आनंदित नहीं होती कि स्त्रियों और पुरुषों को मनमानी लिंग-सीमाओं के बिना उनके वरदानों और उनकी बुलाहट के अनुसार सेवा करने दिया जाए। यह ठोकर दूसरों में सुसमाचार-प्रचार में भी बाधा डालती है और उन लोगों के ... जुड़ाव और विकास में भी, जो पहले ही मन फिरा चुके हैं। ... इस समाज में कलीसियाओं द्वारा पितृसत्ता को जारी रखना [बहुतों] के लिए एक धार्मिक बाधा है।”